पहली फसल–तैयारी लिबास
(पार्चाबाफ़ी व पार्चादोज़ी मअ् क़ालीनबाफ़ी व दरीबाफ़ी)
1: पार्चाबाफ़ी
क: पेषा औंटाई और धुनाई।

ओंटाई/ओटाई (हासिल क्रिया) **देखें** ओंटना।

ओटना/ओंटना (क्रिया) कपास के रेषों से बीज जुदा करना। कपास से रूई इलाहिदा करना। इस अ़मल को मुख्तलिफ़ मुक़ामी इस्तिलाह में निछोडना, बिहना, बोढ़ना, निकाना और निक्कीउब (निकियाब) करना कहते हैं।

ऐंठनी (स्त्री) देखें धुनकी।

बाज (स्त्री) लतककरा। **देखें** धुनकी।

बाड़ी (स्त्री) देखें बन।

बन (पु0) बाड़ी, कपास के पौधों का खेत, सरदरख्ती।

बिंगा (स्त्री) कच्ची यानी बगैर धुनकी हुई रूई।

बिनौला (पु0) कपास का बीज।

बिहना (क्रिया) कपास का बिनौला (बीज) निकालने वाला कारीगर मज़दूर। **देखें** ओंटना।

बिराईती (स्त्री) एक क़िस्म के बडे रेषों की उमदा कपास जो ढाका (बंगाल) में काष्त की जाती है।

बिनौला (पु0) रूई का बीज।

बेलन (पु0) देखें चर्खी।

भूती (स्त्री) लम्बे रेषे की उमदा कपास जो मष्रिकी बंगाल में पैदा होती है।

भोगा (पु0) सीराँग। चटाकांग मष्रिक़ी बंगाल की एक अदना क़िस्म की कपास जिससे मोटी क़िस्म का सूत तैयार किया जाता है।

भोगला (पु0) कपास का बड़ी क़िस्म का ढोडा।

पिची रूई (स्त्री) देखें रूइड़।

परा/परे (पु0) तुस, बिनौले। (कपास का बीज) के ऊपर लगे हुए रूई के रेषे। जो आमतौर से जमा का सीगा यानी परे बोला जाता है।

परोथी (स्त्री) एक क़िस्म की आसामी रूई जिसका तार मोटा होता है लेकिन पाँच बरस तक नई रूई के मानिन्द इस्तेमाल में आती है।

परहा (पु0) पैनी, ताल, ताला। **देखें** धुनकी।

पिंजारा (पु0) देखें धुनिया।

पिन्ना/पिन्नी (पु0) कमठा, फट्का। **देखें** धुनकी।

पूँगा (पु0) पौनी, चोंगी। **देखें** चर्खी।

पूनी (स्त्री) पूंगा, चोंगी। **देखें** चर्खी।

कहावत दिन को ऊनी–ऊनी, रात को चर्खा पूनी।

पहेल (पु0) गाले यानी घुनी हुई रूई का दबकर पिच्ची हुआ वा परत। **प्रयोग** ज़ख्म पर बाँधने के लिए रूई का पहेल बहुत काम आता है। **बनाना** धुनी हुई रूई को फैलाकर और दबाकर हम–सतह और पिच्ची बनाना।

पहेलकारी (पु0) पहेल बनाने का काम। **देखें** पहेल।

पैकार (पु0) खेतों से कपास चुनवाने वाला आजिर।

पैना (पु0) खपटा धुनने का साँटा या छड़ जिससे वह रुई के गुच्छे खोल़ता, गाले को फैलाता और हमवार करता है।

पौंजाई (स्त्री) देखें पौंजना और पीन्ना।

पौंजना (क्रिया) रूई धुनकना, रूई का गाला बनाना यानी रूई के रेषों को धुनकी के ज़रिये, खोलना, फैलाना। **प्रयोग** कयामत के दिन पहाड़ पिंजी हुई रूई के मानिन्द उड़ेंगे।

पीन्ना (**क्रिया**) तोमना, पहेल यानि पिच्ची रूई के रेषे चुटकी से खोलना ताकि धुनकी से उसका दोबारा गाला बनाया जा सके। पूरब में बाज़ मुक़ामात पर धुनकी से रूई धुनकने को पिन्ना और धुनकी को पीन्नी या पिन्नी कहते हैं।

पीनी (स्त्री) देखें परहा।

पीन्नी/पिन्नी देखें पिन्ना और धुनकी।

फटका (**पु0**) कम्ठा, पिन्ना, पिन्नी, **देखें** धुनकी।

फुटकी (**स्त्री**) रूई के रेषों की मडोड़ी जो धुनकने में साफ न हुई हो।

फोया (**पु0**) गाले का बहुत छोटा एक चुटकी के बराबर टुकड़ा। **प्रयोग** कान में दवा डालकर रूई का फोया रख देते हैं। **प्रयोग** षौकीन लोग कान में इत्र के फोये रखते हैं।

ताल (स्त्री) देखें परहा।

ताला (पु0) देखें परहा।

तुस (पु0) देखें परा।

तूम्ना (क्रिया) देखें पीन्ना।

झायीं (**स्त्री**) रूई के रेषों का गुबार जो गाला बनाते वक्त धुनकी की ज़र्ब से उड़कर फैलता और दूर–दूर गिरता है। **बैठना, लगना, पड़ना, आना** के साथ बोला जाता है। **करना** रूई के रेषों को धुनकी की ज़र्ब से उड़ाकर फैलाना।

चर्ख़ी/ओटनी (**स्त्री**) रूई ओटने यानी कपास का बीज इलाहिदा करने का एक क़िस्म का चर्ख़ा।

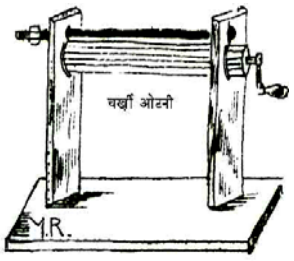

जिसमें दो उफ़की बाहम वस्ल चोबी बेलन या एक चोबी बेलन और एक आहनी सलाख़ होती है जिनके दरमियान से कपास को गुजारा जाता है। इस अमल से बिनौला रूई से जुदा हो जाता है। चर्ख़ी को हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ़ मुक़ामात पर मुख्तलिफ नामों यानी पूँगा, पूनी और चोंगी वगैरा से मौसूम करते हैं।

चौपतिया दिव्ली (स्त्री) देखें दिव्ली होना।

चौताली (**स्त्री**) निहायत साफ की हुई रूई। जिसका 3/4 हिस्सा बीज और सफाई में निकल गया हो।

चोंगी (स्त्री) देखें चर्ख़ी।

दिलमकाटी (स्त्री) कताई के लिए रूई के गाले को दबाकर पिचकाने और हमवार करने का चोबी तख्ता मअ् बेलन।

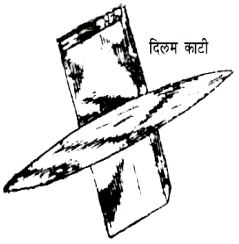

दोपतिया दीउली (स्त्री) देखें दीउली होना।

दीउली होना (**स्त्री**) कपास के ढोडे का तैयार होकर फटना या खिलना। आधा खिलने को दोपतिया दीउली और पूरा खिलने को चौपतिया दीउली होना कहते है।

धुनाई/धुनकाई (स्त्री) देखें धुन्ना। **प्रयोग** रूई का गाला बनाने की उजरत ।

धुन्ना/धुनकना (**क्रिया**) पीन्ना धुनकी की ताँत की फटकार से रूई के रेषों को खोलना या सुलझाना।

धुनकी (**स्त्री**) पीन्नी या पिन्नी कमठा, रूई धुनकने यानी उसके रेषे खोलने और सुलझाने का आलः जो देहली व नवाहे–देहली में धुनकी और अवध के बाज़ मुक़ामात पर पीन्नी या पिन्नी और कमठा कहलाता है। **ऐंठनी** धुनकी के पिछले

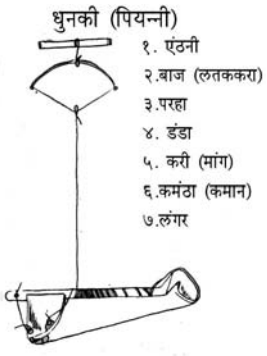

पंखेनुमा हिस्से को ढाँड के साथ खींचे रखने वाला रस्सी का बन्द जो लकड़ी के डंडे से लपेट देकर कस दिया जाता है। **बाज** (लतककरा) धुनकी की ताँत और उसके पिछले पंखेनुमा सिरे की नोक के दरमियान बतौर आड़ फंसा हुआ चमड़े का गत्ता जो ताँत का सिरे से अलाहिदा रखने के लिए लगाया जाता है। ताकि ताँत की झंकार में रूकावट न हो। **परहा** (ताल, ताला, पीन्नी) धुनकी का पिछला पंखेनुमा सिरा जो धुनकी की झोंक को साधता और उसकी हरकत को सही रखता है। **ढाँड** धुनकी के दोनों सिरों के दरमियान का हिस्सा जो गोल डंडे की शक्ल का होता है। **किरी** माँग, धुनकी का अगला आँकडेनुमा मुँह। **कमठा** (कमान) धुनकी लटकाने की कमान। बाज मुक़ामात पर छोटी धुनकी को कमठा कहते हैं। **लंगर** कमान और धुनकी के दरमियान बँधी हुई रस्सी। **लगाना** गाला बनाने को रूई की धुनकी से फटकारना।

धँगली (स्त्री) सूबा बंगाल के तरफ की एक खास क़िस्म की कमाननुमा धुनकी ।

धुनिया (पु0) धुनेरा, पिंजारा, नद्दाफ़। रूई का गाला बनाने वाला कारीगर।

धुनेरा (पु0) देखें धुनिया।

ढाँड (पु0) देखें धुनकी।

रफी (पु0) रूई के रेषों की बारीक छटन (छीज) जो धुनकने में रेषों से टूटकर निकल जाये।

रूइटर (पु0) नामा, गब्बा तोषक और रजाई वग़ैरा का पुराना पिच्ची हुआ वा पहिल।

रूई (स्त्री) बिनौला यानी बीज साफ की हुई कपास।

सीराँग (स्त्री) देखें भोगा।

कपास (स्त्री) ढोडे से निकाली हुई और बगैर बिनौला साफ की हुई रूई।

कच्ची रूई (स्त्री) बगैर धुनी रूई।

किरी (स्त्री) माँग। कपास के ढोडे या बिनौले के रूई में मिले हुए छोटे और बारीक रेज़े जो धुनकने में न निकले और गाले में नुक़्स पैदा करें। देखें धुनकी।

कड़हेरा (पु0) सरकंडे का चिल्मननुमा बना हुआ बिछावन जिस पर रूई डालकर धुनकी लगायी जाती है ताकि रूई की किरी इसकी दर्ज़ो में से नीचे झड़ती जाये।

कमंठा (पु0) देखें धुनकी।

खपटा (पु0) देखें पैना।

गाला (पु0) धुनकी हुई रूई। फूली और रेष खुली हुई रूई। **करना, बनाना** बाज़ मुक़ामात पर गाले को पोनी कहते हैं।

गूदड़ (पु0) (संस्कृत गूदर बमानी नरम गूदड़ी। पुराना इस्तेमाल षुदा गाला। उर्दू में गूदड़ का लफ़्ज़ सिर्फ फटे–पुराने कपड़ों के लिए मख़्सूस हो गया है।

घेंटी (स्त्री) कपास का ढोडा।

लतककरा (पु0) बाज। **देखें** बाज और धुनकी।

लंगर (पु0) देखें धुनकी।

लोढ़ना (क्रिया) बिछोड़ना, निक्कीउब या निक्याब। **देखें** ओटना।

माँग (स्त्री) किरी। **देखें** किरी और धुनकी।

मुठिया (स्त्री) मुचदच। धुंकी की मिज़राब। बेलननुमा चोबीदस्ता जिसके दोनों सिरे मख़रूती (गऊदुम) षक्ल के बने होते हैं।

मुठिया (मचवच)

मुचदच (स्त्री) देखें मुठिया।

नामा (पु0) (संस्कृत नमता बमानी पुरानी और पच्ची रूई) **देखें** रूइटर।

निछोड़ना (क्रिया) लोढ़ना, निक्की उब (निकियाब) **देखें** ओटना।

नद्दाफ (पु0) देखें धुनिया।

नर्मा (पु0) नरम और लम्बे रेषों की रूई जो इलाक़ा बंगाल में पैदा होती और अमेरिका की रूई से मिलती–जुलती है।

निकाना (क्रिया) निछोड़ना, लोढ़ना, निक्कीउब करना। **देखें** ओटना।

निक्कीउब करना/निकियाब (क्रिया) देखें ओटना।

(2) पेषा–ए–कताई सूत

अटेरन (स्त्री) दफ्ती। तागे की अट्टी (अंटी) बनाने की तख्ती में जड़ी हुई हस्बे ज़रूरत छोटी–बड़ी खूँटियाँ रोजमर्रा में कारीगर अंटी को भी अटेरन कह देते हैं। अटेरन की बनावट में चन्द खूटियाँ और एक चोबी तख्ती होती है। खूंटियों का कारीगरों की इस्तिलाह में पखरयाँ और उनकी बैठक यानी तख्ती को मंझा कहते हैं (लफ़्ज़ पाखे से पखरी जमअ़ पखरियाँ इस्मे–तसग़ीर बन गया है।

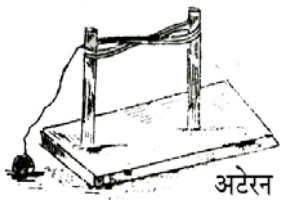
अटेरन

अटेरना (क्रिया) सूत की अंटी या लच्छा बनाना।

एकलड़ा तागा (पु0) इकहरे तार का बिना हुआ तागा। **देखें** लड़ और तागा।

अल्बेट (स्त्री) भाँज, मरोड़ी। **देखें** अल्बेटना।

अल्बेटना/अल्बेटदेना (क्रिया) उमेटना, भाँजना, बिलना, बल देना, सूत को पतला और मज़बूत करने के लिए मरोड़ी देना, बलना।

उलझाव/उलझावा (पु0) तागे के लच्छे की बेतरतीबी यानी उसके तारों के एक दूसरे का साथ गुथ जाने की हालत जिससे उनके खुलने में रूकावट पैदा हो।

उलझट्टी (स्त्री) इस्मे–तसग़ीर। बाज़ मुक़ाम पर गुलझट्टा और गुलझट्टी कहते हैं। **देखें** उलझाव।

उलझना/उलझाना (क्रिया) देखें उलझाना।

आँट (स्त्री) भाँज, पेंच, बल, मड़ोडी, गोची, ऐंठन। तागे के दो सिरों को आर्ज़ी तौर पर जोड़ने के लिए मड़ोरी या आधी गिरह लगाने को इस्तिलाह में आँत कहते हैं। **लगाना, देना, पड़ना** के साथ बोला जाता है।

अट्टी/अंटी (स्त्री) फेंटी। तागे की तरतीब के साथ लिपटी हुई लच्छी। **बनाना, करना** के साथ बोला जाता है।

उमेटना/उमेठना (क्रिया) अमेटना। **देखें** अल्बेटना।

ऐंठन (स्त्री) भाँज। तागा बलने की चर्खी। **देखें** भाँवर कली व आँट।

अवाल (स्त्री) जुतनी, जुंघनी, **देखें** मायीं।

बटाई (स्त्री) देखें बटना।

बटना (क्रिया) तागे की दो या दो से ज़्यादा लड़ों को मिलाकर बलना, अल्बेट देना।

बलाई (स्त्री) देखें बलना।

बलना (क्रिया) भाँजना। उमेठना। **देखें** अल्बेटना।

बेड़ी (स्त्री) देखें चर्ख़ा।

भाँज (स्त्री) मढोडी, गोची। **देखें** आँट। **लगाना, मारना** के साथ बोला जाता है।

भाँजना (क्रिया) देखें अल्बेटना।

भाँजवाँ तागा (पु0) देखें तागा।

भाँजी (पु0) सूत भाँजने यानी बटने वाला कारीगर।

भाँवरगली/भंवरकली (पु0) (बंगाली) (संस्कृत–भ्रमण बमानी, घूमना, चक्कर लगाना) सूत बटने का एक क़ाइम कीले पर घूमने वाला औज़ार।

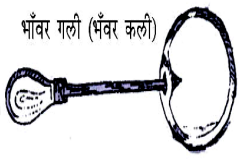

पाँबर/पाँम्बरी दोरंगा डोरा, गंगा जमुनी डोरा। सफेद और स्याह को मिलाकर बनाया हुआ डोरा।

परैंती/फरैंती (स्त्री) ताने के लिए आँटी या कुकड़ी से लच्छा बनाने की बेलननुमा चर्खी़। **देखें** तस्वीर। **किलाबा** बड़ी क़िस्म की परैंती जिस पर तैयार सूत या तागा लपेटा जाता है। इनके मजमूऐ को ढेकियाँ भी कहते हैं। **देखें** चित्र किलाबा। **सानिया** परैंती या किलाबे का अड्डा, जिसपर उसके सिरों को टिकाकर सूत खोला या लपेटा जाता है। यह एक तख्ते पर उमूदी और मुतवाजी जड़ी हुई लकडियाँ होती हैं। जो परैंती के अड्डे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है। यह इस्तिलाह अर्बी लफ्ज़ सा़नी से बनी हुई मालूम होती है। चूँकि पेषेवरों की जबान में इस लफ्ज़ का मफ़हूम एक ख़ास आलाकार के लिए मख़सूस होकर उर्दू का लफ्ज़ बन गया है। इसलिए उसकी इमला सीन से लिखी गयी है। **देखें** सानिया। **थूमिऐ** (जमअ) पूरब और बाज दूसरे मुक़ामात पर सानिऐ को धूमिऐ कहते हैं। जो फर्द–फर्द होते हैं। इसलिए ठाड़ी और बड़ी से बड़ी फ़रेनी दोनों में काम आते हैं। **देखें** तस्वीर पे0। **ढेकियाँ** किलाबा। सूत साफ और दुरुस्त करने का फरैतियों का बड़ा जोड़ा जिसपर सूत की अद्ला–बद्ली करके उसकी ख़राबी और नुक़्स को देखा जाता है। खपच्चियों के ढाँच या फकवाइयों को भी जिनपर ढेकी तैयार की जाती है, ढेकियाँ कहते हैं। **देखें** किलाबा। **ठाड़ी** बुर्जीनुमा शकल की चर्खी, जिसपर तैयार तागा लपेटा जाता है। चूँकि यह चर्खी अकेले काम में आती है इसलिए इसको कारीगरों की इस्तिलाह में थाड़ी बमानी अकेली कहते हैं। और बाज़ कारीगर खाली बोलते हैं। जो गालिबन ठाड़ी का बदला हुआ तलफ्फुज़ है या अकेले के मानों में कहा जाता है। ठाड़ी की गोल पखवाइयाँ चकवे या चकोतियाँ और उन पर ज़ड़ी हुई खपच्चियाँ या चोबी पट्टियाँ जिनसे थाड़ी की सतह तैयार होती है, परे कहलाते हैं। **देखें** तस्वीर।

पखरी/पखरियाँ (स्त्री) देखें अटेरन।

पिंदिया (स्त्री) देखें कुकड़ी (असल लफ्ज पिन्डी है। पूरब में गंवार पिंदिया बोलते हैं।

पखंड़ी (स्त्री) देखें चर्खा।

पोन सलाई (स्त्री) पोनी बनाने की तीली।

पोनी (स्त्री) तिक्वा, तिमागा। सूत कातने को गाले की बनाई हुई छोटी बत्ती जो बीच में से खाली और मोटान में यकसाँ रखने को तीली पर, जिसको पोन सलाई कहते हैं, बनाते हैं।

पेचक (स्त्री) फेंटी, तागे का गोला **बनाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** तस्वीर पे0।

फुटकी (स्त्री) देखें साँठ। **पड़ना**

फुटकीदार तागा (पु0) देखें तागा।

फिर्की/फिरई (स्त्री) देखें चकवा।

फिरई/फिरकी (स्त्री) देखें चकवा।

फूँसड़ा (पु0) तागे का बारीक और छोटा रेषा जो बल न आने की वजह से लड़ से बाहर निकला दिखाई दे। **प्रयोग** कचबिला तागा फूँसडेदार और कमजोर होता है।

फेंटी (स्त्री) देखें पेचक और अंटी।

तार (पु0) रूई, ऊन, रेषम या सन का लम्बा रेषा या रेषों की बली हुई लम्बी लड़।

तकला (पु0) देखें चर्ख़ा।

टिकवा (पु0) देखें पोनी।

तागा (पु0) सूत वगैरा की हस्बे जुरूरत कई लड़ों (तारों) को मिलाकर बटा हुआ डोरा जो तारों की तादाद के शुमार से एकतारा, दोतारा, तिहतारा या एकलड़ा, दोलड़ा, तेहलड़ा बगैरा तागे के नाम से मौसूम किया जाता है। गँवार धागा कहते हैं, कपड़ों की सिलाई का तागा ज़्यादा से ज़्यादा छः लड़ा होता है और बारीक तारों का तैयार किया जाता है। **भाँजवाँ तागा**

उमदा बटा हुआ तागा जिसका हर तार इलाहिदा/इलहिदा बट कर और फिर बाहम मिलाकर बटा गया हो या इकहरी लड़ को मामूल से ज्यादा बल बारीक और मज़बूत बनाया गया हो। **फुटकीदार तागा** वह तागा या सूत जो फुटकीदार गाले की वजह, जगह–जगह कचबला रहकर नाहम्वार और बोदा बन गया हो ऐसा तागा आमतौर से ख़राब रूई का होता है। **कचबला तागा** (कच्चा. बला हुआ) मामूल से कम या अधूरा बटा हुआ तागा।

थेबी/ थई (स्त्री) जुट्टी (पूरब)। सूत की थई या लच्छा। **देखें** तस्वीर पे0।

ठाड़ी (स्त्री) देखें परैती।

जुतनी (स्त्री) अवाल, जुंधनी। **देखें** मायीं।

जुट्टी (स्त्री) थेबी, सूत की थई यानी बेतरतीब लच्छा या लच्छी। **बनाना, करना** के साथ बोला जाता है।

जुंधनी (स्त्री) जुतनी और जुंधनी एक ही लफ्ज़ की दो आवाज़ हैं, जो लफ्ज़ मायीं के लिए मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर बोला जाता है। **देखें मायीं।**

चर्ख़ा (पु0) रूई का तार बनाने यानी सूत कातने की मामूली दस्तीकल। चर्ख़े के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के नाम हस्बे–जैल है जो तस्वीर में निषान देकर बतलाए गये हैं। **बेड़ी** तकले को अपनी जगह पर क़ायम रखने वाली तकले में पिरोई हुई चोबी पतली नली जिस की वजह तकला घूमते वक्त इधर–उधर नहीं हो सकता। **पंखड़ी** चर्ख़े के चाक का हर एक फर्रा जो पहिये के अर्रे के मानिन्द होता है। **तकला** चर्ख़े के हस्बे–जुरूरत लम्बा और पतला आहनी सुवा जिसकी गर्दिष पर रूई का तार बला जाता है। जिसको सूत कातना कहते हैं। **चकवा** (लफ्ज़ चाक का इस्मे–तस्गीर) चर्ख़े का पहिया जो माल के ज़रिये तकले को घुमाता है। इसको बाज़ मुक़ामात पर फिरई और फिर्की भी कहते हैं। **चिमरिख** (चिमरक, चिमड़ख) तकले के सिरे क़ायम करने को चर्ख़े की खूटियों में सामने के रुख़ लगे हुए चमड़े के गित्ते जिनके बीच में सूराख़ होता है। जिसमें तकले के सिरे डाल दिये जाते हैं। पुरानी चाल के चर्ख़ों में यह गित्ते अमूमन चमड़े के होते हैं। यही उसकी वजह तस्मिया है। **दमड़का** कुकड़ी की ठेक यानी तकले पर सूत की लपेट के लिए बतौर आड़ चमड़े वगैरा की गोल थिगली की शकल का लगा हुआ बन्द। **लगाना, डालना** के साथ बोला जाता है। **घुरा** चर्ख़े के पहिये यानी चाक के दोनों पाखों या मर्कज़ में जुड़ी हुई बेलननुमा लकड़ी जो दोनों पाखों को मिलाये रखती है। **खूंटिए** तकला लगाने की चाक के मुक़ाबिल दूसरे सिरे पर जड़ी हुई खूटियाँ। **गुड़िया** तकले के खूँटे के दरमियान जुड़ी हुई चर्ख़े की माल की खूँटी। जिसके बीच में माल का सिरा डालने का एक लम्बा सूराख होता है। **माल** चर्ख़े के चाक और तकले में रब्त पैदा करने वाला डोरी का हल्क़ा जो चाक के साथ के तकले को हरकत में लाता है। पट्टी की शक्ल की लम्बी चौड़ी माल जो बडी–बड़ी मषीनों के चाकों को हरकत देने के लिए इस्तेमाल की जाती है पट्टे के नाम से मौसूम की जाती है। **मायीं** पुरानी वज़अ के चर्ख़े के चाक के पाखों के दरमियान चारपाई की अद्वान की शक्ल डोरी का तना हुआ जाल, जिसपर माल चढ़ी रहती है। **मंझा मजीटी** चर्ख़े की एक बैठक जिसके एक सिरे पर चाक और दूसरे सिरे पर तकले

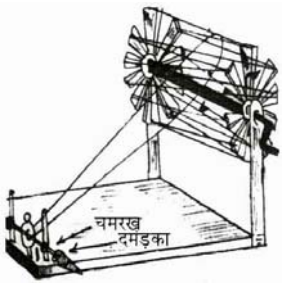

के खूँटे जुड़े होते हैं। **हत्थी** चर्खे के चाक को घुमाने वाला दस्ता।

चकवा (पु0) फिरई, फिरकी। **देखें** चर्खा।

चिमरख़ (स्त्री) चिमड़ख। देखें चर्खा।

चमोटा (पु0) चर्ख़े की माल को साफ करने और उसकी चिकनाहट को दूर करने का चमड़े का खीसा। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

चूची (स्त्री) (बंगाली) तागे की तम्बोतरी बनी हुई पेचक। **बनाना** के साथ बोला जाता है। उर्दू में मोइया कहते हैं। लफ्ज़ चूची अवाम की ज़बान में औरत की छाती के मुँह (बिटनी) के लिए बोला जाता है। **देखें** मोइया।

चीरू (पु0) पक्के सुर्ख रंग का तागा।

दफ्ती (स्त्री) देखें अटेरन।

दमड़का (पु0) दमरक, दमड़ख। **देखें** चर्खा। **लगाना, डालना** के साथ बोला जाता है।

धागा (पु0) देखें तागा।

धुरा (पु0) देखें चर्खा।

डोर (पु0) मज़बूत भाँजवाँ तागा जो लेसदार चीज़ से माँझकर चिकना और करारा बना दिया जाय (पतंगबाजों के पतंग उड़ाने के तागे को डोर कहते हैं। मुसल्सल लम्बा तागा।

डोरा (पु0) तागे का मामूली छोटा टुकड़ा। **प्रयोग** तसवीर को कागज़ में लपेटकर एक मज़बूत डोरे से बाँध दिया।

डोरी (स्त्री) पतली क़िस्म की सूत की डोरी (सुतली) डोर के मुक़ाबले में डोरी मोटी और मज़बूत होती है।

राल्ना (क्रिया) चर्ख़े की माल पर राल (एक निबाताती शय्) चढ़ाना या राल से माँझना ताकि इसमे एक क़िस्म का खुर्दुरापन पैदा हो जाय और तकले पर फिसले नहीं (रेषम के तार को माझने और साफ करने को रहाल्ना कहते हैं। षायद राल्ना से रहाल्ना बना लिया है और रेषम माझने वाले कारीगर को रहाल्कार कहते हैं। **देखें** पेषा–ए–रेषमसाज़ी पृ0।

रील (पु0) देखें गिट्टा।

साना (पु0) पुर्ती, सूराख़दार नलकी जिसको चर्ख़े के तकले पर चढ़ाकर पेचक या कुकड़ी बनाते हैं। (सान तिलंगी में बारीक दर्ज़ को कहते हैं।)

सानया (पु0) देखें परेती।

साँठ (स्त्री) सूत के तार का कचबला फूँसडा जो खराब तुस की वजह से कताई में साफ न हुआ हो। **पड़ना, आना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** ताने के तारों में जगह–जगह साँठें पड़ी हुईं हैं। **प्रयोग** गाले की खराबी की वजह सूतमें साँठें रह गयीं हैं।

सुतली (स्त्री) सूत की मोटी डोरी जो कम से कम छः डोर की बटी हुई होती है लेकिन उर्दू में सन की कचबली डोरी को टाट और उसी क़िस्म की दूसरी चीज़े सीने के काम आती हैं। सुतली कहने लगे हैं और सुतली के लिए सूत की डोरी कहा जाता है।

सुलझाना/सुलझना (क्रिया) तागे का उलझाव यानी गुत्थी या बल खिलना, खोलना।

सूत (पु0) रूई का कता हुआ कचबला तार। **कातना** के साथ बोला जाता है।

कातना (क्रिया) रूई के रेषों का चर्खे के ज़रिये बलकर तार बनाना।

काधू (पु0) (बंगाली) **देखें** भाँवरकली।

कताई (हासिल क्रिया) देखें कातना। कातने की उज़रत मज़दूरी।

कतनहारी (स्त्री) सूत कातने वाली मज़दूरनी।

कतैया सूत कातने वाला मज़दूर।

कचबला तागा (पु0) देखें तागा।

कुकड़ी (स्त्री) गुल्ली, पोनी पिन्दया सूत की अट्टी जो कताई के साथ तकले के ऊपर बनाई जाती है।

किलाबा (पु0) परैंता, फरैंता। **देखें** परैंती।

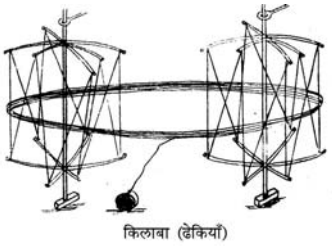

कलावा/कलाबा (पु0) (संस्कृत कलाबा) कच्चा यानी बगैर बला सूत अ़मूमन सुर्ख रंग के सूत को कहते हैं जो हिन्दुओं में मज़हबी रूसूम और शादी विवाह की तक़रीब में काम में आता है।

कोई (स्त्री) पान। **देखें** माँढ़ी।

खूँटिया/खूटिए (पु0) देखें चर्खा।

गाँठ (स्त्री) गूची, गिरह। **देखें** गिरह। कपडे के थानों का गट्ठर।

गिट्टा (पु0) रील। तागा लपेटने की बेलननुमा बनी हुई चोबी फिरकी जिसका बीच का हिस्सा गहरा और सिरे उभरे हुए होते है, छोटी क़िस्म को गिट्टी कहते हैं।

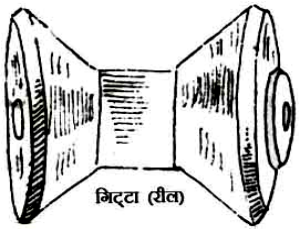

गिट्टी (स्त्री) देखें गिट्टा।

गिरह (स्त्री) गाँठ।

गुड़िया (स्त्री) देखें चर्खा।

गुलझट्टा (पु0) देखें उलझाव और उलझट्टी।

गुलझट्टी (स्त्री) देखें उलझट्टी।

गूची (स्त्री) (बंगाली) गूची दरअसल लफ़्ज गूँज या गुंज बमानी मड़ोड़ीदार गिरह का बिगड़ा हुआ है। **बाँधना, लगाना** के साथ बोला जाता है। **देखें** आँट।

लड़ (स्त्री) रूई वगैरा के रेषों का बारीक मुसल्सल तार जो कताई में बनता चला जाता है, कई लड़ें मिलाकर तागा बनाया जाता है। **प्रयोग** सिलाई का तागा कम–अज़–कम तीन लड़ा होता है।

लड़ी (स्त्री) उर्दू में लड़ी के माने लड़ के मानों में नही बोली जाती, उसका मफ़हूम ख़ास है। **देखें** लड़।

लच्छा (पु0) सूत की लपेटी हुई थई मामूल से छोटी को लच्छी कहते हैं।

लच्छी (स्त्री) देखें लच्छा।

माल (स्त्री) बड़ी कलों की चर्ख़ियों की माल जो चमड़े वगैरा की पट्टीनुमा होती हैं। सूबा बम्बई व मद्रास वगैरा में पट्टा कहलाती है। **डालना, चढ़ना, उतारना** के साथ बोला जाता है। **देखें** चर्ख़ा।

माला (स्त्री) खड़ी थाड़ी का सिर अटकाने का प्यालेनुमा ज़र्फ़ जिसमें थाड़ी घुमाते वक्त सिरा जगह पर क़ायम रहता है।

माँड़ी (स्त्री) कोई, पान, तागे पर चढ़ाने का एक लेसदार मसाला जो चावल वगैरा के लुआब से बनाया जाता है और तागे को करारा करने के लिए उसपर चढ़ाया जाता है।

मायीं (स्त्री) अवाल, जुत्नी, जुन्धनी। **देखें** चर्ख़ा।

मजीटी (स्त्री) देखें मंझा।

मड़ोड़ी (स्त्री) भाँज। **देखें** आँट।

मंझा (पु0) मजीटी। **देखें** चर्ख़ा।

मोइया (पु0) तीखी लपेट की एक मूआ अंटी, चूची।

नटाना (क्रिया) सूत को कुकड़ी से परेती पर चढ़ाना।

हत्ती (स्त्री) देखें चर्ख़ा।

3 पेषा–ए–तैयारी ऊन

हिन्दुस्तान में पंजाब और कष्मीर ऊनी कपड़े की स़न्अ़त के लिए ज़माना–ए–क़दीम से मषहूर है। यहाँ की सन्अतगाहों में लद्दाख, किरमान, काबुल, हज़ारा और तिब्बत के बाज़ मषहूर मुक़ामात से ऊन आता रहा है।, इसलिए इन मुक़ामात की ज़बान के अल्फ़ाज़ और ऊनी सन्अ़त की बहुत सी कुछ असली हालत में और कुछ रूप बदलकर ज़बान ज़दे आम हो गयी है और उर्दू जबान के साथ मिलकर कारीगरों और ताजिरों में आमतौर से बोली और समझी जाती है।

ऊन (स्त्री) कपड़ा बनाने के काम में लाये जाने वाले भेंड़, बकरी, ऊँट और बाज़ दीगर चौपायों के बारीक और लम्बे बाल।

पाचम/पच्चम (पु0) सूत कातने के चर्खे से मिलता–जुलता ऊन कातने का चर्ख़ा।

पख़्ची/पख़ची (स्त्री) पष्म या बारीक क़िस्म का ऊन कातने या उमदा क़िस्म का हल्का–फुल्का और सुबुकचाल चर्ख़ा।

पाईमाँगा/पाईमाँगो (पु0) ऊनी तागा तैयार कराने वाला आजर या दलाल।

पष्म (स्त्री) निहायत बारीक मुलायम और छोटे बाल जो लम्बे बालों के दरमियान खाल के ऊपर बतौर रूयँ के पैदा होते हैं। इसको ऊन से अलाहिदा करके आला क़िस्म की शाल और कपड़ा बनाने के काम में लाते हैं। पष्म को बाज़ मुकामात पर तुस के नाम से मौसूम करते हैं। **रूआँ** ख़ाब और सूफ़ भी कहलाती है।

पष्मिया (पु0) पष्म या ऊन का बना हुआ तागा।

पिन्नागर/पिन्नाकार (पु0) ऊन का ताना तैयार करने वाला कारीगर, जो ऊनी तागे को साफ करता और मांड़ी लगाकर चिकना और करारा बनाता है।

फेरी (स्त्री) पषम और ऊन की छुटन जो ऊन के साफ करने में निकलती है और अद्ना दरजे की शाल और कम्बल बनाने के काम में लाई जाती है।

तास्का/तसका (पु0) ऊन का गाला भिगोने का बर्तन (लफ़्ज़) तष्त या तसले का बदला हुआ तलफ्फुज़ है।

तिराखान/ तिराखन (पु0) ऊन कातने और तागा बनाने वाला कारीगर।

तुस (पु0) देखें पष्म।

तम्बा (पु0) बारीक ऊन का गाला जो एक खास तरीके से तूमकर या धुनकर बनाया जाता है और क़िस्म फेरी से नरम होता है।

खाब (स्त्री) देखें पष्म।

रूआँ (पु0) देखें पष्म।

सुमूर (पु0) लोमड़ी की क़िस्म के जानवर की ऊनदार खाल जिसका रंग सुर्खी माइल स्याह होता है और पोस्तीन वगैरा बनाने के काम में लाई जाती है।

सिंजाब (स्त्री) सर्द मुमालिक का बड़े चूहे से मिलता–जुलता आला क़िस्म की पष्मदार खाल वाला जानवर जिसकी खाल पोस्तीन बनाने के काम आती है।

सूफ़ (पु0) देखें पष्म।

तूस (स्त्री) एक क़िस्म की स्याही, सफेदी या सुर्खीमाइल भूरे रंग की पष्म।

क़ाकुम (स्त्री) निहायत नरम और सफेद बालों वाला सिंजाब की क़िस्म का जानवर। इसकी खाल पोस्तीन बनाने के काम आती है।

कटज़क (पु0) ऊन का तागा बलने का एक क़िस्म का चर्ख़ा।

कजकाह (स्त्री) तिब्बती गाय की दुम के बालों का गुच्छा जो अहले हुनूद बतौर चुँवर इस्तेमाल करते हैं।

कच्चा ऊन (पु0) बगैर छटा और कता ऊन।

कूज़क (पु0) बख्तर और बुखारा के ऊँटों का ऊन।

माला (स्त्री) साफ़षुदा और धुने हुए ऊन की तार कातने के लिए बनाई हुई पोनी या छोटी सी थई जिसको कातने से पहले पानी में भिगो रखते हैं।

मरीना (स्त्री) हज़ारे के इलाक़े की भेंड़ और दुम्बे की ऊन जो निहायत मुलायम और चमकदार होने की वजह से मषहूर है (मरीना नवाहे काबुल के एक मुक़ाम का नाम है जहाँ के दुम्बे ऊन के लिए बहुत मषहूर है और उनकी ऊन मरीने के नाम से मारूफ़ है। जिसका बना हुआ कपड़ा मलीना कहलाता है)

नाकात (पु0) शाल बुनने के लिए ऊन का ताना और बाना तैयार करने वाला कारीगर।

वहाबषाही ऊन (स्त्री) किरमान की भेड़ की ऊन वहाबषाही कहलाती है। इसकी बनी हुई शाल निहायत आला क़िस्म की होती है।

4 पेषा सिलाई बटाई (रेषम और सन)

अड्डी (स्त्री) देखें पाड़।

अरझासन (पु0) देखें सन।

अरंडी (स्त्री) देखें रेषम।

उसारा (पु0) बारीक भाँजवाँ रेषम की एक लच्छी जो तक़रीबन 460 गज़ लम्बे तार की होती है (उसारी रेषमसाज़ों की उस रील या गिट्टे को कहते हैं। जिसपर एक मुक़र्रिरा लम्बान का रेषम बटा जाता है उस निस्बत से मुक़र्रिरा लम्बान की बटी हुई रेषम की लच्छी कारीगरों की बोलचाल में मजाज़न उसारा कहलाती है)

उसारी (स्त्री) देखें उसारा।

औट्ना (क्रिया) रेषम के कोये पर से तार उतारना।

एरी/एरिया (पु0) (एरी) **देखें** रेषम।

बाँक (स्त्री) देखें चटाम।

बुंती (स्त्री) देखें सन।

बिंदी (स्त्री) देखें रेषम।

बेल (स्त्री) रेषम के कोये पर से उतारे हुए तारों के टुकड़ों को जोड़कर बनाई हुई लम्बी लड़।

बेला (पु0) कच्चे यानी कोये पर से उतारे हुए रेषम के तार लपेटने की चर्ख़ी जो तारों के लिहाज से बड़ी–छोटी होती है और दोबेला–तेहबेला बगैरा के नामो से मौसूम की जाती है। **उगलना** बेले पर से रेषम का तार ढुलकना, गिरना।

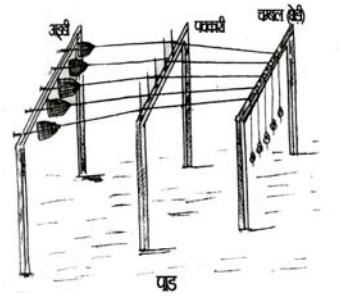

पाड़ (स्त्री) रेषम खोलने, साफ करने और बटने की कारगाह। इसमें कारीगर के काम करने की

मुन्दर्ज़ाजेल चीजें होती हैं। **अड्डी** रेषम की ठाड़ियाँ (चर्ख़ियाँ) लगाने का चोबी चौकटा। **पिचकारी** पचतारा रेषमी डोरे की बटाई का चोबी अड्डा जिससे हर तार के इलाहिदा रखने को खूटियाँ लगी होती हैं। **चम्बल** (घोड़ी) रेषम की बटाई के तारों को ऊपर को उठाये रखने वाला चोबी चौकटा जिस पर से तार लट्टुओं में बंधे लटकते रहते हैं। जिनको घुमाकर तार बटा जाता है। बाज़ कारीगर चौकटे के बजाय एक मोटी रस्सी तान कर उसपर से तार लटका लेते हैं और उस रस्सी को लठरस्सी कहते हैं। **टाँड** तैयार रेषम की चर्खियाँ रखने का अड्डा।

पाम (स्त्री) रेषम का क़रीब 36 गज़ लम्बा भाँजवाँ डोरा जो ज़रबाफ़ी की सन्अ़त के लिए गोटे–किनारी की कन्नी के लिए तैयार किया जाता है। कारीगर अपनी

रोज़मर्रा में 36 गज़ लम्बे भाँजुवें डोरे की आँटी को पाम कहते हैं।

पताम्बर (पु0) देखें रेषम।

पटसन (पु0) देखें सन।

पचकारी (स्त्री) देखें पाड़।

पुर्ज़ (स्त्री) झिरी, सिलाई बटाई में निकली हुई रेषम के तारों की छुटन या छीज जो बाज़ मामूली कामों में इस्तेमाल होती है। **प्रयोग** रेषम का कोया खाम रहता है तो तारों से पुर्ज़ बहुत निकलती है।

फूल (पु0) देखें रेषम।

ताबगर (पु0) रहालकार, रेषम का तार बटने वाला कारीगर।

तागातू (पु0) बटे हुए रेषम की एक क़िस्म जो बलिहाज़ तादादे–तार और बलाई मौसूम की जाती है।

तगला लपेट/तागला लपेट (स्त्री) तीखी लपेट को उलटपुलट और बिगाड़कर कारीगर तागला और तागला लपेट कहने लगे हैं। जिससे मुराद थाड़ी पर रेषम के तार की लपेट को एकदूसरे पर ऊपरतले तिरछा लपेटा जाता है जैसी मषीन की बनी हुई पेचक की लपेट होती है, क्योंकि सीधी लपेट से रेषम का तार बवजह चिकना होने के इधर उधर ढुलक कर आपस में उलझ जाता है। इसलिए चर्खी पर रेषम के तार की तीखी लपेट जुरूरी है।

ताव/तावा (पु0) चक्कर, घुमाव। रेषम की बटाई में लट्टू के चक्कर देने को ताव कहते हैं। **आना, देना, खाना** के साथ बोला जाता है।

तुल्हर देखें सन।

ताँड़ (पु0) देखें पाड़।

टसर (स्त्री) देखें रेषम।

झिरी (स्त्री) देखें पुर्ज़।

चटाम (पु0) बाँक। रेषम के बगैर बले तारों का लच्छा या थई।

चिट्टा (स्त्री) देखें नख़।

चम्बल (स्त्री) घोड़ी, लठरस्सी। **देखें** पाड़।

ख़ियाता (पु0) देखें नख़।

रहालकार (पु0) रेषम बटने वाला कारीगर। **देखें** ताबकार/ताबगार

रहालकारी (स्त्री) रेषम की सिलाई बटाई की सन्अत। **देखें** सिलाई, बटाई।

रेषम (पु0) एक कीड़े के मुँह के रस का तार जो निहायत मज़बूत, चिकना और नर्म होता है उसका तैयार किया हुआ कपड़ा, अव्वल दर्जे में शुमार होता है। रेषम हिन्दुस्तान में चीन के इलाक़े पिरस से आया और वहाँ का कोरियाई नाम सिर अपने साथ लाया जो आसाम के एक ख़ास क़िस्म के रेषम के लिए बंगाली ज़बान में षिरया और सिड़ीना के नाम से मारूफ़ है। हिन्दुस्तान की बाज़ ज़बानों मे रेषम को पताम्बर कहते हैं। यहाँ के रेषम में टसर, एरिया और मोगा ख़ास तौर से मषहूर है जो बंगाल और आसाम के जंगलों में बहुत क़दीम से पाया जाता है इन तीनों क़िस्मों में सनअ़ती नुक़्त–ए–नज़र से मोगा बहुत उम्दा होता है क्योंकि वह सिलाई और कढ़ाई की बहुत सी मुख़्तलिफ़ क़िस्मों में काम आता है और उसका तागा आसानी से बन जाता है। टसर दूसरे दर्जे का रेषम समझा जाता है उसका तागा मुष्किल से बनता है। एरी इन दोनों में घटिया होती हैं। इसका तार बगैर धुनके नहीं बनता। यह रेषम शिमाली बंगाल और आसाम के जंगलों में होता है। इसका बना हुआ कपड़ा खुर्दुरा और सख़्त रहता है। रेषम के इन मज़कूरा बाला नामों के अलावा चन्द हस्बे–ज़ेल नाम और मषहूर है। **अरंडी** रेषम की क़िस्म की एक जिन्स जो गलती से रेषम समझी जाती है। लेकिन दरहकीकत वह रेषम नहीं होती बल्कि रेषम के कीड़े की नौअ् का एक कीड़ा

होता है जो अरंड के दरख्त पर परवरिष पाता है उसके कोये के माद्दे से जो तार बनाया जाता है। वह अरंडी के नाम से मौसूम कियाजाता है। **बिंदी** आला दर्जे का साफ़ किया हुआ निहायत नफ़ीस क़िस्म का रेषम। **फूल** दूसरे दर्जे का साफ़षुदा उमदा क़िस्म का रेषम। **साँगी** आज़मगढ़ इलाके का एक खास क़िस्म का रेषम जो वहाँ की सन्अत पार्चाबानी के लिए मख़सूस है। **सुचल्ल** (सुल्तानी, सुंगल) मोटा, फुटकीदार और सख़्त क़िस्म का रेषम मामूली क़िस्म का कपड़ा बनाने और दूसरे ऊनी कामों में इस्तेमाल किया जाता है। हिन्दुस्तान में बाहर से आता है। **संदूक़ी** आसाम का मामूली साफ़ किया हुआ दूसरे दर्जे का रेषम। **काकड़ी** तीसरे दर्जे का उमदा क़िस्म का रेषम जो चीन की तरफ से आता है। **कंदूरी** रेषम की जिन्स से एक क़िस्म का रेषम। इसका तार मोटा मगर साफ़ होता है। **मई** चीन का मोटे क़िस्म का रेषम जो मोटी क़िस्म का रेषम कपड़ा बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। इसका तार साफ होता है।

रेषमसाज़ (पु0) रेषम का तार तैयार करने वाला कारीगर। **देखें** सिलाई, बटाई ।

साँगी (पु0) देखें रेषम।

सिटरीना/षिरिया (पु0) देखें रेषम।

सठेरा/संवरा (पु0) देखें सन।

सलाई, बटाई (स्त्री) रेषमी तागों और ताना तैयार करने की सन्अत सलाई से मुराद तारों का जोड़ना और मिलाना और बटाई से उसका तागा बनाना और हस्बे जुरूरत तार तैयार करना समझा जाता है। यह दोनों काम आम तौर से एक ही कारख़ाने में होते हैं और सलाई बटाई के नाम से मौसूम किये जाते हैं। जिस तरह रूई के लिए धुनाई, कताई बोला जाता है। इस पेषे को पेषा–ए –सलाई–बटाई कहा जाता है।

सुल्तानी (पु0) देखें रेषम।

सन (पु0) संस्कृत शना। एक ज़रई पौधे की छाल का रेषा इसकी दो क़िस्में होती हैं। एक उमदा क़िस्म जो कपड़ा बुनने के काम आती है दूसरी अद्ना क़िस्म जिसके थैले टाट और इसी क़िस्म की दूसरी चीज़ें बनाई जाती है। काटकर और गट्ठे बनाकर पानी में डाल दिया जाता है ताकि शाख़ का डंठल गलकर छाल जुदा हो जाय। इसतरह उस की छाल निकालकर रेषम की तरह तार बनाया जाता है। हिन्दी कहावत है–

साई, सन और दष्त जिन उनको यही सभाव।
खाल खिचा दें अपनी पर बंधन के दाव।
मुरकाट पर बंधन के दाव खाल अपनी खावें
कतर कुट तो पर बाज न आवें।
कहे गिरधर कबिराय जुड़े अपनी कटाए
जल में गल सड़ जाय ता छोड़े न खताए।

अरझासन सन के पौधे की छाल जिसके रेषों का तार बनाया जाता है। **बुनटी** सन के पौधे की कच्ची शाख़ जिस की छाल पुख़्ता न हुई हो उसको बाज़ मुक़ाम पर सनसताली कहते हैं। **पटसन** सन की एक क़िस्म का नाम। **तुलहर** पटसन के पौधे की छाल। **सुठेरा** सन के पौधे का छाल उतरा हुआ डंठल। उसको बाज़ मुक़ाम पर सनौरा कहते हैं। **लुटियासन** पटसन की छाल के रेषे। **खजूर** सन के रेषों की छीज या झिरी।

सनसताली (स्त्री) देखें सन।

सुंगल (पु0) देखें रेषम।

सनौरा (पु0) देखें सन।

षिरिया/सिड़निया (पु0) देखें रेषम।

संदूक़ी (पु0) देखें रेषम।

काकड़ी (स्त्री) देखें रेषम।

कच्चा रेषम (पु0) देखें लाक।

किरना (क्रिया) रेषम के तार का चर्ख़ी पर से ढलकना। इसको बेला या ठाड़ी उगलना भी कहते हैं। **देखें** बेला उगलना।

कंडूरी (स्त्री) देखें रेषम।

कोया (पु0) रेषमा के तार की कुकड़ी या मोइया। रेषम के कीड़े का खोल।

खजूर (स्त्री) देखें सन।

कटा पर्चा (पु0) मस्नूई रेषम जो जुनूबी, अफ्रीका के एक जंगली दरख़्त के रस से बनाया जाता है। जो रंग और चमक में रेषम के मानिन्द होता है।

घोड़ी (स्त्री) देखें चम्बल।

लाक (पु0) कोये पर से उतारा हुआ और बगैर साफ़ किया हुआ रेषम।

लठरस्सी (स्त्री) देखें चम्बल।

मख़्तूल/मख्तूम (पु0) देखें नख़।

मुक्ता (पु0) बटे हुए रेषम की एक क़िस्म जो बलेहाज़ तादाद तारा और बलाई मौसूम की जाती है।

मई (स्त्री) देखें रेषम।

मोगा (पु0) देखें रेषम।

मेल मिलाना (क्रिया) रेषम के बारीक और मोटे तारोंकी छटाई करना और यकसाँ तार एकजा करना। **करना** के साथ बोला जाता है।

नागवाल (पु0) रेषमी ताना बनाने वाला कारीगर।

नख़ (स्त्री) ख़याता, चट्टा, मख्तूल, मख्तूम। रेषम का एक बारीक भाँजवाँ तागा जो बारीक मोतियों की लड़ बनाए और ज़रदोज़ी के काम के लिए तैयार किया जाता है। तैयारी का तरीक़ा यह है कि नाखून में बारीक सूराख़ करके उसके अन्दर से तागे को निकाला जाता है ताकि वह यकसाँ और चिकना हो जाय। यही अमल इसकी वज़ह तस्मिया है, लेकिन मुख़तलिफ़ मुक़ामात पर मज़कूर–उस–सदर नामों से मौसूम किया जाता है।

हज़ारा (पु0) बहुत से बारीक तारों को मिलाकर बटा हुआ रेषम का मोटा तागा जो इलाक़ाबन्दी के काम के लिए तैयार किया जाता है।

5 पेषा–ए–धुलाई पार्चा

उजला कपड़ा (पु0) मैल कुचैल से साफ़ और निखरा हुआ कपड़ा।

अछवाया कपड़ा (पु0) कम मैला कपड़ा यानी वह कपड़ा जिसपर ज़्यादा मैल न चढ़ी हो।

इस्त्री (स्त्री) कपड़े की सिलवटें और चुरसें निकालने का एक क़िस्म का आहनी या पीतली अंगेठीदार तिखोंटा ज़र्फ़। इसमें आग भरकर गरम करते और कपड़े पर फेरकर उसकी चुरसें और सिलवटें निकालते हैं। हिन्दुस्तान में इस्त्री का रिवाज मुसल्मानों के अहेद से हुआ है।

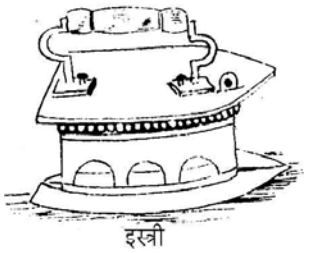
इस्त्री

भरना इस्त्री गर्म करने को उसकी अंगेठी में आग डालना। **खाकी करना** इस्त्री को ठंडा करने के लिए उसकी अंगेठी से आग निकालना। **करना, बनाना, फिरना** कपड़े पर इस्त्री का अमल करना। कपड़े की सफाई के लिए इस्त्री को काम में लाना।

इस्त्रीकार (पु0) कपड़े पर इस्त्री करने वाला कारीगर।

अल्गनी (स्त्री) गीले कपड़े सुखाने के लिए डालने और फैलाने को तानी हुई रस्सी गंवार लाम के ज़बर से अलगनी और बाज़ जगह बलगनी और बिलाँग कहते हैं। **तानना, बाँधना** के साथ बोला जाता है।

अमरूला (पु0) एक पौधे का नाम, जिसका अर्क़ तेज़ाबी खासियत रखता है और कपड़े

से लोहे के जंग के धब्बे को साफ़ कर देता है।

ओपाछप करना (क्रिया) देखें पाछना, पछाँटना।

बरेहटन (स्त्री) धोबन, कपड़ा धोने वाली मज़दूरनी।

बिलाँग (स्त्री) देखें अलगनी।

बलगनी (स्त्री) देखें अलगनी।

बंधी धुलाई (स्त्री) मुक़र्रिरा माहाना तंख्वाह पर धुलाई का काम बरखिलाफ़ छुट्टी धुलाई।

बैंठ (स्त्री) गीले कपड़े की अलबैट जो पानी निचोड़ने के लिए दी जाय या भट्ठी चढ़ाने को बनाई जाय।

भट्ठी (स्त्री) मैले कपड़ो को भपारा देने का चूल्हा जिसपर पानी के लिए एक बर्तन जमा होता है।।

भट्टी

चढ़ाना, लगाना कपड़ों को भपारा देने के लिए भट्ठी के बर्तन के मुँह के इर्द–गिर्द कपड़े ऊपर तले जमाकर रखे जाते हैं। ताकि पानी की भाप लगकर उनका मैल छूटे। इस अमल को भट्ठी चढ़ाना, लगाना और भट्ठी में देना, डालना कहते हैं। देना, लगाना और भट्ठी में डालना भी कहते हैं। **देखें** भट्ठी चढ़ाना। **पसीजना** भट्ठी में लगाये हुए कपड़ों पर भाप का असर हो जाना और मैल कटना।

पाछना, पिछना (क्रिया) पछाड़ना, पछाटना, पछना, पछोड़ना, कपड़े का मैल छाँटने (निकालना) को गीला करके पत्थर या किसी सख़्त चीज पर उलट–पलटकर पटख़ना, पूरब के बाज़ इलाक़ों में इसअमल को ओपाछप करना कहते हैं। कपड़े पाछते वक्त भरकर साँस लेने और जोर से खारिज करने में मुँह से आ–छू की आवाज निकलती है, जिसके दौर को छू, आ, छू और छू आ छू करना होता है।

पुचारा देना (क्रिया) फोई देना, इस्त्री करने से पहले कपड़े को नम करने के लिए पानी की हल्की सी फुवार देना।

पछाड़ना/पछाटना (क्रिया) देखें पाछना।

पल्ली (स्त्री) बैठन। कपड़ों की लादी (गठरी) बाँधने की बड़ी चादर।

फरेरा करना (क्रिया) कपड़े की नमी को धूप या हवा देकर कम करना।

फुई देना (क्रिया) देखें पुचारा देना।

तेज़ इस्त्री (स्त्री) मामूल से ज़्यादा गर्म इस्त्री जिसे कपड़े पर चलने का दाग आ जाय।

ठंडी इस्त्री (स्त्री) मामूल से कम गर्म इस्त्री जो कपड़े की सिलवट निकालने में अपना पूरा अ़मल न करे।

जुफ़्ता (पु0) कपड़े के ताने या बाने के तारों में धुलाई या खींचतान से अपनी जगह पहुँचकर एक जगह एकट्ठे हो जाने का जुफ़्ता कहते हैं। **पड़ना, आना, निकालना** के साथ बोला जाता है। **देखें** पे0।

झुर्री (स्त्री) कपड़े की सतह के तनाव का नुक़्स यानी ढ़ीला और जगह–जगह से सिकुड़ापन। बदन की खाल की इस कैफ़ियत को भी यही कहते हैं।

झूल (पु0) कपड़े की दोनों कोरों के दरमियान सतह का ढीलापन। **आना, पड़ना** के साथ बोला जाता है।

झीरना (क्रिया) खंगालना, मैले कपड़े को मसाला लगाकर पहली बार मामूली तौर पर बग़ैर मले–वले धोना। देहली व नवाहे–देहली में घाँटना कहते हैं।

चिट्टा (पु0) बहुत उजला, सफेद चमकदार।

चिटियाना (क्रिया) उजला करना, मैले कपड़े को मसाले से धोकर निखारना।

चुरस (स्त्री) देखें सिलवट।

चूड़ा (पु0) पानी भीगा हुआ तरबतर। **प्रयोग़** मीना में भीगकर तमाम कपड़े चूड़ा हो गये। **होना, करना** के साथ बोला जाता है।

छाँटना (क्रिया) देखें छीरना।

छुट्टी धुलाई (स्त्री) बगैर पाबंदी की धुलाई जिसमें काम करने और उजरत पाने के लिए दिन और काम की तादाद मुक़र्रर न हो यानी जितना काम उतना दाम। जब करना, तब पाना।

छू–आछू (स्त्री) देखें पाछना।

छई (स्त्री) धोबी के बैल का लबादा। **दाबना** बोझ उठाना।

दाग़ धोबी (पु0) कपड़े के दाग धब्बे निकालने वाला कारीगर।

धुलाई (स्त्री) कपड़ा धोने का एहतमाम। **प्रयोग** महीने की दो धुलाइयाँ मुकर्रर है। वह भी वक्त पर नही होती। कपड़ा धोने की उजरत। बड़े शहरों में कपड़े की धुलाई महंगी होती है।

धोब (पु0) शोब। धुलाई। कपड़ा धोने का अ़मल। **प्रयोग़** एक धोब में कपड़े का रंग बिगड़ गया। बारीक कपड़ा 3–4 धोब में फट जाता है। कोरे कपड़े का मैल कई धोबों में साफ़ होता है।

धोबन (स्त्री) बरेहटन, धोबी की औरत, कपड़ा धोने वाली मज़दूरनी।

कहावत तेलन से क्या धोबन घाट (घटिया)।

धोबी (पु0) कपड़ा धोने वाला मेहनती कारीगर मज़दूर।

धोवन (पु0) किसी चीज़ का धुला हुआ पानी। **प्रयोग़** दूध ऐसा है जैसे कढ़ाव का धोवन। खून ऐसा है जैसे गोष्त का धोवन।

दासन/दासना (पु0) मोटी क़िस्म के कपड़े को पाछने (मैल छाटने) का चोबी डंडा या मोगरा।

रिह (स्त्री) सोधीं। मैले कपड़े के मैल छाँटने का लगाने की एक क़िस्म की खार/षोरीली मिट्टी।

सिलवट (स्त्री) चुरस, चुन्नट, षिकन। कपड़े की सतह की हमवारी के बिगाड़ के निषान। मामूल से बड़े पुर्पेच बल और सतह के ढीलेपन को शल कहते हैं। **आना, पड़ना** के साथ बोला जाता है।

सौंदना (क्रिया) कपड़ों में मैल काटने का मसाला लगाना।

सोंधीं (स्त्री) देखें रेह।

शल (पु0) देखें सिल्वट।

शोब (पु0) देखें धोब। **प्रयोग** एक शोब में चिकनाई का धब्बा कपड़े पर से नहीं जाता।

काजू (पु0) देखें अमरूला।

काँजी (स्त्री) कपड़े में देने का चाँवलों का कलप। **देखें** कलप।

कपड़े बनाना (क्रिया) कपड़ों को इस्त्री करके तह करना। **प्रयोग़** सुबह सवेरे धोबी कपड़े बनाकर ले आया।

कपड़े मिलाना (क्रिया) धुलाई के कपड़ों को उनकी किस्म के लिहाज़ से इलाहिदा करके गिनती करना। कपड़ों की किस्म और तादाद की जाँच करना। **प्रयोग** कपड़े मिलाकर देखें पूरे हैं या नहीं।

कतारा सोंदा (पु0) बंगाल में सुनारगाँव के करीब एक मुक़ाम का नाम जहाँ का पानी कपड़ा सफेद करने में मषहूर था।

कलप/कल्फ़् (पु0) माढ़ी, कोई, काँजी। सूत या कपड़े को करारा करने का चावल या किसी क़िस्म की किसी चीज की बनाई हुई पीच (देना)। **देखें** पेषा–ए–बुनाई पृ0।

कुंदी (स्त्री) कपड़े की चुरस, सिलवट वगैरा

कुन्दी

निकालने में चोबी मुगरी या मुगरा इस्त्री के रवाज से कब्ल कपड़े की चुरस और सिलवटें चोबी मुगरी से कूटकर निकालने का तरीक़ा था। इस काम के लिए बड़ी महारत की ज़ुरूरत होती थी। होषियार और तजुर्बेकार धोबी यह काम करते थे। इसके लिए हिन्दी में यह कहावत मषहूर है

तेलन से क्या धोबन घाट (घटिया)।
वा की मुगरा वा की लाट।।

कुंदीकार/कुंदीगर (क्रिया) कपड़े पर कुंदी करने वाला कारीगर। **देखें** कुंदी।

कन्नी मिलाना (क्रिया) कपड़े की दोनों कोरे सही करना, बराबर करना।

कुई (स्त्री) देखें कलप।

खड़े घाट धुलाई (स्त्री) बगैर भट्ठी चढ़ाये तुरंत यानी जल्दी से दिन के दिन और वक्त के वक्त कपड़े धोकर देने का तरीका (धुलवाना)। **प्रयोग** खड़े घाट धुलवाया हुआ कपड़ा अच्छा साफ नहीं होता।

खंगालना (क्रिया) कपड़े को पानी में दो–तीन बार अच्छी तरह गोते देकर और खंगालकर बगैर मैल छाँटे निचोड़ लेना। **प्रयोग** पानी में खाली खँगाल लेने से कपड़े का मैल नहीं निकलता।

गूदड़ (पु0) कपड़े के फटे–पुराने और नाकारा टुकड़े।

घाट (पु0) नदी या तालाब के किनारे कपड़े धोने की जगह। **प्रयोग** धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का।

घोटन (स्त्री) कपड़े को चिकनाने का इस्त्री की क़िस्म का औज़ार जिससे रगड़कर कपड़े की सतह चिकनी और चमकदार बनायी जाती है। **फेरना** के साथ बोला जाता है।

लादी (स्त्री) धुलाई के कपड़ों की गठरी, धोबी के इस्तिलाह में लादी कहलाती है। बैल पर लादकर ले जाना इसकी वजह तास्मिया है यानी ऐसी वज़नी गठरी जो बैल पर लादकर ले जाने के काबिल हो। **बाँधना, बनाना** के साथ बोला जाता है।

माठ (स्त्री) कपड़ों में कलप देने का नाँद की वज़अ़ का बड़ा बर्तन, जो अमूमन मिट्टी का होता है।

मुगरा (पु0) कुंदी करने का चोबी औज़ार जिसको मजाज़न कुंदी कहते हैं, **देखें** कुंदी। मामूल से छोटा मुगरा, मुगरी कहलाता है।

मुगरी (स्त्री) देखें मुगरा।

मैल छाँटना (क्रिया) कपड़े का मैल धोकर साफ करना या निकालना। **काटना** के साथ बोला जाता है।

मैलछिपाऊ कपड़ा (पु0) देखें मैलख़ोरा कपड़ा।

मैलख़ोरा कपड़ा (पु0) ऐसी पुख्ता रंग का कपड़ा जिसपर मैलेपन का असर कम मालूम हो, मैल छिपाऊ कपड़ा।

नर्द (पु0) कपडे के जुफ़्ते निकालने के कारगाह का बेलन। **देखें** जुफ़्ता।

नर्दिया (पु0) कपड़े के जुफ़्ते निकालने वाला कारीगर जो ताने या बाने के सिमटे हुए तारों को दुरुस्त करता है।

निषानी (स्त्री) कपड़े की पहचान की कोई मुक़र्रिरा अ़लामत जो धोबी कपड़े के कोने पर पुख्ता स्याही या किसी रंगीन तागे से डाल लेते हैं **डालना** के साथ बोला जाता है।

निखारना (क्रिया) कपड़े की मैल काटकर उजला और साफ करना। रंग जो चम्पा के मषहूर फूल की रंगत पर तैयार और उसी नाम से मौसूम किया जाता है।

नील बाँडी (स्त्री) देखें अमरोला।

नील की चाषनी धुले कपड़े की ख़फीफ मैल छिपाने को हलकी सी नील की रंगत देने को नील की चाषनी या नील देना कहते हैं। **देना** के साथ बोला जाता है।

हरी (स्त्री) ऊँट और बकरी बगैरा की मेंगनी से मोटे कपड़े का मैल काटने का तैयार किया हुआ मसाला धोबियों की इस्तिलाह में हरी कहलाता है। जिस की वजह तस्मिया मेंगनी की रंगत है।

6 पेषा–ए–रंगाई व लैलारी

आबी रंग (पु0) गहरे पानी की रंगत से मिलता जुलता बहुत हलका नीला रंग। नील से इस क़िस्म के तमाम हलके और गहरे रंग बनाये जाते हैं।

आत्षी रंग (पु0) गहरा सुर्ख रंग, कुसुम के फूल, मजीठ, किरमदाना और सेंदुर वगैरा से इस किस्म की रंगत बनाई जाती है।

इरगुवानी रंग (पु0) नारंगी या गुल अनार की रंगत से मिलत जुलता रंग। ज़र्द और सुर्ख रंग को तरकीब देकर बनाया जाता है।

आस्मानी रंग (पु0) हल्का नीला रंग जिसमें सफ़ेदी झलके।

अफषाँ (स्त्री) चंद मुख्तलिफ रंगों क भूआर जो रंगने के बजाये कपड़े पर कर ली जाये, इस्तिलाह में अफ़षानी रंगत कहलाता है।

अस्ली रंग (पु0) देखें ख़ालिस् रंग।

अगरई रंग (पु0) मटियाली रंगत का अगर के रंग से मिलता जुलता रंग। ज़र्द, सुर्ख और नीले रंगों की तरकीब से बनाया जाता है।

अंजई (स्त्री) एक क़िस्म का मअ़दनी रंग का पत्थर जिससे बावन जानी रंग तैयार किया जाता है। इस पत्थर को बाज़ मुक़ामात पर सैंड कहते हैं।

अंगूरी रंग (पु0) जर्द और नीले रंग को तरकीब दे कर बनाया हुआ रंग। केले के नये पत्ते की रंगत से मिलता हुआ ज़र्दी माइल सब्ज़ होता है। चूँकि धान के पत्ते का रंग भी ऐसा ही होता है इसलिये धानी रंग भी कहते हैं।

ऊदा रंग (पु0) सुर्ख और नीले रंग को एक मुकर्रिरा मिक़दार में मिलाकर तैयार किया हुआ रंग। इस रंग में बहुत सी हलकी गहरी रंगतें तैयार करके मुख़्तलिफ नामों से मौसूम करते हैं।

ऐंगर (पु0) षिंगरफी रंग जो एक क़िस्म का सुर्ख़ रंग होता है।

ऐंगरौती (स्त्री) षिंगरफी रंग बनाने का जर्फ़।

बादामी रंग (पु0) नारंगी और ऊदे रंग के मुरक्कब से मग़ज़े बादाम के छिलके से मिलता जुलता तैयार किया हुआ रंग।

बट्टी (स्त्री) नील की चकती या टिकिया।

बसंती रंग (स्त्री) हल्दी या इसी क़िस्म की दूसरी चीज़ से तैयार किया हुआ या तुरई के फूल से मिलता जुलता ख़लिस ज़र्द रंग।

बिलौटिया (पु0) सुर्ख और नीले रंग को मिलाकर बैंगन की रंगत से मिलता जुलता तैयार किया हुआ सुर्खी माइल ऊदा रंग। इससे ज़रा गहरे रंग को जाम्नी रंग कहते हैं। जो जामन के रंग से मिलता है।

भगवा रंग (पु0) देखें जोगिया रंग।

भोडल (स्त्री) एक मअ़दनी शैय् जिससे एक क़िस्म का सुर्ख़ रंग तैयार किया जाता है।

पाह (स्त्री) पुट, चाष्नी, काढ़ा। रंग पक्का करने का मसाला जो बतौर लाग इस्तेमाल किया जाता है। जिसकी वजह से कपड़े की रंगत धुलाई में खराब नहीं होती और न फीकी पड़ती है। इस इअमल को रंगरेज़ों की इस्तिलाह में पाह देना कहते हैं।

पतंग (स्त्री) सुर्ख रंग बनाने की एक निबताती शैय्।

पुट्टी (स्त्री) ढाट, गंडा। तागे की बंदिष जो कपड़े पर रंग न चढ़ने को हस्बे जुरूरत मुख़्तलिफ़ वज़अ़ पर बाँधी जाती

है। यह अमल चुनरी की रंगाई में किया जाता है। **बांधना** के साथ बोला जाता है।

पुठ (स्त्री) देखें पाह।

पक्का रंग (पु0) वह रंग जो कपड़े पर चढ़ने के बाद धुलाई में खराब और फीका न हो।

प्याज़ी रंग (पु0) ज़र्द और सुर्ख़ रंग के मेल से तैयार किया हुआ सफेदी माइल हल्का गुलाबी रंग।

पीक (स्त्री) कुसुम के फूल का पीला रंग। **देखें** रैनी और रैनी चढ़ाना।

फटकार (स्त्री) कपड़े पर ज़ाइद चढ़े हुये रंग को पानी में खँगालकर निकालने का अमल। जिससे रंग खुलता और सफाई पैदा होती है।

फड़वी (स्त्री) नील का हौज़ घोटने की बल्ली।

फुक्का (पु0) रंग में मिलाने के लिये अबरक की बनाई हुई निहायत बारीक बुकनी (सफूफ) **देना।**

फेरा देना (क्रिया) नील के मटके को कपड़े को डिबोकर चक्कर देना। नील चढ़ने के धिंधोलना।

फीका रंग (पु0) रूखा रंग बहुत हल्की रंगाई जिसमें किसी तरह की चमक और शौख़ी न हो।

तलाव (पु0) नील की कोठी के पानी का ख़ज़ाना।

टिकाफी (स्त्री) देखें चाला।

टेसू (पु0) एक जंगली दरख़्त के फूल जिससे ज़र्द रंग निकाला जाता है।

जामनी रंग (पु0) देखें बैंगनी रंग।

जोगिया रंग (पु0) सुर्खी माइल मटियाला ज़र्द रंग जो गेरू ज़र्द और सुर्ख़ रंग को मिलाकर तैयार किया जाता है। मैलखोरा होने की वजह से जोगियो और फ़क़ीरो को बहुत भाता है और यही वजह तस्मिया है। इसको गेरूआ और भगवा रंग भी कहते हैं।

जेठा रंग (पु0) शहाब। पक्की किस्म का शौख़रंग। कुसुम के फूल का गहरा और तेज़ रंग। **देखें** रैनी और रैंनी चढ़ाना।

चाला (पु0) दादार, टकाई। नील की टिकिया खुष्क करने का बाँस का बना हुआ ठाटर या टट्टी।

चुक़्क़र (पु0) देखें गंडा।

चम्पई रंग (पु0) सुर्खी माइल ज़र्द रंग जो चम्पा के मषहूर फूल की रंगत पर तैयार और उसी नाम से मौसूम किया जाता है।

चुंदरी (स्त्री) रंग–रंग की धारियों और तरह–तरह की फूलदार रंगी हुई ओढ़नी या चादर। राजपूताने में बहुत अच्छी रंगी जाती है।

चोखारंग (पु0) अच्छी और खुषनुमा रंगाई।

कहावत हल्दी लगी न फिटकरी;
रंग चोखा ही चोखा।

छेत्ना (क्रिया) रंगने से पहले कोरे कपड़े को भिगोकर माँढी निकालना।

खाकी रंग (पु0) ज़र्द, सुर्ख और नीले रंग की बिलौनी से तैयार किया हुआ मटियाला रंग।

ख़ालिस रंग (पु0) वह रंग जो मुरक्कब न हो बल्कि क़ायम बिल्ज़ात हो, वह खुद किसी रंग से न बने और उसके दूसरे रंग बनाये जायें, इस तरह के तीन रंग सुर्ख, नीला और ज़र्द ख़ालिस या असली रंग कहलाते हैं। बाक़ी तमाम रंग मुरक्कब हैं और इन्हीं रंगों से तैयार किये जाते हैं।

दाब/दबोटा (पु0) नील के पत्तों को हौदा में दबाये रखने वाला वज़न।

दाबी (स्त्री) महूसा, खरिया। नील के चोबचा को घोटने की रई या डोरी।

दूधी (स्त्री) जंगली नील का पौधा।

दौरह (पु0) नील की डलियाँ घिसने का मिट्टी का उथलवाँ कूंडा।

धानी रंग (पु0) देखें अंगूरी रंग।

डाट (स्त्री) गंडा, चुंदरी या शाल पर रंगाई का मानेअ़बंद जो तागा लपेटकर लगा दिया जाता है। **देखें** पुट्टी।

ढंडियाँ (स्त्री) हारसिंघार के दरख्त के फूलों की जड़ें जिनसे एक क़िस्म का जर्द रंग बनाया जाता है।

डह्र/डहल (स्त्री) कुसुम के फूल का दूसरा रंग। **देखें** रैनी और रैनी चढ़ाना।

राझना (पु0) देखें रैनी।

रंगाई (स्त्री) कपड़ा रंगने का अमल। कपड़ा रंगने की उजरत।

रंगरेज (पु0) कपड़ा रंगने वाला करीगर। हिन्दुस्तान रंगाई की सन्अ़त को मुसलमानों के अहद में बहुत उरूज हुआ। कारीगर हिन्दुस्तान की हैवानी, ज़रअ़ी और मअ़दनी पैदावार से पुख़्ता और जामाज़ेब रंग तैयार करते थे। जब से यूरोप से रंग आने लगे इन कारीगरों की गर्मबाज़ारी सर्द पड़ गयी और हिन्दुस्तान की इस सन्अ़तगिरी को न सिर्फ़ नुक़सान पहुँचा बल्कि आला क़िस्म के पुख्ता रंग बनाने वाले सन्नाअ् भी मिट गये। हिन्दुस्तानी रंगरेज़ जिन अषिया से रंग तैयार करते थे, वह हस्बे–ज़ेल हैः लाख, ज़ंगार, नागरमोथा। पॉड़ी, कपूर, कचरी, बालछड़, तपंग, तुन, कत्थ, हल्दी, षिगर्फ़, कीकर की छाल, पीपल की छाल, सेंदूर, ज़ाफ़रान, अ़सारा–ए–रेवन्द, रसौत, माजू, करमदाना वग़ैरा–वग़ैरा। इन मज़कूराबाला, अष्या के अ़लावा नील और कुसुम रंग बनाने की ख़ास चीजें थीं जो तरह–तरह के रंग बनाने के काम आती थीं।

रूखारंग (पु0) देखें फीका रंग।

रैनी (स्त्री) कुसुम के फूल का रंग टपकाने का अ़मल। **चढ़ाना** कुसुम के फूलों में सज्जी मिलाकर एक जान करना और कपड़े में लटकाकर उनका अर्क़ टपकना। पहली मरतबा के टपके हुए रंग को पीक, दोबारा को डहर और तिबारा वाले को जेठा या शहाब कहते हैं।

ज़ाफ़रानी रंग (पु0) केसरी रंग ज़र्दीमाइल सुर्ख रंग, जो ज़ाफ़रान के रंग से मुषाबा हो।

जुमुर्दी रंग (पु0) आबी झलक का चमकदार सब्ज़ रंग, जो ज़र्द और नीले रंग को मिलाकर असली जुमुर्रद के रंग से मिलता हुआ तैयार किया जाता है।

ज़ंगारी रंग (पु0) लोहे की ज़ंग की रंगत का ज़र्द, नीले और सुर्ख रंग से तैयार किया हुआ रंग। बाज़ मुक़ामात पर नासी रंग कहते हैं।

ज़ैतूनी रंग (पु0) स्याही माइल गहरा, सब्ज़ रंग जो सब्ज़ और ज़र्द रंग को मिलाकर तैयार किया जाता है। उसको काही और मूंगिया रंग भी कहते हैं।

सब्ज़ रंग (पु0) हरी घास की रंगत का ज़र्द और नीले रंग को मिलाकर तैयार किया जाता है।

सब्ज़काही रंग (पु0) मूंगिया रंग, सब्ज स्याही माइल सब्ज़ रंग। इसको काही रंग भी कहते हैं, क्योंकि काही के रंग से मिलता–जुलता है।

सज्जी (स्त्री) एक क़िस्म की खार जो रंग पुख़्ता करने में बतौर लाग इस्तेमाल की जाती है।

सुर्ख़ रंग (पु0) ख़ालिस रंगों में का एक रंग जो खून के मुषाबा होता है और मअ़दनी व निबाताती अष्या से निकाला जाता है। **देखें** ख़ालिस रंग।

सरदई रंग (पु0) सुर्खी माइल ज़र्द रंग। ज़र्द सुर्ख रंग से तैयार किया जाता है। इसमें ज़र्द रंगत ग़ालिब होती है।

सुरमई रंग (पु0) सुर्मे की रंगत से मुषाबा, सफ़ेदी झलकता सियाह रंग।

सुनहरी रंग (पु0) सोने की रंगत का सुर्खी झलकता ज़र्द रंग।

सोस्नी रंग (पु0) हल्का ऊदा रंग जिसमें नीलाहट झलके। सूर्ख और नीले रंग को मिलाकर तैयार किया जाता है। इसी को अ़ब्बासी, नाफ़रनामी और कासनी रंग भी कहते हैं। इन रंगतों में बहुत मामूली सी कमी बेषी होती है और क़रीब–क़रीब मिलते–जुलते होते हैं।

सोहा रंग (पु0) असली सुर्ख़ रंग।

सियाह रंग (पु0) चिराग़ के काजल के मानिन्द बिल्कुल काला रंग। इस रंग का शुमार मुरक्कब रंगों में है।

सेबी रंग (पु0) सुर्खी झलकता हल्का ज़र्द रंग।

सिंदूर (पु0) एक क़िस्म की मअ़दनी शैय् जिससे सुर्ख रंग बनाया और सिंदूरी रंग के नाम से मौसूम किया जाता है।

सेंदूरी रंग (पु0) देखें सिंदूर।

षिँगर्फ़ (स्त्री) एक मअ़दनी शैय् जिससे असली सुर्ख़ रंग बनाया और षिँगर्फ़ी रंग से मौसूम किया जाता है।

षिँगर्फ़ी रंग (पु0) देखें षिँगर्फ़।

शोख़ रंग (पु0) चमकदार, तेज और गहरा रंग।

शहाब (पु0) देखें जेठा रंग और रैनी टपकना।

स़ाबरी रंग (पु0) बहुत हल्का और फीकी रंगत का ज़र्द रंग।

संदली रंग (पु0) मलागीरी। स़ंदल की लकड़ी के रंग के मुषाबा रंग, नारंगी और ऊदे रंग को मिलाकर बनाया जाता है।

सूफ़ियाना रंग (पु0) ऐसी रंगत जिसमें शोखी और चमक न हो।

अ़ब्बासी रंग (पु0) देखें सोस्नी रंग।

उन्नाबी रंग (पु0) स्याही माइल गहरा सुर्ख़ रंग असल सुर्ख़ रंग में गले हुए लोहे का पानी मिलाकर बनाया जाता है और एक हमरंग फल के नाम से मौसूम किया जाता है।

फाख़्तई रंग (पु0) हल्का सुर्मई रंग। फ़ाख़्ता के परों के रंग की मुषाबहत ही इसकी वजह तस्मिया है। ज़र्द सुर्ख और नीले रंग को मिलाकर तैयार किया जाता है।

फ़ाल्सई रंग (पु0) सुर्खी लिए नीला रंग जो इसी रंग के एक फल के नाम से मौसूम किया जाता है।

फीरोज़ी रंग (पु0) सब्ज़ नीला रंग। नीले और सब्ज़ रंग से तैयार किया जाता है और फीरोज़े की रंगत की मुषाबहत उसकी वजह तस्मिया है।

क़िर्मिज़ी रंग (पु0) स्याही माइल गहरा सुर्ख रंग।

काढ़ा (पु0) देखें पाह।

कास्नी रंग (पु0) देखें सोस्नी रंग।

करेज़ी रंग (पु0) किषमिषी रंग, सुर्खीमाइल सियाह रंग सुर्ख और स्याह रंग मिलाकर बनाया जाता है। इसकी स्याही में सुर्ख़ी झलकती है।

क़ाफ़ूरी रंग (पु0) ज़र्दीमाइल सफ़ेद रंग ज़र्द और नीले रंग को मिलाकर बनाया जाता है।

कपासी रंग (पु0) नीलाहट झलकता हुआ ज़र्द रंग।

कट खट (स्त्री) स्याह रंग बनाने के लिये लोहा अनार का छिलका और पुराना गुड़ पानी में भिगोकर तैयार किया हुआ अर्क़।

कच्चा रंग (पु0) वह रंग जो पानी में धुलने से उतर जाये या खराब हो जाये।

किरमदाना (पु0) लाख की क़िस्म के कीड़े जिनसे सुर्ख रंग बनाया जाता और क़िमिर्ज़ी रंग के नाम से मौसूम किया जाता है।

कुसुम (पु0) एक ज़रई पौधे का फूल। विलायती रंगों की ईजाद से पहले इसका रंग बनाया जाता और उससे मुखतलिफ

क़िस्म के मुरक्कब रंग रंगें जाते थे। इस फूल से रंग निकालने के अमल को इस्तिलाह में रैनी चढ़ाना कहते थे। **देखें** रैनी चढ़ाना।

कसीस (पु0) कंदक और लोहे के मुरक्कब से तैयार किया हुआ रंग जो ऊदा पक्का रंग तैयार करने में बतौर लाग इस्तेमाल किया जाता है। इसको बाज़ कारीगर हीरा कसीस कहते हैं।

किष्मिषी रंग (पु0) देखें काकरेज़ी रंग।

कफाई (स्त्री) कपड़े पर यकसाँ रंग चढ़ने के लिए सादे पानी में तर करके निचोड़ लेने का अ़मल। इस अ़मल के कपड़े पर हर जगह यकसाँ रंग चढ़ता है। **करना** के साथ बोला जाता है। नील के हौज़ पर आया हुआ झाग।

कसेरी रंग (पु0) देखें ज़ाफ़रानी रंग।

खटेऊँ (स्त्री) किसी किस्म का खट्टा अर्क़ जो रंग निखरने के लिए बतौर लाग इस्तेमाल किया जाए।

खरिया (स्त्री) देखें दाबी।

खरियाना (क्रिया) कपड़े को नील के मटके में गो़ते देना ताकि नील की रंगत उसमें अच्छी तरह जज़्ब हो जाए।

खिलाना (क्रिया) कुसुम के फूलों से निकाले हुए अर्क़ को सुखाकर सुफूफ़ बनाना।

गाद (स्त्री) नील के हौदे की तलछट। सिर्फ़ तली भी कहते हैं।

गुलाबी रंग (पु0) सफेदीमाइल बहुत हल्का लाल रंग।

गुलेअनारी रंग (पु0) अनार फूल से मुषाबा ज़र्दी झलकता हुआ, आत्षी सुर्ख रंग।

गंदमी रंग (पु0) सुर्खीमाइल भूरा रंगा नारंगी और ऊदे रंग को मिलाकर तैयार किया जाता है।

गंडा (पु0) रंगाई का धब्बा। वह धब्बे जो कपड़े पर यकसाँ रंग न चढ़ने से पड़ जाएँ। इनको गंवारी ज़बान में चक्कर कहते हैं जो चक्कर का बिगड़ा हुआ तलफ़्फुज़ है। तागे की बंदिष जो चुंदरी रंगने के लिए कपड़े पर लगाई जाये। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

गोरा (पु0) नील की टिकिया बनाने का साँचा।

गहरा रंग (पु0) देखें षोख़ रंग।

गेरू (पु0) एक मअ़दनी शैय् जिससे सुर्ख़ रंग बनाया और गेरुआ रंग से मौसूम किया जाता है।

गेरुआ रंग (पु0) देखें गेरू।

गेंदई रंग (पु0) नारंगी रंग से मिलताजुलता रंग। **देखें** नारंजी रंग।

लाजवर्दी रंग (पु0) नील की रंगत का चमकीला रंग।

लावा (पु0) नील के दरख़्त का फूक जो रंग निकलने के बाद बाकी रह जाए।

लाखी रंग (पु0) स्याहीमाइल सुर्ख रंग जिसमें स्याही की झलक ज्याद़ा हो।

लान/लाँग (पु0) नील के पौधों का, गट्ठा जो रंग निकालने को पानी के हौज़ में डाला जाए। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

लैलारी (पु0) नीलगर, रंगरेज।

लैना (पु0) नील खुष्क करने का कारख़ाना।

माज़ऊ (पु0) एक क़िस्म का फल, जिसका अर्क़ स्याह रंग में बतौर लाग दिया जाये।

माषीरंग (पु0) गहरा सब्ज़ रंग जिसमें मैले रंग की झलक ज़्यादा हो। ज़र्द और नीले रंग से तैयार किया जाता है।

मालकुंडा (पु0) माट जल, हौज़। वह हौज़ जिसमें साफ़ और निथरा हुआ नील जमा होता है।

महोसा (पु0) देखें दाबी।

मैलकुंडा (पु0) वह हौज़ जिसमें नील की तलछट या गाद जमा रहे।

मायीं (स्त्री) कसैली अष्या का अर्क़ जो रंग पुख्ता करने के लिए बतौर लाग इस्तेमाल किया जाए।

माया (स्त्री) एक क़िस्म का कलप जो रंगरेज़ कपड़े रंगने में इस्तेमाल करते हैं। **देना** के साथ बोला जाता है।

मथी/मटी (स्त्री) नील का रंग बनाने का खुम, (बड़ा और बैज़वी शक्ल का मटका) राँजन, गोल।

मजीठ (पु0) एक क़िस्म का पौधा जिसकी जड़ से आला क़िस्म का सुर्ख रंग बनाया जाता है, जो बहुत पुख़्ता होता है और मजेठी रंग कहलाता है।

पीत ऐसी कीजिए जैसे मजीठ का रंग।
धोवत से छूटत नाहीं, जाई जिउ के संग।।

मजीठी रंग (पु0) देखें मजेठ, इसको मजीठिया भी कहते है।

मजीठिया (पु0) देखें मजीठी रंग।

मुष्की रंग (पु0) स्याहीमाइल गहरा सुर्ख रंग। मुष्क के रंग की मुषाबहत वजह तस्मिया है।

मलागीरी रंग (पु0) संदली रंग, जोगिया रंगा। अगरी रंग। **देखें** संदली रंग।

मंझी (स्त्री) कुसुम के फूलों का रंग। टपकाने की रैनी। **देखें** रैनी टपकाना।

मोतिया रंग (पु0) मोटी की रंगत से मिलता जुलता सब्ज़ी और ज़र्दी झलकता हुआ सफेद रंग।

मोंगिया रंग (पु0) देखें सब्ज काही रंग।

महाई (स्त्री) नील के हौज़ को बिलोने का अ़मल। **करना** के साथ बोला जाता है।

नारंजी रंग (पु0) नारंगी के छिलके से मुषाबा, ज़र्दी माइल सुर्ख रंग।

नास्पाल (पु0) अनार के छिलके का तैयार किया हुआ अर्क़ जो स्याह रंग बनाने में इस्तेमाल होता है। मजाज़न अनार के छिलकें को कहते है।

नाफरमानी रंग (पु0) देखें सोस्नी रंग।

नितारन/निथारना (पु0) कुसुम के फूलों का टपकाया हुआ अ़र्क़।

नील (पु0) एक क़िस्म के पौधे का अ़र्क़, जिससे नीला रंग तैयार किया जाता है। इसका शुमार खालिस या असली रंगों में है।

नीला रंग (पु0) देखें नील।

नील की कोठी (स्त्री) नील तैयार करने का हौज़।

नीलगर (पु0) नीलारी, लीलारी, नीला रंग तैयार करने और उसमें कपड़ा रंगने वाला कारीगर।

नीलमठना (क्रिया) नील के रंग को एक ख़ास तरकीब से पानी में हल करना।

हल्का रंग (पु0) कम गहरा रंग जिसमें तेज़ी न हो।

हौदा बुझाई (पु0) नील के पौदे को पानी में गलाने का हौज़।

हौदा महाई (पु0) नील के अर्क की तैयारी का चोबचा।

6 पेषा बुनाई (पार्चाबाफ़ी)

अबरा (पु0) झायीं। ख़ाब, अत्लस या साठन की रेषमी सतह जो एकरुख पर बुनावट से जुदा एक हमवार ऊपरी तह मालमू होती है। अबरा और उसका उलटा यानी नीचे का रुख अस्तर कहलाता है। वह कपड़ा जो किसी दोहरी तह या दोतही लिबास की तैयारी में ऊपर के रुख लगाया जाये **देखें** पेषा–ए–सिलाई पृ0।

आबे रवाँ (स्त्री) देखें मलमल।

उपगीटा (पु0) दोदमी, बाजहिंदी, जामदानी, फुलकार। **देखें** चिकन व जामदानी।

अजीजी (पु0) देखें सिराजा।

अड्डा (पु0) देखें पाई।

आर्नी (स्त्री) देखें मलमल। षहर हैदराबाद दकन में लफ़्ज़ आरी भरत कामदानी की सन्अत के लिए बोला जाता है शायद आरनी मलमल पर बादले की कढ़त, जो

शिमाली हिन्द में कामदानी के नाम से मौसूम की जाती है बिगड़कर आरी भरत कहलाने लगी है। **देखें** पेषा कामदानी पृ0।

उरया/ उरयाँ (स्त्री) ताने की भरी हुई गिट्टियाँ जो करगा के सामने एक तख़्ते पर क़तार दरक़तार लगी रहती हैं ताकि कारीगर कपड़ा बुनते वक़्त हस्बे ज़रूरत लम्बा ताना खोल सके। यह अ़मल उस जगह किया जाता है जहाँ पूरा ताना फैलाने की गुजाइष न हो या ताने के खुला रहने में खराब होने का अंदेषा हो।

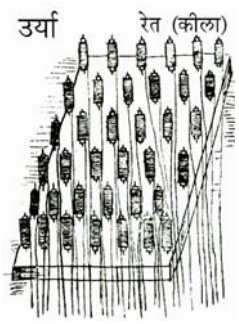

रीता वह कीला या लाट जिसपर उरयाँ चढ़ाई जाती है। नाल के अन्दर की नली भी जिसपर बाना लिपटा होता है उरया और उसका कीला रीता कहलाता है।

असाव्री (स्त्री) देखें तमामी।

अस्तर (पु0) साठन का उलटा रुख़। **देखें** अबरा।

इसरी (स्त्री) कम दराज़ गाढ़े की क़िस्म का कपड़ा। **देखें** गाढ़ा।

अत़लस (स्त्री) साठन, गवरनट, खुदबाफ़, रेषम और सूत का मिलवाँ बुना हुआ चिकनी सतह का कपड़ा। इसकी बुनावट इस तरह की जाती है कि ताने के तार ऊपर के रुख एक हमवार सतह बनाते हैं। इसी वजह से इस कपड़े की ऊपर की सतह झायीं, ख़ाब और अबरा कहलाती है।

फूलदार अतलस वज़अ़ और रंग के एतबार से गुलबदन, मुषज्जर, मषरू पीलाम (फूलाम) और क़नावेज़ के नाम से मौसूम की जाती है। यह कपड़े किसी ज़माने में वस्त एषिया से हिन्दुस्तान में बराहे काबुल आते थे। इसलिए पंजाब, देहली और नवाहे–देहली में यह नाम अब तक मअ़रूफ़ है।

इकहरापना (पु0) देखें पना।

आलाबाली/ऐवलाली (स्त्री) देखें मलमल।

इलाचा/इलाइचा (पु0) रंगीन, धारीदार, ग़फ़ क़िस्म का रेषमी कपड़ा, बुनावट दोनों तरफ़ यकसाँ, धारियाँ क़रीब क़रीब और मुख्तलिफ़ वज़अ की होती है। ज़्यादातर ज़नाना पाजामे बनाने के काम आता है। दकन में अब तक इसी नाम से मषहूर है। शिमालीहिन्द में गुलबदन और गुजरात में बूढल या भूडल कहलाता है। बाज़ मुक़ामात पर कलंदरा और तरहदार भी कहते हैं दकन और गुजरात में इस कपड़े के बुनने के कदीम वज़अ़ के कारख़ाने कहीं कहीं मौजूद है। सूरत, इलाक़ा गुजरात में अच्छी क़िस्म का इलाइचा तैयार होता है। रेषम और सूत का मिलवाँ भी बनाया जाता है। आ़मतौर से ज़मीन सुर्ख और धारियाँ मुख़्तलिफ़ रंग की होती है।

इमरू/हमरू (पु0) ऊनी क़िस्म का रेषमी या रेषम और सूत का मिलवाँ फूल और बुनावट का कपड़ा ख़ालिस ऊनी और ख़ालिस सूती भी होता है। लेकिन फूल रेषम के डाले जाते हैं। सूती निहायत उमदा रेषम के मानिंद साफ बनाए हुए ताने बाने से बुना जाता है जो देखने में रेषमी मालूम हो। दकन के बाज़ मषहूर शहरों में अब तक क़दीम वज़अ़ पर तैयार और उसी नाम से मौसूम किया जाता है।

अमीरी (स्त्री) भागलपुरी रेषम और सूत का मिलवाँ बुना हुआ मोटी क़िस्म का कपड़ा।

इंदी (स्त्री) मामूली रेषम का सुर्ख़ रंग कपड़ा जो हिन्दुओं में बाज़ ख़ास तक़ारीब में इस्तेमाल होता है।

इन्सला (पु0) पल्ला। **देखें** रच।

इंग (पु0) झोना। **देखें** गाढ़ा।

अंगौछा (पु0) अंग+ओछा (हिन्दी) **देखें** तौलिया।

औरंग (पु0) पार्चाबाफ़ी का कारख़ाना (बंगाल)।

ऊरिया (स्त्री) तुली। **देखें** कूँच।

बाबललेट (स्त्री) जाली। गोल और बारीक ख़ानोंदार बुनावट का जालीनुमा कपड़ा। अंग्रेजी लफ़्ज़ बाबिननिट को बदलकर देहली व नवाहे–देहली में बाबललेट और पंजाब में लोड़जाली और कंचललेट कहने लगे है। हैदराबाद दकन में कढ़ी हुई चिकननुमा बाबल लेट कारगा कहलाती है।

बाजहिंदी/ बाझंदी (पु0) देखें जामदानी व चिकन।

बाफ़्ता (पु0) सूती या रेषम और सूत का मिलवाँ, बुना हुआ मोटी क़िस्म का यकरंग सादा कपड़ा। बाफ़्ता असल में मामूली इस्तेमाल के मोटी क़िस्म के कपड़े को कहते थे। जब से विलायती कपड़े का चलन हुआ है यह मतरूक हो गई है और इसके बजाय दूसरी इस्तिलाहात बन गई। **बाफ़्ता** से किसी कदर बेहतर क़िस्म का ख़ासा, महमूदी और पंचम के नाम से मौसूम किया जाता था। इनमें से बाज़ नाम कहीं कहीं मुक़ामी तौर पर बोले जाते हैं लेकिन उनके मफ़हूम में बहुत फर्क़ हो गया है।

बाना (पु0) कपड़े के अरज़ के तार। **देखें** बुनाला।

बाँदनू (स्त्री) देखें चुंदरी।

बजाज़/बज़्ज़ाज़ (पु0) कपड़ों का व्यापार करने वाला दूकानदार।

बजाज़ा/बज्ज़ाज़ा (पु0) कपड़े बेचने वालों का बाज़ार। (कठराया कडा)।

बदन ख़ास (पु0) देखें सुखबदन।

बर (पु0) पाट, अरज़। **देखें** पना।

बस्ता (पु0) देखें बेठन।

बस्ताबंद (पु0) देसावर जाने वाले कपड़े के थानो की गठरियाँ, (बंडल) बांधने वाला मज़दूर।

बुगचा (पु0) पोट, (पोटला) बोग़बंद। **देखें** गट्ठर।

बुग़ची/बुग़चिया (स्त्री) देखें गठरी।

बिगरा/बिगारा (पु0) देखें करगा।

बुलबुले चष्म (पु0) मुख़्तलिफ़ किस्म के तानेबाने से सादा या फूलदार बुना हुआ रेषमीं कपड़ा। विलायती कपड़े के रवाज से पहले मष्हदी के नाम से मषहूर था अब शिमाली हिन्द में बड़े बड़े शहरों में क़नावेज़ के नाम से मौसूम किया जाता है। **देखें** कनावेज़।

बलैंडा (पु0) नित्ता नर्द। **देखें** तुर।

बुनाला (पु0) भर्ती, बाना। कपड़े की बुनावट के पने (अर्ज़) के तार जो बुनाई के अ़मल की तकमील करते हैं। हर कपड़े में एक लम्बान के तार होते हैं और एक चौड़ान के, पहली किस्म को इस्तिलाह में ताना और दूसरी क़िस्म का बाना कहते हैं। बाना, बुनाई के काम की तकमील करता है और ताने के तारो में भरा जाता है। इसलिए बुनाई में आने से क़ब्ल कारीगर इसको कहीं बुनाला, कहीं भर्ती के नाम से मौसूम करते है।

तुन्ना (क्रिया) किसी चीज़ के तारों को तूलमे और अर्ज़मे बाहम एक दूसरे के साथ गूथना। इस तरह कि तूल और अर्ज़ के तार एकजान होकर एक सतह बना दें। **देखें** बुनाई।

बिनाई, बुनावट (स्त्री) कपड़ा बुनने का अ़मल। **देखें** बुन्ना।

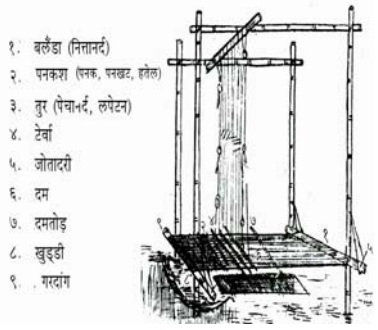

प्रयोग विलायती कपड़े की

बुनाई साफ़ होती है। दरी की बुनावट अच्छी नही है। कपड़ा बुनने की उजरत। नेवाड़ की बुनाई दो आना सेर होती है। दरी की बुनावट वज़न से दी जाती है। **पतील बुनाई** झिरझिरी बुनावट यानी ऐसी बुनाई जिसमें ताने और बाने के तार बिल्कुल बराबर बराबर न हो और उनके दरमियान जगह रहे। **संगीन बुनाई** ग़फ़ बुनाई, ठुकी हुई यानी तार से तार मिली हुई बुनाई जिसमें से आरपार दिखाई न दे।

बुन्नी/बोनी (स्त्री) (बंगाली) सुर्ख़ या सियाह कोर की औसत दर्जे की मलमल जो अमूमन साड़ी के लिए तैयार की जाती है।

बू (पु0) देखें रच।

बूडल/भूडल (पु0) देखें इलाचा, (मुषज्जर, गुलबदन) **देखें** अत्लस।

बोग़बंद (पु0) देखें गट्ठर।

बई (स्त्री) फन्नी, टेम्पल। अंग्रेज़ी बाने की ठुकाई का कंघीनुमा आलाः जिसके हरएक खाने में ताने का एक एक तार पिरोया जाता है और बुनाई के हर अमल पर उस से बाने का तार ठोका जाता है।

बेठन (स्त्री) बस्ता, बस्तनी। कपड़े के थान बाँधने का कपड़ा, गठरी बाँधने का कपड़ा।

बैंडी (स्त्री) अड्डा, सराड़ा वग़ैरा। **देखें** पाई।

बेओड़ (स्त्री) देखें कन्नी।

भाँज (स्त्री) बुनाई के लिए तैयार किया हुआ ताना। ताने में शुरु का किसी क़दर मोटा पौर मज़बूत बटा हुआ तार जो बतौर कन्नी डाला जाता है। **डालना** के साथ बोला जाता है। बटा हुआ तागा। **देखें** पेषा–ए–कताई पृ0।

भर्ती (स्त्री) देखें बुनाला।

भरनी (स्त्री) धड़क, **देखें** नाल।

पान (स्त्री) ताना तैयार करने के लिए तारो की कूँच से मंझाई जो माँढ़ी देकर की जाती है। इसलिए इस अ़मल का माँढी करना भी कहते हैं। **करना** के साथ बोला जाता है। **देखें** पेषा–ए–कताई पृ0। **प्रयोग** ताने की पान अच्छी नहीं हुई इसलिए बल खाता है।

पावडी/पावड़ियाँ (स्त्री) तलपकड़। पौन, सार **देखें** रच।

पाई (स्त्री) अड्डा, टिकटी, सराड़ा, बैंडी पूरिया, कर्रा, चोबी कैचियाँ जिनपर ताना फैलाकर साफ किया जाता है। **देखें** ताई।

पतोला (पु0) दूल्हा के लिबास का रेषमीं कपड़ा। (गुजरात)।

पतील बुनाई (स्त्री) देखें बुनाई, निषान।

पतील कपड़ा (पु0) झिरझिरी बुनावट का पतला कपड़ा।

पट्टा (पु0) छोटे पने के बच्चों के बाँधने की धोती, सादी फूलदार, सूती और रेषमीं हर तरह की होती है।

पट्टी (स्त्री) देखें तानी।

पुर्ज़ (पु0/स्त्री) कचबले तागे का रूआँ जो बुनाई में कपड़े की सतह पर उभरा हुआ दिखाई दे। जब रूआँ ज्यादा गुथा हुआ और साँट या गिरह की शक्ल में हो तो फुटकी कहलाता है। **पड़ना, आना** के साथ बोला जाता है।

पक्की चिकन (पु0) देखें जाम्दानी।

पल्ला (पु0) इंसला। **देखें** रच।

पना (पु0) आर, अर्ज़, बर। कपड़े के थान की चौड़ान जो ज़ुरूरत और कपड़े की नौइय्यत के लेहाज़ से छोटी बड़ी रखी जाती है। एक ग़ज तक के चौड़े पने को इस्तिलाह में एकहरा या इकपटा पना कहते हैं और एक गज़ से ज़्यादा दो गज़ तक दोहरा पना या दोपटा कहलाता है। **प्रयोग** गर्मियों के मौसम में बाज़ लोग एक बरा पाजामा पहनते हैं।

कहावत *सिफ़्त भी हो, मुफ़्त भी हो और पनेदार भी हो।*

पंचम (पु0) देखें बाफ़्ता।

पनक (स्त्री) पनकष, पनखट, हतेल। **देखें** पनकष।

पंकष/पनकष (स्त्री व पु0) पना+कष, पनखट, हतील। बुनाई के वक्त कपड़े के पने या पाट को खोले और ताने रखने वाली बाँस वगैरा की पतली छड़ जिसके सिरे थान की बुनाई के वक्त पने के दोनो कन्नियों में फंसा देते हैं ताकि कपड़े का पाट तना रहे। बाज़ कारीगर पंकष को सिला भी कहते है लेकिन सिला एक दूसरी चीज़ है जिसकी तषरीह उसके तहत की गई है। **टेरवा** पंकष के सर्द के आहनी आँकड़े या आर जो कन्नी में लटका दी जाती है। **देखें** बुनाई।

पनखट (पु0) पनक, हतेल। **देखें** पंकष।

पोत (स्त्री) ताने या बाने के तारों का मजमूई इस्तिलाही नाम। **प्रयोग** थान पोत यकसाँ साफ और अच्छी हैं।

पोट/पोटला (पु0) बुग़चा। **देखें** गट्ठर।

पोटली/पोटलियाँ (स्त्री) बुग़ची। **देखें** गठरी।

पूरिया (स्त्री) अढ्डा, टिकट्टी, सराड़ा वगैरा। **देखें** पाई।

पोनसार/पाऊँसार (स्त्री) तलपकड़, पावड़ी (पावड़ियाँ)। **देखें** पावड़ी।

पीताम्बरी/पीतम्बर (स्त्री) सिलेदार, रेषमीं हाषिए और पल्लू की साड़ी जो साड़ी के असल रंग से मुख्तलिफ़ रंग के होते है। असल में ज़र्द रंग की रेषमीं साड़ी इस्तिलाह में पीताम्बर कहलाती हैं और हिन्दुओ में मुतबर्रिक समझी जाती है। बाज़ ख़ास दावतों में ब्राह्मन उसको बाँध कर खाना खाते है। मुतबर्रिक रेषमीं कपड़ा। हर क़िस्म का रेषम। देखें पेषा सिलाई, बटाई पृ0। **प्रयोग**

एक सूरत नज़र आई पीताम्बर पहने।
मुकुट लगाए श्याम बरन, मुखमुर्ली धरे।।
(तज़किरा–ए–ग़ौसिया पे0 382)

पैथ्नी (स्त्री) ईव्ले का तैयार किया हुआ साड़ी का रेषमीं कपड़ा। **ईव्ला** (दकन) 1155 ई0 में हुकूमत की तरफ़ से रेषमीं कपड़ा तैयार करने के कारख़ाने क़ायम करने का इजारा चंद माहिरीने कार को दिया गया था जहाँ गुजरात के कारीगर काम करते थे। पेष्वा के अहेद तक यह इजारा क़ायम रहा, किसी दूसरे फ़रीक़ को वहाँ काम करने की इजाज़त न थी 1868 ई0 में अंग्रेज़ी हुकूमत में इस इजारे का ख़ात्मा कर दिया।

पेचानर्द (पु0) देखें तुर।

पीकिया (पु0) ताने के तारों के दरमियान पिरोई हुई खपच्चियों का सरबंद यानी वह जोड़ी जो खपच्चियों को बराबर बराबर रखने के लिए उनके सिरों में बाँध दी जाती है, **देखें** ताना।

पीलाम/फूलाम (पु0) देखें अतलस।

फुटकी (स्त्री) देखें पुर्ज़।

फुलाल (पु0) फूलदार बुनावट का कपड़ा।

फलवा/फलवे (पु0) सरन, सरबंद, हर क़िस्म के कपड़ो की सरगाहों के बग़ैर बुने छोड़े हुए ताने के तार जैसे तौलियों, चादरों, कम्बलों और दरियों वगैरा के होते है। मामूली कपड़े के फलवे जो बग़ैर सरबाँधे असली हालत में छोड़ दिए जाते है। सरन या झालर कहलाते हैं। **छोड़ना, रखना** के साथ बोला जाता है। **सरफुन्द** वह ड्योढ़ी गाँठ जो फल्वों को बटकर उनके सिरों पर लगा दी जाए।

फन्नी (स्त्री) देखें बई।

ताष (पु0) देखें ज़रबफ़्त।

मिसरअ़ *क्या बुगचे ताष मुषज्जर के,*
क्या तख्ते शाल दुषालों के (नज़ीर)

ताषबाफ़ (पु0) ज़रीतार और रेषम का कपड़ा बुनने वाला कारीगर।

ताफ्ता (पु0) दराई, सूत और रेषम का मिला हुआ, धारीदार या बूटी और धारीदार कपड़ा वज़अ में क़नावेज़ से मिलता है। लफ्ज़ ताफ़्ता अब मतरूक है। इसके बजाय शिमाली हिन्द में इस क़िस्म के कपड़े को क़नावीज़ और दकन में हिमरू, मषरू इलाइचा वग़ैरा नामों से मौसूम किया जाता है। हिन्दू चीव्ली कहते है यानी चोली सीनाबन्द, अंगिया बनाने का कपड़ा।

ताना (पु0) कपड़े के तूल (लम्बान) के तार जिन पर बुनाई के अ़मल से कपड़े की सूरत बनती है। इन तारों की तादाद और लम्बान हस्बे ज़ुरूरत रक्खी जाती है। **ृतन्ना** कपड़ा बुनने के लिए ताना तैयार करना और माँठ कर साफ़ करना। **ृनतना, अरना** ताने के तारों को फन्नी और गुल्ले के ख़ानो में सारना यानी पिरोना, भरना।

तानी (स्त्री) ताना तन्ने का अड्डा। बंगाल में पट्टी और कूटा कहते हैं। **देखें** ताना। **ृतन्ना** ताना बनाने को तानी पर सूत की अट्टियों को खोलना।

तत्ता/टट्टा (पु0) देखें थूमिया और सानिया। पेषा–ए–कताई पृ0।

तुर/तूर (पु0) पेचा नर्द, मोती काठी (बंगाली) लपेटन, करगे में जुलाहे के हाथ तले लगा हुआ बेलन जिसपर वह तैयारषुदा यानी बुना हुआ कपड़ा लपेटता जाता है। **देखें** बुनाई। **बलेंडा** नित्ता नर्द (बंगाली) तुरले मुकाबिल ताना लपेटने की बल्ली या बेलन जिसपर पूरा ताना लिपटा रहता है और बुनाई के लिए हस्बे–ज़ुरूरत, खोल लिया जाता है। **गरदाँग** तुर को घुमाने का आहनी या चोबी छोटा डंडा जो बतौर हत्थी इसमे लगा रहता है। या बवक़ते ज़ुरूरत लगा लिया जाता है। **फेरना, डालना** के साथ बोला जाता है।

जोतादरी रस्सी का फंदा या हल्क़ा जिसमें तुर के सिरे टिके रहते हैं। शायद लफ्ज़ जोत बिगड़कर जोतादरी बन गया है।

तरंदाम (स्त्री) तरह+अंदाम। किसी क़दर मोटे तारों की चिकनी और साफ़ क़िस्म की कलपदार मलमल लफ्ज़ तरह बाज चीजों की चिकनी और ऊपरी सतह लिए कारीगरो में बतौर इस्तिलाह इस्तेमाल किया जाता है **जैसे** तरहदार तीली। तरंदाम का लफ्ज़ अब मतरूक है इसकी जगह शिमाली हिन्द में इस क़िस्म के या उससे मिलते जुलते कपड़े तनजेब, सुखबदन, नैनसुख और तनसुख वग़ैरा अल्फ़ाज़ बोले जाते हैं। तनज़ेब, झिरझिरी और बाक़ी तीनो किस्में ग़फ़ बुनावट की होती है। **देखें** पेषा चिलमनसाजी पृ0।

तकरी/तकली (स्त्री) जोंक, तिलक (राजपूताना) कलपदार और चिकना घुटा हुआ गाड़े की क़िस्म का मुख्तलिफ़ वज़अ़ का कपड़ा जो राजपूताना में लहंगे, चादर और पलंगपोष वग़ैरा बनाने के काम आता है।

तलपकड़ (स्त्री) देखें पावड़ी।

तुली (स्त्री) औरिया (बंगाली)। **देखें** कूंच।

तमामी (स्त्री) आसावरी। एक क़िस्म का रेषमी कपड़ा जिसकी बुनावट में सुनहरी या रूपहली बाद्ले का चारख़ाना बुना होता है। अब ज़री पार्चा के नाम से मौसूम किया जाता है। बाज़ मुक़ाम पर ख़ास क़िस्म के सूती कपड़े को कहते है।

तनाई (स्त्री) ताना तैयार करने और माढ़े की उजरत।

तन्ती (पु0) ताना तैयार करने वाला मज़दूर।

तनज़ेब (स्त्री) दूसरे दर्जे की बारीक और कलपदार मलमल। **देखें** तरंदाम।

तौलिया (पु0) अंगौछा, खेस, मोटी क़िस्म और झूनी बुनावट का जल्द पानी जज़्ब

करने वाला कपड़ा गीलाबदन पोछने और गुस्लख़ानों में इस्तेमाल के लिए मुख़्तलिफ़ वज़अ़ और नपत का तैयार किया जाता है। उमदा क़िस्म में चौकड़ीदार और रोएंदार होता है। दकन में तुवाल कहते है। यह अंग्रेज़ी ज़बान का लफ्ज़ है जो कसरते– इस्तेमाल से उर्दू बन गया है।

तैरी (स्त्री) देखें नाल।

थान (पु0) मुकर्रिरा और मुरव्विजा तूल व अर्ज़ का एक हाथ यानी पूरी दिहाँगी का तैयार किया हुआ कपड़ा जुरूरत और नौईय्यत के लिहाज़ से थान का तूल व अर्ज़ मुख़्तलिफ़ होता है मस्लन लट्ठे का थान, मलमल का थान, मख़मल का थान, ज़रबफ़्त का थान वगैरा। रंगे हुए सालिम चमड़े को भी इस्तिलाहन थान कहते हैं। **सरगाह** थान के शुरु और आख़िर का हर सिरा जो बुनाई शुरू और खत्म होने की हद को ज़ाहिर करता है। **प्रयोग** थान की नाप सरगाह छोड़कर की जाती है।

टिकटी (स्त्री) अड्डा, सराड़ा, पोड़ना, कर्रा। **देखें** पाई।

टोल (पु0) सिलाईदार बुनावट का कपड़ा जिसकी बुनाई में बाना, ताने में एक तार, बीच में डाला जाता है जो बुनाले में तिरछापन पैदा कर देता है। अंग्रेज़ी लफ़्ज टुइल कसरते–इस्तेमाल से उर्दू में टूल मषहूर हो गया है जो मुज़कूर–उस–सदर किस्म के कपड़े के लिए बोला जाता है।

टेरवा (पु0) देखें पनकष व बुनाई।

ठुकी हुई बुनाई (स्त्री) संगीन बुनाई। **देखें** बुनाई।

ठाँग (स्त्री) फन्नी (बई) से बाने के तार को बराबर करने के लिए फन्नी की हर थपक जो बुनते वक़्त बुनाले के हर फेर पर लगाई जाती हैं जिससे बुनाई का अ़मल सही रहता है। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

जाली (स्त्री) देखें बाबुल, लेट।

जामदानी (स्त्री) दूदमी, बाजहिंदी (बाझिंदी) **सलून** क्रेब (अंग्रेजी) आला क़िस्म की फूलदार मलमल। फूल हमरंग और बुनावट में डाला जाता है। किसी ज़माने में ढ़ाका की ख़ास सन्अत थी अब भी क़दीम वज़अ़ के दो चार काख़ाने वहाँ जारी हैं जो मुक़ामी उमरा के लिए जाम्दानी तैयार करते हैं विलायती माल ने उसकी माँग ख़तम कर दी है और उसके बनाने वाले भी नापैद हो रहे हैं। अब आम तौर से जाम्दानी के बजाय चिकन का लफ़्ज बोला जाता है। जाम्दानी का लफ़्ज़ मुक़ामी बन गया है। चिकन और जाम्दानी के मफ़हूम में यह फ़र्क है कि जाम्दानी की बूटी बुनावट में बाने के साथ मिली रहती है और चिकन की बूटी उभरवाँ होती है ख़्वाह मषीन की बनी हो या हाथ की कढ़ी हुई। **कच्ची चिकन** जाम्दानी को आम तौर से कच्ची चिकन या ढ़ाके और कलकत्ता की चिकन के नाम से मौसूम किया जाता है जो यूरोप से आती है। **पक्की चिकन** उभरवाँ और बाने से इलाहिदा कढ़ी हुई बूटी की चिकन को कच्ची चिकन या जाम्दानी के मफहूम में इम्तियाज़ करने के लिए पक्की चिकन कहते है।

जामावर (पु0) मुषज्जर की क़िस्म का अदना फूलदार कपड़ा। कषमीर में निहायत उम्दा किस्म का बुना जाता है और हैदराबाद (दकन) में अब तक इसका चलन है। **देखें** मुषज्जर।

जुत्ती/जुदती (स्त्री) देखें रच।

जुलाहा (पु0) पार्चाबाफ़, नूरबाफ़। कपड़ा बुनने वाला कारीगर, शिमाली हिन्द में हिन्दू जुलाहे को कोली और मुसलमान जुलाहे को मोमिन कहते हैं वजह तस्मिया यह बयान की जाती है कि जब ठगी, डकैती का इंसदाद हुआ और ठगों के

गिरोह इधर उधर मुन्तषिर हुए तो उनमे का एक क़बीला अलीगढ़ (जो कोल के नाम से मषहूर था) और उसके नवाह में आकर बस गया और बसर औक़ात के लिए पार्चाबाफी का पेषा जो उस ज़माने में चालू था। अख़्तियार कर लिया। कोल में बस जाने की वजह से यह क़बीला अपने गिरोह के दूसरे क़बीलों में कोली के नाम से मषहूर हो गया जो बाद में एक मुस्तक़िल ज़ात बन गई और शिमाली हिन्द में लफ़्ज़ कोली अद्‌ना ज़ात हिन्दू जुलाहों के लिए मअ़रूफ़ हो गया। उनके मुक़ाबिल मुसलमान जुलाहे मोमिन के नाम से मौसूम किए जाने लगे। आगरा अलीगढ़, बुलंदषहर और उनके नवाह में पार्चाबाफ़ो के यह दो गिरोह कोली जुलाहे और मोमिन जुलाहे के नाम से मषहूर है। हिन्दू पार्चाबाफ़ो में एक दूसरा गिरोह जोगी कहलाता है उसकी हक़ीकत भी कोलियो जैसी है।

जगल ख़ासा (पु0) देखें नैनसुख।

जूआ (पु0) सराई, झड़बत्ती। ताने के तारो में थोडे, थोड़े फ़ासले पर पिरोई हुई बाँस की खपच्ची या खपच्चियाँ जो ताने के ऊपरनीचे के तारो को इलाहिदा रखती है और आपस में उलझने नहीं देती। **डालना** के साथ बोला जाता है। **देखें** ताना।

जोतादरी (स्त्री) देखें तुर बुनाई।

जोक (स्त्री) देखें तकरी।

जोगी (पु0) देखें जुलाहा।

जहाज़ी मलमल (स्त्री) देखें मलमल।

झारनी (स्त्री) तुली, ओरिया। **देखें** कूंच।

झालर (स्त्री) देखें फलवा।

झायीं (स्त्री) ख़ाब, देखें अबरा और अत्लस।

झिरझिरी बुनाई (स्त्री) पतील बुनाई। **देखें** बुनाई।

झड़बत्ती (स्त्री) सराई, **देखें** जूआ, लफ़्ज़ छड़बत्ती को बिगाड़कर झड़बत्ती कहते हैं।

झिल्लर/झाला (पु0) (स्त्री) दो बुनावटों के दरमियान हस्बे–ज़ुरूरत, लम्बा बग़ैर बुना छोड़ा हुआ हिस्सा जो दो बुने हुए हिस्सो के दरमियान हदबंदी का काम दे और बवक्ते ज़ुरूरत उस बग़ैर बुने हिस्से को बीच में से कतर कर दो टुकड़े अलाहिदा कर लिए जाए। इस सूरत में सिरे के तार फलवा या झालर कहलाते हैं। लफ़्ज झिल्लर झालर का इस्मे तसग़ीर है। **छोड़ना** के साथ बोला जाता है। **देखें** फलवा झाला।

झिलमिली (स्त्री) बारीक क़िस्म का ख़ानेदार और खुली बुनावट का रेषमीं या सूती कपड़ा ख़ाने आमतौर से छोटे छोटे मुख़्तलिफ़ वज़अ़ और शक्लों की बुनावट में बने होते हैं। इस क़िस्म के कपड़े को अंग्रेजी में गाज़ कहते हैं और दूकानदार गाज बोलते हैं।

झोना (पु0) देखें गाढ़ा।

चादर (पु0) दो, सवा दो गज़ लम्बा और सवा गज़ या डेढ़ गज़ चौड़ा बुना हुआ कपड़ा जो बिछाने या ओढ़ने की ज़ुरूरत के लिए, ऊनी, सूती, रेषमी हर क़िस्म और वज़अ़ का तैयार किया जाता है।

चादरा (पु0) चादर की क़िस्म का मगर लम्बान और चौड़ान में उससे किसी क़दर बड़ा बुना हुआ कपड़ा अमूमन तीन, सवा तीन गज़ लम्बा और डेढ़ पौने दो गज़ चौड़ा तैयार किया जाता है।

चारख़ाना (पु0) देखें डोरिया।

चिड़िया (पु0) देखें नाचनी।

चिक (पु0) अंग्रेजी ज़बान का लफ़्ज़ है। एक ख़ास किस्म के रंगीन, धारीदार और चारख़ानेदार कपड़े के लिए बोला जाता है। क़मीज़, कोट और पतलून बनाने के काम आता है। मदरास के इलाक़े में

मुख्तलिफ़ क़िस्म और वज़अ़ का बहुत उमदा विलायती नमूने का तैयार हो रहा है। कपड़े की आम मक़बूलियत की वजह इसका नाम ज़बानज़द आम हो गया है। चिक की तर्ज़ का मामूली क़िस्म और वज़अ़ का कपड़ा उर्दू में चूड़या और सूसी के नाम से मौसूम किया जाता है जो ज़नाना पाजामों और दूसरी मामूली चीज़े बनाने के काम आता है।

चकला (पु0) दोग़ला, रेषम और सूत का मिलवाँ छोटे पन्ने और मोटी किस्म की बुनावट का मामूली वज़अ़ का कपड़ा। हिन्दुओ में किसी ख़ास पूजा के वक़्त इस्तेमाल किया जाता है।

चिकन (स्त्री) उपकटिया, फुलकार, जाम्दानी, उभरवाँ, बेल, बूटी कढ़ी हुई मलमल। कढ़त हाथ की हो या मषीन की बुनाले के अलाहिदा और उभरवाँ हो तो चिकन कहलाती है। तफ़्सील के लिए **देखें** जाम्दानी।

चंदकाला/चंदकोरा (पु0) चंद्रकाना (बंगाली) साड़ी का कोरदार सूती कपड़ा, कोर तूल में दोनो तरफ, इंच डेढ़ इंच चौड़ी आम तौर से सुर्ख या स्याह रंग की होती है और कपड़ा मलमल की क़िस्म का होता है।

चंद्रकाना (पु0) चंद्रकाला।

चुन्ज़ (स्त्री) छत्ती, वासीजा, **देखें** चूड़िया।

चोचला (पु0) देखें रच।

चूड़िया (पु0) चुन्ज़ छत्ती, वासीजा, सूसी। चिक की वज़अ़ का देषी साख़्त का मामूली और पतील क़िस्म का कपड़ा। पंजाब, आगरा और अवध के इलाके में चूड़िया और सूसी के नाम से मषहूर है। अव्वल के तीन नाम मुक़ामी और आमतौर से ग़ैर मअरूफ़ है। **देखें** चक।

चिहिलवारी (स्त्री) दकन के बाज़ बड़े शहरों के बजाज लट्ठे और इसी क़िस्म के दूसरे कपड़े को जिसका थान अमूमन चालीस गज़ होता है इस्तिलाह में चिहिलवारी कहते हैं जो रोज़मर्रा में मामूली क़िस्म के मोटे, सादे और सफ़ेद कपड़े के लिए, जो शिमाली हिन्द में लट्ठा कहलाता है, बोला जाता है।

चीरा (पु0) मारवाड़ी हिन्दुओं की पगड़ियों के लिए तैयार किया हुआ कपड़ा। इसका थान चालीस गज़ से लेकर पचास साठ गज़ तक तवील (लम्बा) तीन या चार गिरह अरीज़ (चौड़ा) और अमूमन सुर्ख़ रंग का होता है (पक्के सुर्ख रंग के तागे को चीरू कहते हैं **देखें**–पेषा–ए–कताई पृ0।

चीव्ली (स्त्री) देखें ताफ़्ता।

छालटीन (स्त्री) देखें लट्ठा।

छाँटी (स्त्री) देखें खार्वा।

छत्ती (स्त्री) देखें चूड़िया।

छूचा/छूछा (पु0) गुल्ला, मोतीकाटा। **देखें** रच (रछ)।

ख़ाब (पु0) झायीं। **देखें** अबरा और अत्लस।

ख़ासा (पु0) सहन। **देखें** बाफ़्ता।

मिसरअ़ *घर बार, अटारी चौबारे।*
क्या ख़ासा, नैनसुख और मलमल (नज़ीर)।

इस नाम के क़दीम और ज़दीद मफ़हूम में फ़र्क हो गया है। पहला मफ़हूम मलमल की क़िस्म का उमरा के इस्तेमाल के लायक कपड़ा था अब मोटी और झिरझिरी बुनावट की कोरी मलमल को मुक़ामी बोलियों में कहीं ख़ासा और कहीं सेहन कहते हैं।

खंजरी (स्त्री) ख़ालिस रेषम या रेषम और सूत का मिलवाँ बुना हुआ किसी क़दर खुरदुरा और सख़्त क़िस्म का कपड़ा।

खुदबाफ (स्त्री/पु0) देखें अत्लस।

दाराई (स्त्री) देखें दरियाई।

दासीचा (पु0) रेषमीं चूडिया या सूसी। **देखें** चूडिया और चिक।

दाँगी (स्त्री) सिला। **देखें** दमतोड़।

दबीज़ कपड़ा (पु0) सिफ़्त कपड़ा ठुकी हुई बुनाई का मज़बूत और पुरकार क़िस्म का कपड़ा जिसमें से पार की चीज़ न दिखाई दे।

दरियाई (स्त्री) दाराई (फारसी) दीब (अरबी) लाही। गुलबदन की तरह धारीदार या सादा दबीज़ क़िस्म का रेषमी कपड़ा। सादा और खुदरंग मरदाना पसंद। रंगीन और धारीदार ज़नाना पसंद कहलाता है। ज़र्द ज़मीन और सुर्ख़ धारी का आमतौर से ज़्यादा खुष वज़अ़ समझा जाता है। लफ़्ज़ दाराई का उर्दू तलफ़्फुज़ दरियाई हो गया है।

दम (पु0) बुनाई के वक्त ताने को तारों का ऊपर नीचे का हर हिस्सा जो बुनाई में बारी–बारी तले ऊपर होता रहता है। इस्तिलाह में दम कहलाता है। दमतोड़, दाँगी, सिला, दम की दौड को महदूद रखने वाली बाँस की खपच्ची जो बुनाई के अ़मल से थोड़े फासले पर ताने के दोनों दमों यानी ऊपर नीचे के हिस्से के बीच में डली रहती है। **देखें** बुनाई।

दमतोड़ (स्त्री) दाँगी, सिला। **देखें** बुनाई।

दंगरी/दंगारी (स्त्री) काथी सलीम बरी, खेमे बनाने का मोटी किस्म का कपड़ा नवाहे मुम्बई में मुक़ामी तौर पर दंगरी या ढंगरी, षिमाली हिन्द में गाढ़ा और दकन में खादी कहलाता है। काथी और सलीम बरी नाम अब ग़ैर मअ़रूफ़ है।

दोब्रा/दोब्ड़ा (पु0) दुहर, दोपटा, दोसूती (दो+बर) दोहरे पने का कपड़ा जिसका अरज़ डेढ़ गज़ या इससे ज़्यादा हो। यूरोप में मोटे और घटिया क़िस्म के गाढ़े के लिए जिसके दो पाट जोड़कर चादर या चादरा बना लिया जाए, बोला जाता है। पंजाब में दुहर और दोसूती कहते हैं जो दोब्रे की निस्बत अच्छी क़िस्म का होता है। दुहर और दोसूती से मुराद दोहरे पने की चादर या चादरा है।

दोपटा/दूपट्टा (पु0) देखें दोब्रा।

दोरुख़ा (पु0) देखें धूपछाँव।

दोसूती (स्त्री) देखें दोब्रा।

दोग़ला (पु0) देखें चक्ला।

दुहर (स्त्री) देखें दोब्रा।

दुहरापना (पु0) देखें पना।

दीबा (पु0) देखें दरियाई।

धडकी (स्त्री) देखें माकू (मक्कू)। **देखें** नाल।

धूपछाँव (स्त्री) दोरुख़ा। मोरकंठी, दो मुख़्तलिफ़ रंगो के ताने और बाने से बुना हुआ कपड़ा जिसकी सतह पर रोषनी में दो रंगी मौज दिखाई दे। आमतौर से सुर्ख़ और सब्ज़ ताने बाने का पसंद किया जाता है।

धोतर (स्त्री) देखें गाढ़ा।

डक (पु0) देखें ज़ीन।

डोरिया (पु0) ऐसी बुनावट का कपड़ा जिसके ताने में हमरंग या किसी दूसरे रंग का भाँजवाँ डोरा हस्बे–ख़्वाहिष कमोबेष फ़ासले पर डाला गया हो। जिससे कपड़े की सतह पर बारीक धारियाँ बनी हुई मालूम हों। **चारखाना** वह डोरिया जिसके बुनाले में भी ताने के से भाँजवाँ डोरे इस तरह डाले गयें हों कि कपड़े की सतह पर धारियों के चौपहल निषान दिखाई दे।

डूपट्टा (पु0) षिमाली हिन्द में औरतें रुपट्टे को डुपट्टा बोलतीं हैं और ओढ़नी के माने मुराद लेतीं है। **देखें** दोपटा और दोब्रा।

राजामंदरी (स्त्री) मद्रास के इलाक़े के एक मुक़ाम का नाम जहाँ का बुना हुआ मोटी किस्म और संगीन बुनावट का कपड़ा किसी ज़माने में हिन्दुस्तान में राजा मंदरी

और यूरोप में कालीको के नाम से मषहूर था।

रच/रछ (स्त्री) राछा, रछा, गुल्ला, मोतीकाटा, छूचा बुनाई के अ़मल के लिए ताने के दोनों हिस्सों कों ऊपरतले हरकत देने वाला बुनाई का एक आलाः जो हस्बे–जुरूरत छोटा बड़ा बाँस की बारीक तीलियों, तार के टुकड़ों या तागे की लड़ों से बारीक दरजों की बाड़ की शक्ल में तैयार किया जाता है। उसकी हर दर्ज़ में ताने का एक–एक तार इस तरह सारा जाता है कि पूरा ताना दो हिस्सों में बँटकर ऊपर तले दो दम बन जाते हैं और रच के ऊपर नीचे करने से बाने की दोनों दम भी बारी–बारी ऊपर नीचे होते हैं जिनके दरमियान हर हरकत की तब्दीली पर बुनाला डाला जाता है, ज़रबाफ़ी यानी ज़री गोटे की बुनाई का अ़मल भी इसी तरह होता है। गोटे किनारी की चौड़ान चूँकि बहुत छोटी होती है इसलिये उसके रच छोटे और बारीक डोरे से बहुत सुबुक बनाये जाते हैं और ज़रबाफ़ों की इस्तिलाह में गुल्ले कहलाते हैं। **इंसला, (पल्ला)** रच के ऊपर के सिरे की चोबी पट्टी या ऊपर का हिस्सा। **बू** रच की दरजें या ख़ाने जिनमें ताने के तार भरे जाते हैं। **पाउड़ियाँ** (पाँवसार) डोरी के बंद जो रच के निचले हिस्से में बँधे लटकते हैं जिनको कारीगर पैर के अंगूठे के दरमियान पकडकर रच को हरकत देता है। **जुत्ती** (जुदती) रच के नीचे के रूख़ की चोबी पट्टी जो इंसला के मुक़ाबिल होती है और इन दोनों के दरमियान ताने के तार भरने के लिये खाना बनाये जाते हैं। **ज़ीख़** (ज़ीक़) रच के बीच में ताने के तारों के उतार–चढ़ाव की रोक या हदबंदी करने वाली आड़। **लट** रच की लड़ें या डोरियाँ जिनमें ताने के तार भरे जाते हैं। **नाच्नी** (नचनी) चोचला चिड़िया रच लटकाने की कमानी या तराजू की डंडी के मानिंद लटकी हुई लकड़ी के हर एक सिरे में रच की डोरियाँ बँधी होती हैं जिनके सिरे रच की हरकत के साथ के नीचे–ऊपर होते रहते हैं।

रिसान (स्त्री) ताने की पान करने यानी माँढी लगाकर साफ करने का अमल। **करना** रिसान लफ़्ज़ रस से है और जुलाहों की इस्तिलाह में चावल की पीच या उसी क़िस्म की पतली लेसदार चीज को कहते हैं जो ताने के तारों को चिकना और करारा बनाये। **प्रयोग़** ताने की रिसान अच्छी नहीं हुई तार में फोंसड़े दिखाई देते हैं।

रीता (पु0) देखें उरया।

रेषमीना (पु0) ख़ालिस रेषम का बुना हुआ कपड़ा।

ज़रबफ़्त (स्त्री) ज़रबफ़्त असल में बादले के ताने और रेषम के बाने से बुने हुए कपड़े को कहते हैं,जो मुख़्तलिफ नमूनों का बुना जाता है लेकिन अब आम तौर से किमख़ाब और ज़रबफ़्त का एक ही मफ़हूम समझा जाता है लेकिन किमख़ाब में ज़री के बजाय रेषमी बूटी ज्यादा होती है और कपड़ा भी सिफ़्त और संगीन बुनावट का होता है।

ताष ज़रबफ़्त की क़िस्म का मगर उससे घटिया दर्जे का कपड़ा। यह अमूमन खोटे बादले और सूती ताने से बुना जाता है। सच्चे बादले से बुने हुए को सलासल कहते हैं।

ज़ीख (स्त्री) लफ़्ज़ ज़ीक़ का बिगड़ा हुआ तलफ़्फ़ुज़ है। **देखें** रच।

ज़ीन (पु0, स्त्री) डक, भाँजवाँ तार और संगीन बुनावट का दबीज़ क़िस्म का कपड़ा, फौजी वर्दियाँ बनाने के लिये मख़सूस है। इस कपड़े को बाज़ मुक़ाम पर चपकन कहते हैं।

सातिया (पु0) बाँस का डंडा या चोबी बेलन जो ताना तनते वक्त ताने के तारों के सिरों में डाला जाता है। **देखें** ताना।

साठन (स्त्री) देखें अत्लस।

सादा कपड़ा (पु0) वह कपड़ा जिसकी बुनावट बेल, बूटी और धारी चौख़ाना वग़ैरा कुछ न हो।

सादी (स्त्री) लुगदी, चोली यानी ज़नाने सीनाबन्द का रेषमीं कपड़ा जो ख़ास उसी जुरूरत के लिए बुना जाता है और दकन की आम बोलचाल में चोली का कपड़ा या घन कहलाता है। एक घन 24 इंच से 30 इंच तक लम्बा और एक चोली के लिए काफी होता है। लफ़्ज़ सादी अंग्रेजी लफ़्ज़ का बिगड़ा हुआ तलफ्फुज़ है।

सारिज्न/सरिज्न (पु0) एक क़िस्म का निबताती कपड़ा जो रेषमीं की तरह धुलकर साफ और चमकदार रहता है। बंगाल में आमतौर से इस्तेमाल होता है।

सालू (पु0) बारीक छोटी क़िस्म का गहरा उन्नाबी रंग का कपड़ा। **देखें** कंद।

सर (पु0) तानी के खूँटिये जिनपर तानी तनी या सारी जाती है। **देखें** काँच कड़ा।

सिराजा (पु0) रेषमीं धारीदार मलमल। किसी ज़माने में ढाका में निहायत उमदा तैयार और अजीजी के नाम से मौसूम की जाती थी। मालदा में उसकी मुख़्तलिफ़ वज़्अ़ ईज़ाद हुई और मछली काँटा, सब्ज़ कटार, बुलबुले चष्म, लाल क़दम फूली और सादा क़दम फूली वगैरा नामों से मषहूर थीं इनकी नफ़ासत और आला सन्अ़तकारी की वज़ह उन के नमूने 1880 ई0 की मिलबोर्न इंटरनेषनल इक्ज़िबीषन में भेजे गये थे।

सिराड़ा (पु0) देखें पाई।

सराई (स्त्री) छड़बत्ती। **देखें** जूआ।

सरबंद (पु0) सरन, झालर। **देखें** फल्वा।

सिरगाह (स्त्री) देखें थान।

सरन (स्त्री) सरबंद, झालर। **देखें** फल्वा।

सिफ़्त कपड़ा (पु0) देखें दबीज़ कपड़ा।
कहावत सिफ़ भी हो, मुफ़्त भी हो, पनेदार भी हो।

सफ़ेद बाजार (पु0) कपड़े का बाजार खुसूसन मलमल के थानों के फ़रोख़्त की मंडी (बंगाल की ख़ास क़दीम इस्तिलाह) बम्बई, कलकत्ता में अब भी इस नाम के बाजार है लेकिन उनका अस़ल क़दीम मफ़हूम बाक़ी नही रहा।

सुख बदन (पु0) देखें तरंदाम।

सिला (पु0) देखें दमतोड़।

सलासल (स्त्री) देखें ज़रबफ़्त।

सलोन (स्त्री) देखें जामदानी।

सिलेदार (स्त्री) देखें पीताम्बरी।

सलीमबरी (स्त्री) देखें दंगरी।

संजू (पु0) (संस्कृत संयोग बमानी मिलाना) गुलथरा गुलहर। नाल की हरकत के साथ ताने के दम (दोनों हिस्से) को ऊपर नीचे करने वाला चौकटे की शकल का हत्था जो रच को हरकत देने के लिए छत में लटका दिया जाता है। फूलदार बुनाई के मौके पर रच के साथ हस्बेज़ुरूरत संजू भी लगाये जाते हैं जो फूल वग़ैरा की बुनाई में रच का काम देते हैं। बड़े पने के कपड़े और खुसूसन दरी की बुनाई में संजू से काम लिया जाता है। **देखें** (पेषा दरीबाफ़ी और क़ालीनबाफ़ी पृ0)।

संजी/संगी (स्त्री) ज़नाना पाजामों के इस्तेमाल का मषरू की क़िस्म का मगर उससे घटिया कपड़ा गुजरात और मालवे वग़ैरा में आज़मगढ़ी साठन के नाम से मषहूर है।

सूती फुलाल (पु0) रेषमीं कपड़ा जिसपर सूती फूल बने हों।

सूसी (स्त्री) रंगीन धारीदार बुनावट का देसी कपड़ा जो पंजाब में बतौर ख़ास बनाया और इस्तेमाल किया जाता है। उमदा

क़िस्म की सूसी में रेषमीं धारी डाली जाती है और चूड़िए के नाम से मौसूम की जाती है। यूरोप से इस क़िस्म का छपा हुआ कपड़ा आने लगा है, जो देसी सूसी के मुकाबले बहुत घटिया होता है। **देखें** चक।

सोहा (पु0) बारीक क़िस्म का रेषमीं या सूती सुर्ख़ रंग कपड़ा मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर मुख़्तलिफ नामों मसलन शाल्बान, क़ंद, सालू, मदरा से मौसूम किया जाता है।

सेहन (पु0) देखें ख़ासा और बाफ़्ता।

सैला (पु0) ज़र्रीं कोर का मलमल की क़िस्म का बारीक कपड़ा जो एक मुकर्रिरा नाप का तैयार किया जाता है। आम तौर से रूपट्टे और पगड़ियाँ बनाये जाते हैं।

शाल्बान (पु0) देखें कंद और सोहा।

षालवाल (स्त्री) फूलदार अत़लस **देखें** अत़लस।

शबनम (स्त्री) देखें मलमल।

शबूख़ानियाँ (स्त्री) देखें जामावार।

शरबती (स्त्री) असल लफ़्ज़ सरबत्ती है जो मारवाड़ी ज़बान में पगड़ी को कहते हैं जो बालिष्त दो बालिष्त चौड़ी और बीस, पच्चीस गज़ बल्कि इससे भी ज़्यादा लम्बी निहायत बारीक बुनी हुई उमदा क़िस्म की मलमल की बनाई जाती है। सरबत्ती से शरबत्ती और फिर शरबती उमदा क़िस्म की मलमल के लिए इस्तिलाह बन गई। दकन में विलायती बनी हुई बारीक क़िस्म की मलमल को आमतौर से शरबती मलमल कहते हैं जो शिमाली हिन्द में कच्ची मलमल के नाम से मषहूर है।

षिरवान/षेरवानी (स्त्री) कष्मीरी साख़्त का फूलदार ऊनी कपड़ा। फूल रेषम के या ज़री के होते हैं (आइने अकबरी) हैदराबाद (दकन) में अचकन को शेरवानी कहते हैं। चूँकि

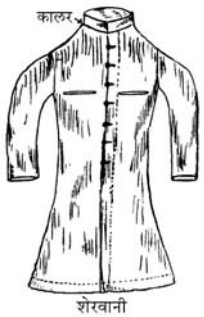

हैदराबाद के उमरा कष्मीर के बने हुये आला क़िस्म के ऊनी कपड़े की शिरवानी या षेरवानी के नाम से मषहूर अचकन पहना करते थे, इसलिये कपड़े की शुहरत और उम्दगी की वजह अचकन का नाम शेरवानी ज़बानज़दे आम व ख़ास हो गया और वहाँ अचकन का कोई मफ़हूम नहीं रहा।

तरहदार (पु0) देखें इलाइचा।

अ़रज़ (पु0) देखें पना।

ग़फ़ बुनाई (स्त्री) देखें बुनाई।

क़िरमिच/किरमिच (स्त्री) कैन्वेस, बटे हुये सूत का संगीन बुनावट का दबीज़ कपड़ा, थैले, पर्दे, सफ़री पलंग और कुर्सियाँ बनाने के काम आता है। अंग्रेजी लफ़्ज़ कैन्वेस से क़िरमिच या किरमिच उर्दू बन गया ।

क़सब (पु0) रेषम और सन का मिलवाँ बुना हुआ उम्दा क़िस्म का कपड़ा जिसको एक क़िस्म का कतान भी कहते हैं।

क़लंदरा (पु0) देखें इलाइचा।

क़नावेज़ (स्त्री) देखें बुलबुले चष्म, मुषज्जर और अतलस।

क़ंद (पु0) पक्के सुर्ख रंग का मलमल की क़िस्म का कपड़ा दकन में मदरा और सालू कहलाता है और शिमाली हिन्द में क़ंद, पूरब की तरफ बाज़ मुक़ामात में शाल्बान और सोहा भी कहते हैं।

काथी (स्त्री) देखें दंगरी।

कारगा (पु0) देखें बाबल लेट।

कालीको (पु0) कालीकट का उमदा क़िस्म का बुना हुआ दबीज़ कपड़ा जो किसी ज़माने में यूरोप भेजा जाता था और वहाँ कालीको के नाम से मषहूर था। मेज़पोष, पलंगपोष और इसी क़िस्म की दूसरी चीजें बनाने के काम आता था। अब यूरोप से उसी नाम का गाढ़ा और खादी आने लगी है। मद्रास के इलाक़े में अब भी इस क़िस्म

का उमदा कपड़ा तैयार होता है और राजा मंदरी के नाम से मौसूम किया जाता है।

कान (पु0) बुनावट की ख़राबी या गलत खींचतान से कपड़े की सतह में पैदा हुआ तिरछापन। **निकलना, आना** के साथ बोला जाता है।

काँचकड़ा (पु0) ताने की फरैती (चर्ख़ी) के सिरे पर लगा हुआ शीषे का चूड़ीनुमा हल्क़ा, तानी तनते वक्त सूत उसके अन्दर से निकाला जाता है, ताकि उसकी रवानी में हल्कापन और सीध कायम रहे।

कतारूमी (पु0) असामी रेषम और सूत का बुना हुआ बारीक क़िस्म का कपड़ा। इस क़िस्म का कपड़ा हिन्दुस्तान से अरब और रोम के मुल्क को भेजा जाता था। इसका यह नाम मुकामी है।

कतान (स्त्री) सन का कपड़ा। **देखें** सन। पेषा– ए–कताई पृ0।

कटार (स्त्री) सूती या रेषमीं उंगष्तिया कोर का बुना हुआ मलमल की क़िस्म का साड़ी के लिये तैयार किया हुआ कपड़ा।

कच्ची चिकन (स्त्री) देखें जामदानी और चिकन।

कर्रा (पु0) देखें पाई।

किरकिरी ताष (पु0) ताष की क़िस्म का कपड़ा। **देखें** ताष।

करगा (पु0) ओरंग, कारगाह (फ़े) बगेरा या बेगारा। (बंगाली) कपड़ा बुनने का ठिया। जुलाहे के काम करने की जगह।

करगा छोड़ तमाषे जाये।
नाहक चोट जुलाहा खाये।

खुड्डी जुलाहे के काम करने की जगह का गढ़ा जिसमें वह पैर लटका कर काम करता है। बंगाल में बगेर या बेगारा कहलाता है और मुराद जुलाहे के काम करने की जगह ली जाती है।

करगाहा (पु0) करघे का महसूल जो ज़मीनदार रिआया से हर करघे पर वसूल करता है।

केब (स्त्री) निहायत बारीक हमरंग बुनावटी फूल का सूती या रेषमीं कपड़ा। **देखें** जामदानी।

किलनिया (पु0) दोपटा, दोबरा, दोहरे पने का कपड़ा।

कमख़ाब/किनख़ाब (स्त्री) कलाबत्तू की बूटीदार बुना हुआ रेषमीं कपड़ा। आमतौर से ज़रबफ़्त और किमख़ाब के नाम से मौसूम किया जाता है, जो मज़कूराबाला एक ही क़िस्म के कपड़े के दो नाम हैं। यह कपड़ा हिन्दुस्तान में मुख़्तलिफ़ वज़अ़ का निहायत खुषनुमा तैयार और ताष, किरकिरी ताष, कमख़ाब और ज़रबफ़्त के नाम से मौसूम किया जाता था। इनमें से बाज़ बादले के तार ताने और बाने में बुने जाते हैं। इस वज़अ़ को तोष, किरकिरी ताष य सिर्फ ज़र्बफ़्त कहते हैं। कमख़ाब दरअसल रेषमीं बूटी का संगीन बुना हुआ कपड़ा होता है। इसका तानाबाना भाँजवाँ होता है और अतलस की तरह सतह में अबरा अस्तर नहीं होता और न रवाँ होता है लेकिन ज़रबफ़्त का मफ़हूम बहुत आला है। इस क़िस्म में कलाबत्तू की बूटियाँ और धारियाँ क़रीब–क़रीब होती है और कपड़ा उमदा संगीन बुनावट का होता है। कमख़ाब में कलाबत्तू की बूटी कम और रेषमीं बूटी ज़्यादा होती है और मषरू इससे भी कम दर्जे का होता है। इसमें धारियाँ कलाबत्तू की होती हैं और फूलदार रेषमी बेलें।

किनारा (पु0) देखें कन्नी।

कुन्तादार (पु0) (बंगाली) मलमल के थानों की धुलाई का काम अंजाम देने वाला ठेकेदार (हैदराबाद–दकन) में लफ़्ज़ ठेकेदार के लिये गुत्तादार बोला जाता है,

जो ग़ालिबन बंगाल की तरफ़ से वहाँ आया हैं।

कंचल लेट (स्त्री) देखें बाबल लेट।

कन्नी (स्त्री) भाँज (भाँजवाँ तार) के साथ मज़बूत बुना हुआ थान का किनारा। **डालना** थान के किनारे पर भाँजवाँ डोरा, ताने के तारों के अख़ीर में मिलाना। **कोर** मामूल से किसी क़दर चौड़ी कन्नी जो नुमायाँ दिखाई दे। कोर थान के हमरंग भी होती है और गैर रंग भी और ज़्यादा से ज़्यादा डेढ़ इंच तक चौड़ी होती है। इससे ज्यादा चौड़ी हो तो किनारा कहलाता है।

कोटा (पु0) देखें तानी।

कोर (स्त्री) देखें कन्नी।

कोरा कपड़ा (पु0) बगैर धुले हुये सूत का बुना हुआ कपड़ा। गैर मुस्तअ़मिला कपड़ा।

कोली जुलाहा (पु0) देखें जुलाहा।

काँच (स्त्री) ऊरिया (बंगाली) तुली, झारनी, ताना माँढ़ने और साफ करने का ब्रुष की वज़अ़ का औज़ार मामूल से छोटा कूँची कहलाता है। **फेरना** पान करना। माँढ़ी लगाकर ताने को काँच से चिकनाना।

कैनवस/कैनविस (स्त्री) देखें क़िरमिच (किरमिच)।

खात्री (स्त्री) मषरू की क़िस्म का बनारसी साख़्त का कपड़ा। **देखें** मषरू।

खादी/खद्दर (स्त्री) देखें गाढ़ा।

खारवा (पु0) संस्कृत खुरा बमानी खुर्दुरा। मोटी क़िस्म के पक्के सुर्ख रंग की खादी। खेमों के अस्तर बनाने के लिये तैयार की जाती थी। **छाँटी** खारवे से किसी क़दर पतली और झूनी क़िस्म की दकन में छाँटी कहते हैं।

खारी इस्री (स्त्री) भागलपुरी टसरी बारीक क़िस्म और उमदा बुनावट का कपड़ा।

खत्ता (पु0) (बंगाली) कपड़े का गोदाम। (कोठा)

खुड्डी (स्त्री) देखें करगा।

खेदा (पु0) देखें खेवा।

खेस (पु0) (पंजाब) गीले बाल और बदन पोंछने का खास क़िस्म का बुना हुआ कपड़ा। **देखें** तौलिया।

खेवा/खेदा (पु0) बुनाई के वक्त ताने के दम के साथ नाल की हरकत जो जुलाहे के हाथ की ठोंग से ताने के आर–पार होती रहती है।

गाढ़ा (पु0) मोटी क़िस्म का सादा और सफ़ेद कपड़ा, मामूली और रोज़मर्रा के इस्तेमाल के लिये जो कपड़ा बुना जाता है। उसमें मोटी क़िस्म को गाढ़ा और बारीक क़िस्म को मलमल कहा जाता है, जो बहुत क़दीम नाम है, लेकिन जब से यूरोप का बना हुआ कपड़ा हिन्दुस्तान में आया, गाढ़े का मफ़हूम ख़ास हो गया। अब उससे आम तौर पर कचबले तागे का देसी बुना हुआ कपड़ा मुराद होता है। गुजरात और दकन के इलाक़े में खादी और खद्दर के नाम से मषहूर है। लेकिन हिन्दुस्तान की तहरीके आज़ादी में खादी का नाम बहुत आम हो गया है, जिसका इस्मे–तसग़ीर खद्दर है। **इंग** (झूना) पतील और झिरझिरी बुनावट का घटिया क़िस्म का गाढ़ा बाज़ मुक़ामात पर इसको मैठ भी कहते हैं। **धूतर** (अवध) दूसरे दर्जे का हल्की क़िस्म का गाढ़ा। **गज़ी** (गज़ेरा, गज़ेनी) घटिया क़िस्म का पतला और झिरझिरा गज़ भर पने का गाढ़ा। **लमदराज़** (इसरी) दूसरे दर्जे का बड़े पने का गाढ़ा।

गाज़/गाज (स्त्री) (अंग्रेजी) बारीक और झूनी क़िस्म की मलमल जिसमें आर–पार दिखाई दे। सूती और रेषमी दोनों क़िस्म की होती हैं। पिष्वाज़ और दूसरे ज़नाना लिबास के काम आता है।

गाँठ (स्त्री) गट्ठा, गट्ठर, फुलंदा। कपड़े के थानों का मामूल से बड़ा और मज़बूत

बँधा हुआ बंडल। (फलन्दा)। **प्रयोग़** यूरोप से कपड़े की हज़ारों गाँठे सालाना हिन्दुस्तान में आती हैं।

गब्रून (पु0) सूसी क़िस्म का मगर उससे किसी क़दर बेहतर बुना हुआ कपड़ा हिन्दुस्तान में लुधियाना का बना हुआ ज़्यादा मषहूर है।

गट्ठर (पु0) पोट, पोटला, बोग़बंद, बुग़चा, कपड़े के थानों की बँधी हुई बड़ी बहंगी। **देखें** गाँठ, बाज़ मुक़ामात पर फुलंदा भी कहते हैं।

गठरी/गठरिया (स्त्री) पोटली, पोटलिया, बुग़ची (बुग़चिया) गट्ठर से छोटी मामूली बहंगी। **देखें** गट्ठर।

गरद (पु0) धुले हुये रेषम का बना हुआ कपड़ा।

गरदाँग (पु0) देखें तुर।

गर्भूति/गर्भसूती (स्त्री) सूती ताने और रेषमीं बाने का बुना हुआ कपड़ा (दोग़ला)

गिरह (स्त्री) देखें गुज़।

गज़ (पु0) वार। कपड़ा नापने का हिन्दुस्तानी पैमाना अंग्रेजी अहदे–हुकूमत से अ़मूमन (36) इंच का शुमार किया जाता है। बाज़ मुकामात पर गज (36) इंच से बड़ा होता है। ऐसे मुक़ामात पर (36) इंच के गज़ को इस्तिलाह में दार कहते हैं। **गिरह** गज़ का 1/16वाँ हिस्सा।

गज़ी (स्त्री) देखें गाढ़ा।

गज़ीरा (पु0) देखें गाढ़ा।

गज़ीना (पु0) देखें गाढ़ा।

गुल्बदन (पु0) मुख़्तलिफ़ वज़अ़ का धारीदार और बूटीदार रेषमीं और सूती कपड़ा जो किसी जमाने में वस्त एषिया के इलाक़े से बराहे–काबुल हिन्दुस्तान में आता था। पंजाब, देहली और नवाहे–देहली में अब तक यह नाम मषहूर है और इसी क़िस्म के विलायती कपड़े के लिये बोला जाता है।

गुलथरा/गुलहरा (पु0) देखें संजू।

गुलषन (स्त्री) नक़ली मुषज्जर। **देखें** मुषज्जर।

गिमटी (स्त्री) गाउटी। देहाती बुना हुआ मोटी–झोटी क़िस्म का गँवारू कपड़ा। बुनावट में बुंदकी, बूटी और आड़ी तिरछी धारियाँ भी होती हैं।

गुमचा (पु0) (बंगाली) खेस के क़िस्म का कपड़ा, **देखें** खेस।

गूदड़ (पु0) कपड़े के नाकारा टुकड़े जो बुनने में बिगड़ या कट–फट जायँ। मुस्तअ़मिला फटे, पुराने कपड़े। **देखें** पेषा धोबी पृ0।

गवर्नट (स्त्री) देखें अतलस।

गीगम (पु0) गाढ़े की कपड़े क़िस्म का धारीदार बुनावट का खुर्दुरा कपड़ा।

घन (स्त्री) चोली के कपड़े का चौबीस या तीस इंच लम्बा टुकड़ा। **देखें** सादी।

लाही (स्त्री) देखें दरियाई। फूलदार लाही, लाही फुलकारी और बुंदकीदार, लाही मीना कहलाती है।

लाही फुलकारी (स्त्री) देखें लाही।

लाही मीना (स्त्री) देखें लाही।

लिपटन (स्त्री) देखें तुर।

लत्ता (पु0) ओढ़नी, चादर या धोती के लायक़ कपड़ा उर्दू में कपड़े के साथ मिलाकर बोलते हैं जैसे कपड़ा लत्ता सब चोरी हो गया। **प्रयोग** काष्तकारों की हालत यह है कि उन के तन पर लत्ता और पेट को रोटी नहीं। **कहावत** तन पर..

लट्ठा (पु0) हिन्दुस्तानी गाढ़े की क़िस्म का मषीन का बुना हुआ, विलायती कपड़ा। यह कपड़ा या तो अपनी संगीन बुनावट, मजबूती और सफ़ाई की वजह से लट्ठा कहलाने लगा या ल़फ़्ज़ लत्ते से लट्ठा हो गया है या अंग्रेजी लफ़्ज़ लिंग लाट का लट्ठा बन गया है। पंजाब, देहली,

नवाहे–देहली और आगरा अवध के इलाके में इसी नाम से मौसूम किया जाता है। लखनऊ में छालटीन और दकन के इलाके में हरक और छिलवारी के नाम से मअरूफ़ है।

लचका (पु0) मोगा रेषम का ज़नाना पाजामों के लायक तैयार किया हुआ कपड़ा।

लुक (स्त्री) कचबले सूत का बुना हुआ मोटा और खुर्दुरा कपड़ा।

लुगदी (स्त्री) देखें सादी।

लमदराज़ (पु0) देखें गाढ़ा।

लुंडी (स्त्री) साफ़ किये हुये ताने की गुंडली।

लिंगलाट (पु0) देखें लट्ठा।

लोड़जाली (स्त्री) देखें बाबल लेट।

मार (स्त्री) देखें मांढी।

मार्चबंद (पु0) मार्च यानी मौसम बहार के रेषम का बुना हुआ कपड़ा जो और महीनों के रेषम के कपड़े की बनिस्बत साफ, सफेद और नर्म होता है।

मारकीन (स्त्री) लमदराज की क़िस्म का अमरीका का बुना हुआ कपड़ा जो अमरीका की निस्बत से मारकीन मषहूर हो गया।

माकू/मक्कू (स्त्री) देखें नाल।

माँड/माँढ़ी (स्त्री) मार, माया, पान (संस्कृत मुंद बमानी चाँवल की पीच) ताने के तारों को चिकना और करारा बनाने के लिये चाँवल वग़ैरा का लेसदार तैयार किया हुआ मसाला। **देना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

मथा (पु0) मिकना, मुकुटा, ऐसे रेषम का बुना हुआ कपड़ा जिसका कपड़ा कोये को फाड़कर निकल गया हो। अहिंसा के क़ायल हिन्दू फ़िर्के और बाज़ ब्राह्मन इसको ख़ास रसूम के मौके पर इस्तेमाल करते हैं।

महमूदी (स्त्री) देखें बाफ़्ता।

मखमल (स्त्री) रेषमीं, रोयेंदार कपड़ा जो सूती बाने पर तैयार किया जाता है और नौइय्यत के लेहाज़ से रोवाँ छोटा बड़ा रखा जाता है।

मदरा (पु0) देखें क़ंद।

मुषज्जर (पु0, स्त्री) फूलदार अतलस।

मषरू (पु0) रेषम और सूत का मिलवाँ बुना हुआ अतलस की क़िस्म का बेलबूटेदार कपड़ा। **देखें** अतलस।

मुकटा (पु0) देखें मत्था।

मिकना (पु0) देखें मत्था।

मलमल (स्त्री) रोज़मर्रा इस्तेमाल का सादा, बारीक, मुलायम और सफ़ेद कपड़ा। बुनावट झिरझिरी होती है। आला और अद्ना कई क़िस्म का तैयार और मुख़्तलिफ़ नामों से मौसूम किया जाता है। मुसलमानों के अहेद में ढाका इसकी सन्अ़त के लिये दुनिया में मषहूर था। अंग्रेजों के राज में जब से मषीन का बुना हुआ माल यूरोप से आने लगा, यहाँ की इस सन्अत को ज़वाल आ गया, लेकिन यूरोप की बेहतरीन बारीक क़िस्म की मलमल के नाम से मौसूम की जाती है, जो वहाँ की सनअत की याद दिलाती है। हिन्दुस्तान में मलमल के क़दीम नाम हस्बे–ज़ैल थे। **1.** आबे रवाँ **2.** आरनी **3.** ऐवलाई या आलाबाली **4.** जहाज़ी **5.** षबनम **6.** मलमले ख़ास मज़कूराबाला नामों में से बाज़ नाम मुकामी तौर पर अभी तक कहीं–कहीं बाक़ी है वरना आमतौर से कच्ची और पक्की मलमल नाम मषहूर हो गये हैं, कच्ची मलमल से बारीक और पक्की मलमल से सिफ़्त मुराद ली जाती है।

मलमले ख़ास (स्त्री) देखें मलमल।

मोतीकाठी (स्त्री) देखें तुर।

मौज लहर (पु0) लहरिएदार बना हुआ रेषमीं कपड़ा।

मोरकंठी (स्त्री) देखें धूपछाँव।
मोमजामा (पु0) मुचर्रब कपड़ा।
मोमिन जुलाहा (पु0) देखें जुलाहा।
मीठ (पु0) देखें गाढ़ा।
मैखली (स्त्री) सूत और टसर का बुना हुआ कपड़ा इसका ताना सूत और बाना टसर का होता है।
नाच्नी (स्त्री) रच।
नाल (स्त्री) धड़की, माकू या मक्कू, तैरी बुनाला या बाना डालने का आलाः शकल में छुहारे की गुठली के मुषाबा, अहनी, चोबी और हस्बेज़रूरत छोटा बड़ा होता है। **उरया** नाल के अन्दर की वह नली जिसपर बुनाला लिपटा रहता है। **रेता** उरिया का कीला। **डालना** बुनाई के वक्त नाल को ताने के दम में गुजारना। **फेंकना** नाल को हाथ से ढोंग से ताने में इधर से उधर निकालना। **भरना** नाल की नली पर बुनाला लपेटना।

नाल

नाम्ना (पु0) एक क़िस्म का भागलपुरी टसरी कपड़ा जिसकी बनावट में देवताओं की मुर्ति नाम या किसी दुआ के अलफ़ाज़ की शकलें बनाई हो।
नताई (स्त्री) देखें नतना।
नतानर्द (पु0) देखें तुर।
नृमा (पु0) रेषम और सूत का मिलवाँ बुना हुआ फूलदार और चिकनी सतह का कपड़ा। एक क़िस्म की नर्म रूई जो अमरीका की रूई से मिलती– जुलती है।
निकारी (पु0) पार्चाबाफ़ियों की इस्तिलाह में ऐसे मज़दूर को कहते हैं जो कारख़ाने के कामों से नावाक़िफ़ हो और काम सिखाने के लिये कारख़ाने में दाख़िल किया गया हो।
नौबती (स्त्री) असम के रेषम और सूत का मिलवाँ बुना हुआ कपड़ा। इसका यह नाम मुक़ामी है।
नूरबाफ़ (पु0) देखें जुलाहा।
नोरोसी/नौरसी (स्त्री) नाखून की धार के मानिंद निहायत बारीक और मिलवाँ धारियों का कपड़ा।
नैनसुख (पु0) नैनू। लट्ठे की क़िस्म का मगर उससे ज़्यादा साफ़ और चिकनी क़िस्म का कपड़ा। पंजाब और नवाहे–देहली में इस नाम से मअ़रूफ़ है।
नैनू (पु0) देखें नैनसुख।
वार (पु0) देखें गज़।
हतियल (स्त्री) देखें पनकष।
हिमरू (पु0) देखें इमरू।

8 पेषा–ए–बुनाई

(षाल व कम्बलबाफ़ी)

अदीम (पु0) पहाड़ी गाय के बालों का बुना हुआ मोटी क़िस्म का कम्बल की वज़अ़ का कपड़ा जो पहाड़ी सर्द इलाकों में बतौर कम्बल इस्तेमाल किया जाता है।
इकलई (स्त्री) इकहरी शाल, फर्द। **देखें** शाल।
अलपका (पु0) (अंग्रेज़ी) आला क़िस्म का बारीक ऊनी कपड़ा जो यूरोप से आता है। अल्पाक अमरीका में एक क़िस्म के पष्मवाली भेंड़ को कहते हैं। इसकी पष्म का कपड़ा अल्पका कहलाता है।
अल्वान (स्त्री) अरबी लफ़्ज़ हुल्ला का शायद ग़लत तलफ़्फ़ुज़ है। उर्दू में अल्वान से मुराद दुंबे और भेंड़ के बच्चों की पष्म से सादा खुदरंग पतला और नर्म तैयार किया हुआ कपड़ा। पकड़ी, पटका और चादर के लिये इस्तेमाल किया जाता है। अल्वान की दोहरी चादर इस्तिलाह में चादर जोड़ा कहलाती है और उर्फे–आम मे दोषाले को भी चादर जोड़ा कहते हैं। **लोई** अल्वान से किसी क़दर मोटी क़िस्म की

बुनी हुई चादर जो पतली और नर्म क़िस्म के कम्बल में शुमार होती है:

हैं जिनके तन मुलायम मैदे की जैसे लोई।
वह इस हवा में ख़ासी ओढ़े फिरे है लोई।
(नज़ीर)

आमली शाल (स्त्री) वह शाल जिसके पूरे तन और हाषिये पर बेलबूटे कढ़े हुये हों यानी कढ़तकारी का काम किया हुआ हो। लफ़्ज़ इमला बमानी पुर करने से इस क़िस्म की षाल का नाम इस्तिलाह में आमली शाल हो गया। बाज़ कारीगर कानी शाल कहते हैं जो शायद लफ़्ज़ कान बमानी मअ़दन से बना लिया हो। **देखें** शाल।

उर्मुक (पु0) देखें पट्टू।

ओखर (स्त्री) अहारी। कम्बल का ताना लिपटी हुई बल्ली जो बुननेवाले के सामने रहती है।

अहारी (स्त्री) देखें ओखर।

बानात (स्त्री) बगैर बुनावट का ऊनी कपड़ा जो पष्म या ऊन के रूवों को जमाकर काग़ज़ साज़ी के तरीके पर बनाया जाता है और पतला, मोटा, अद्ना, आला और हर रंग का होता है। इसकी मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के नाम उन, सुल्तानी, लैया, पोतया और पत्तन मषहूर थे लेकिन आम तौर से सिर्फ़ एक ही नाम बानात मअ़रूफ़े आम है। घटिया क़िस्म की बानात कचबले तार की बनाई जाती है। वह दरहकीकत बानात नहीं होती, कम्बल की क़िस्म का कपड़ा होता है। **नमदा** बानात की वज़अ पर तैयार किया हुआ मोटा और घटिया क़िस्म का पार्चा जो फर्ष पर बिछाने या घोड़ों के साज़ में लगाने के काम आता है और बाज़ आला सन्अ़ती कामों में चमड़े और काग़ज़ के बजाय इस्तेमाल किया जाता है।

बर्दयमानी (स्त्री) बकरी के ऊन का तैयार किया हुआ पतली और मामूली क़िस्म का देसावरी कपड़ा ।

बर्ज/बर्क (स्त्री) ऊँट के बालों और बाज़ दीगर क़िस्म की उमदा ऊन का चुग़ों के लिये तैयार किया हुआ कपड़ा। अब इसकी बजाय अंग्रेज़ी नाम सर्ज और टुइट मषहूर है।

पट पष्मीना (पु0) उमदा क़िस्म का मोटा और खुदरंग ऊनी कपड़ा जो कोट वग़ैरा के लिये तैयार किया जाता है। पंजाब, सरहद और काबुल के इलाके में इसका बहुत चलन है। उन्हीं मुकामात में आला क़िस्म का बुना जाता और आमतौर से पट्टू कहलाता है। काबुल के इलाके की एक किस्म की पहाड़ी बकरी जिसकी ऊन निहायत नर्म होती है, पट कहलाती है, उसकी ऊन का बुना हुआ मुक़ामी तौर पर पट पष्मीना और पंजाब में आम तौर से पट्टू कहलाता है। पट्टू की दो ख़ास किस्में एक पट्टू क़लमी और दूसरी स्लंग या कोरून के नाम से मषहूर है। (दिल्ली के कस्साब बकरी को पट कहते हैं और गो उसका मफ़हूम उनकी बोलचाल में बकरे की मादा हो गया है, लेकिन ग़ालिबन यह वही लफ़्ज़ है जिसकी तषरीह ऊपर लिखी गयी है।

पतक़ (पु0) देखें फुलालैन।

पट्टू (पु0) देखें पट, पष्मीना।

पट्टू क़लमी (पु0) देखें पट पष्मीना।

परसकार परसगर (पु0) शाल की सतह पर उभरे हुये रोयें और साठें वग़ैरा साफ़ करने वाला कारीगर।

पर्म/नर्म (स्त्री) देखें फुलालैन।

पष्मीना (पु0) भेंड़, बकरी और दुंबे की पष्म का बना हुआ कपड़ा। षाल से किसी कदर बारीक क़िस्म के रेषम की तैयार शुदा चादर।

फुलालैन/फ़लालैन (स्त्री) अंग्रेज़ी लफ़्ज़ फिलानिल को उर्दू में फुलालैन और फ़लालैन तलफ़्फुज़ करते हैं और अब आम तौर से यही नाम मषहूर है। इस कपड़े के हिन्दुस्तानी नाम पतक़, पर्म, नर्म, फूक और तुसी थे, जो आला क़िस्म की पष्म से ख़ाबदार और बगैर ख़ाब का यानी रूयेंदार और बगैर रूयें का तैयार किया जाता है, जब से यूरोप से आना शुरू हुआ है वहाँ का नाम मअरूफ़े आम हो गया है।

फूक (स्त्री) देखें फुलालैन।

फेरीषाल (स्त्री) फेरी ऊन की बनाई हुई शाल। **देखें** शाल और (लफ्ज़ फेरी पेषा–ए–ऊनसाज़ी पृ0)

तुसी (स्त्री) देखें फुलालैन।

तूर (पु0) लफ़्ज़ तूर और तुर एक ही शैय् के लिए बोला जाता है, जो एक क़िस्म का बेलन होता है। शालबाफ़ी में बजाय गोल के चौपहल इस्तेमाल करते हैं। **देखें** तुर। पेषा पार्चाबाफ़ी

तूस (पु0) मोटी क़िस्म का कम्बल। **देखें** कम्बल।

तीलीदार शाल (स्त्री) कम अर्ज़ पट्टियों यानी छोटे पाट तैयार करके और फिर रफू के ज़रिये जोड़कर तैयार की हुई शाल जो बहुत छोटी और नर्म पष्म से बुनी जाती है, इसलिये कीमती होती है। **देखें** शाल।

थलदार जामावार (पु0) देखें जामावार।

जामावार (पु0) जाम्दानी की वज़अ पर तैयार किया हुआ ऊनी कपड़ा। इसकी बुनावट में मुख़्तलिफ़ रंग के खुष–वज़अ बेलबूटे डाले जाते हैं। किसी जमाने में इसका बहुत चलन था। कष्मीर के दस्ती करगों का निहायत ही आला क़िस्म का होता है। मषीन से वैसा नहीं बन सकता। नक़ली जामावार सूत और रेषम का मिलवाँ भी तैयार किया जाता है, **देखें** पेषा–ए–पार्चाबाफ़ी पृ0। **थलदार जामावार** वह जामावार जिसके मतन में बेलों का जाल और उसके अन्दर बूटा या बूटी बुनी हुई हो। जालदार जामावार। **रिज़ा** (रेज़ा) जामावार, छोटी बूटी का जामावार। लफ़्ज़ रज़ाई ग़ालिबन इसी लफ़्ज़ से मुष्तक़ है। **देखें** तफ़सील तहत लफ़्ज़। **किरखा** (किरका) जामावार बड़े बूटे का जामावार।

चापड़/छापड़ (पु0) बारीक तीलियों से छलनी के वज़अ पर नम्दा तैयार करने का किष्तीनुमा ज़र्फ़। जालीदार बुनी हुई चटाई। चूँकि इसके सूराख़ चौकोर होते हैं। इस लिये ग़ालिबन चौपड़ या चापड़ वजह तस्मिया बन गई।

चादरजोड़ा (पु0) दोलई, दोहरी या दोतही। अल्वान या लोई लेकिन इस्तिलाहे आम में दुषाला मुराद लिया जाता है। **देखें** शाल।

चर्की (स्त्री) देखें साज़।

हाषियेदार शाल (स्त्री) देखें शाल।

दासन (स्त्री) करगे पर बुनाई के वक़्त शाल के पने को ताने रखने वाली छड़ या तान, पार्चाबाफ़ी में पंकष कहलाती है। **देखें** पार्चाबाफ़ी पृ0।

दरमा (पु0) फुलालैन की क़िस्म का मगर उससे ज़्यादा संगीन बुनावट और दबीज़ क़िस्म का पष्मीना।

दौरदार शाल (स्त्री) देखें शाल।

दोक़दरी शाल (स्त्री) देखें शाल।

दोलई (स्त्री) देखें चादरजोड़ा। लफ़्ज़ दोलई ऊनी चादरजोड़ के लिये मुक़ामी इस्तिलाह है। उर्दू में दोलाई बोला जाता है, लेकिन उसका मफ़हूम ख़ास है। **देखें** पेषा–ए–सिलाई पृ0।

धुस्सा/धूसा (पु0) देखें कम्बल।

राल (स्त्री) मोटी क़िस्म का चरवाहों के तैयार किया हुआ कम्बल। **देखें** कम्बल।

रामचक्कल (पु0) देखें साज़।

रिज़ा जामावार (पु0) रिज़ा गालिबन रेज़ा का गलत तलफ़्फुज़ है, इससे मुराद

जामावार का छोटी बूटी का मामूली थान है। कारीगर बड़े और आला क़िस्म के थान के मुक़ाबले कम दर्जे के थान को रेज़ा कहते हैं। **देखें** जामावार।

ज़ौजषाल (स्त्री) देखें शाल।

साज़ (पु0) शालबाफ़ी का अड्डा, जो एक चौखटे की शकल का होता है। **चर्की** अड्डे के ऊपर की आड़ी लकड़ी। **रामचक्कल** अड्डे के ऊपर की लकड़ी में बँधा हुआ चोबी रवा, जिसमें रच (ताने का दम चढ़ाने उतारने वाला औज़ार) की डोरियाँ बँधी रहती हैं। **षरकोट** अड्डे की बगली खड़ी लकड़ियाँ। **खरकोट** अड्डे की निचली लकड़ी। **गांचा** बुनाई का वह औज़ार जिससे ताने के हिस्से ऊपर–नीचे किये जाते हैं। शालबाफों की इस्तिलाह में गाँजा, पर्चाबाफ़ो की इस्तिलाह में रच कहलाता है और ज़रबाफ़ गुल्ला कहते हैं।

सप (पु0) देखें किरपास।

सफ़रलात (पु0) बानात की क़िस्म का पष्मीना, षाही ख़ेमों के अस्तर के लिये बनाया जाता है, पुर्तगाल का बना हुआ अच्छा होता है।

सलंग (पु0) पट्टू की निस्बत किसी क़दर सख़्त और कमक़ीमत होता है। **देखें** पट पष्मीना।

सहक़दरी शाल (स्त्री) देखें शाल।

शाल (स्त्री) सर और शानों पर ओढ़ लेने के लायक तैयार किया हुआ ऊनी पार्चा, मुसलमानों के अहेद से शाल के नाम से मौसूम किया जाता है और कष्मीर इस सन्अ़त का मरकज़ था। इस पार्चे पर फुलकारी यानी ऊनी कढ़त का काम भी निहायत आला दीदाज़ेब किया जाता था, जो ज़माने की बेक़दरी के हाथों अब बराये नाम रह गया है। कढ़तकारी के नमूनों और उनकी वज़अ़ क़तअ़ पर शाल के मुख़्तलिफ़ नाम रख लिये गये थे, जिनमें से बाज़ अब मतरूक़ है और बाज़ मुकामी होकर रह गये हैं। सिर्फ़ लफ़्ज़ शाल और दुषाला आम हो गया है, मगर असल मफ़हूम बिल्कुल बदल गया है। शाल अब आम तौर पर क़दीम तर्ज़ की कढ़तकारी का काम की हुई ऊनी चादर को कहतें हैं। अगर इसकी एक फर्द हो तो इकलई फर्द या सिर्फ शाल, अगर दोहरी हो तो दोलई, दुषाल या चादरजोड़ा कहलाता है। **जौहरीषाल** बारीक और पतली कोर की शाल। **दोरदार शाल** हाषियेदार शाल, वह शाल जिसको चारों तरफ़ सिर्फ़ हाषिये पर ऊनी कढ़ी हुई हो और मत्न सादा हो। **ज़ौजषाल** दोरूख़ी कढ़ी हुई शाल यानी जिसके दोनों तरफ यकसाँ कढ़ाई हो और उल्टा सीधा न हो। **षिकारगाह** वह शाल जिसके मत्न में सेहराई जानवर की शकलें कढ़ी हुई हों। **क़दरी शाल शाल चहारबाग**। वह शाल जिसके हाषिये पर बेल और मत्न में बड़े–बड़े फूल और कोनों पर तुरंज कढ़े हुये हो। इस क़िस्म की शाल में मामूल से ज़्यादा उमदा और खुषनुमा काम बना हो, तो दोक़दरी और सहक़दरी कहलाती है। **खोसार** दोहरा हाषिया कढ़ी हुई शाल। इसमें मामूली शाल की तरह तुरंज नहीं बनाये जाते। **क़साबा/कसावा**। शाल की क़िस्म का मगर उससे छोटा सिर्फ़ सर ओढ़ने या गले में बाँधने का पार्चा। इस पर भी कढ़त का काम वैसा ही किया जाता है जैसा शाल पर, उर्दू में कसाबा बोला जाता है और इससे मुराद एक छोटा कपड़ा होता है जिसको औरतें बाल छिपाने के लिये सर पर बाँध लेतीं हैं ताकि सर नंगा न हो और बाल गर्द वग़ैरा से महफ़ूज़ रहे।

शालबाफ़ी (स्त्री) शाल की बुनाई का अ़मल शाल और क़लीन की बुनाई का एक ही

तरीक़ा कुछ थोड़े फ़र्क से है जो आम पार्चाबाफ़ी से मुख़्तलिफ़ है, **देखें** क़ालीनबाफ़ी पृ0।

शरकोट (पु0) देखें साज़।

षिकारगाह (स्त्री) देखें शाल।

शम्ला (पु0) शाल की क़िस्म का तैयार किया हुआ कमर, पटका जो उमरा दरबार उसके पल्लू लटका कर कमर से बाँधते थे, बाज़ मुक़ाम पर ऐसी पगड़ी को जिसका एक सिरा पीछे कमर पर लटका छोड़ दिया जाता है, इस्तिलाह में षम्ला कहते हैं।

तरहसाज़ (पु0) शाल की कढ़न के नमूने और नई–नई वज़अ़ के नकषे (डिजाइन) बनाने और कारीगरों को सिखानेवाला माहिरे–फ़न।

फर्द (स्त्री) देखें शाल।

क़दरी शाल (स्त्री) देखें शाल।

क़साबा/कसावा (पु0) सुर्ख़ रंग के चौकोर कपड़े को जो कसावे की तरह शाहजादे सर पर बाँध लिया करते थे, क़िला–ए–मुअल्ला की ज़बान में इस्तिलाह में क़नाती कहते थे। **देखें** शाल।

क़नाती (स्त्री) देखें कसाबा।

कानीषाल (स्त्री) देखें आमलीषाल।

कपूरधौल (पु0) पतला और झिरझिरी क़िस्म का मसहरी के पर्दे के लायक तैयार किया हुआ ऊनी कपड़ा।

किरपास (पु0) सप। षाल की सतह के फूँसड़े और साँठे काटने का दोधारी क़िस्म का आहनी औज़ार।

किरखा/जामावार/किरका/जामावार (पु0) जामावार।

कसावा (पु0) देखें क़साबा।

कषमीरा (पु0) सूती ताने और ऊनी बाने का बुना हुआ मोटी क़िस्म का ऊनी कपड़ा जो कषमीर में गुर्बा के लिये तैयार किया जाता था और मुक़ामी जुरूरत के लिये मख़सूस था। इसलिये उर्फ़े आम में कषमीरा कहलाने लगा।

कम्बल (पु0) तूस, धुस्सा, नदाल, मोटे ताने बाने का दबीज़ बुना हुआ, चादरा जो पहाड़ी इलाकों में सर्दी के मौसम में रात को ओढ़कर सोने के लिये आला और अद्ना हर क़िस्म और वज़अ़ का तैयार किया जाता है। हिन्दुस्तान के मैदानी इलाकों में इसका चलन बहुत कम है, अलबत्ता पहाड़ी मुक़ामात पर बहुत कारआमद होता है। यूरोप से बहुत आला क़िस्म के बुने हुये आते हैं। हिन्दुस्तान में कानपुर और पंजाब में अच्छे तैयार होते हैं। **धुस्सा** भेंड़ बकरी के पष्म का कम्बल की वज़अ़ पर तूस का बुना हुआ चादर, जो किसी ज़माने में वहाँ से हिन्दुस्तान में आता था और तूसा के नाम से मषहूर था। पंजाब में धूसा और धुस्सा कहलाने लगा और अब तक पतली क़िस्म के हल्के खुद रंग कम्बल के लिये यह लफ़्ज़ बोला जाता है, इसी तरह लफ़्ज़ तूस और तूस्सी बन गया है। मामूल से छोटे और अद्ना दर्जे के कम्बल को कमली कहते हैं।

कम्बल थोड़े दाम की आवै बहुते काम,
खासा, मलमल बाभता उनका राखे नाम।
उनका राखे नाम बूँद जहाँ आरे आये
बगूचा बाँधे मुट रात को झाड़ बिछाये
कहे गिरधर कविराय मिलत हैं थोड़े दमड़े

कमली (स्त्री) देखें कम्बल।

खरकोट (पु0) देखें साज़।

खोसार (पु0) देखें शाल।

खोनामोची (स्त्री) देखें मोच या मूचीन।

गाँजा (पु0) शालबाफ़ी का औज़ार जिसके ज़रिये ताने के दम तले ऊपर किये जाते हैं। पार्चाबाफ़ी में रच और ज़रबानी में गुल्ला कहलाता हैं। **देखें** साज़।

लोई (स्त्री) देखें अल्वान।

मालीदा (पु0) मलीना। अलवान की क़िस्म का चौड़े पने और संगीन बुनाई का पतील पष्मीना, सादा और छपा हुआ दोनों क़िस्म का होता है। इसका तार कचबला होता है और निहायत एहतियात से नमदे की वज़अ़ पर तैयार किया जाता है। शिमाल मग़रिबी सरहद के एक क़स्बे का नाम मरीना है वहाँ के भेंड़ की पष्म निहायत आला क़िस्म की होती है। जिससे यह कपड़ा बनाया जाता है और इसमें बामुसम्मी है। पंजाब, देहली और नवाहे–देहली में मलीने और मालीदे के नाम से म़अ़रूफ़ है।

मलन (स्त्री) शाल की सतह के उभरे हुए तार, कांटे और साफ़ करने का छुरी की वज़अ़ का धारदार औज़ार।

मलीना (पु0) देखें मालीदा।

मूचीन/मोच (स्त्री) खोना, मूची। शाल की सतह में से टूटे और गैर ज़ुरूरी तार जो बुनाई में आ गये हों, खींचने का मोचने के क़िस्म का औज़ार।

नर्मा (पु0) मलमल के मानिन्द बारीक और चिकनी सतह का सादा और रंगीन तैयार किया हुआ पषमीना, जनाना कुर्ता बनाने के काम आता है।

नम्दा (पु0) संस्कृत नमटा, बानात की वज़अ़ पर मोटी और सख़्त ऊन का दबीज़ क़िस्म का तैयार किया हुआ पार्चा। **देखें** बानात।

9 पेषा–ए–बुनाई (दरीबाफ़ी)

आड़का/उड़ेका (पु0) दरी के ताने की बल्ली खींचे रखने वाले रस्सी के बंद का अलबेट देने वाला चोबी डंडा।

बोद (स्त्री) पोथ दरी की बुनाला जो कच्चा सूत होता है और कई–कई तार मिलाकर बाने के तौर पर डाला जाता है।

बईतार (पु0) जोतड़ा, दरी की बुनाई के वक्त ताने के तारों को ऊपर–नीचे करने वाली डोरी (रस्सी) जो ताने की बल्ली में बँधी होती है। **देखें** दरीबाफ़ी।

बेवड़/बेयोड़ (स्त्री) लट। दरी के तारों की सुतली यानी सूत की मोटी रस्सी जो बतौर कन्नी ताने की बग़लियों में लगाई जाती है, बड़ी दरियों में दो–दो लगाई जाती है। **देखें** दरीबाफ़ी।

पट्टा (पु0) दरी का चौड़ा हाषिया जो मत्न से मुख़्तलिफ़ क़िस्म का होता है। **देखें** आड़का। **डालना** दरी में मत्न से मुख़्तलिफ़ क़िस्म का हाषिया बुनना।

पुचारा (पु0) दरी के बुनाले को नम और साफ करने वाला गीला कपड़ा।

पंजा (पु0) देखें किरकिरी।

तैरी (स्त्री) दरीबाफ़ों की इस्तिलाह में नाल को तैरी कहते हैं, जो दरअसल नाल नहीं होती, बल्कि नाल की शकल की बुनाले की ककड़ी बनी हुई होती है, जिसको कारीगर नाल की तरह की ताने की दम पर लुढ़काता है।

जोतड़ा (पु0) इस्मे तस्गीर। जोत का ग़लत तलफ़्फ़ुज़ ताने के दमों की बल्ली के सिरों का रस्सी का बंद। **देखें** बुईतार।

झिक्की/झिक्कियाँ (स्त्री) दरी के ताने की बल्ली को खींचे रखने वाली रस्सी की तान तानें। **देखें** दरीबाफ़ी।

झोर्या (स्त्री) घटिया क़िस्म की ढीली बुनावट की पतली दरी, दखनी जबान में झोर्या कहलाती है।

झेलन (स्त्री) बड़े पाट की दरी के ताने के पेटे यानी दरमियानी झोल सहारे रखने वाली बल्ली जो बतौर घोड़ी लगायी जाती है। लफ़्ज़ झेलना से झेलन इस्मे–आलाः बना लिया है। बाज़ कारीगर झल्लन कहते हैं, जो झेलन का गलत तलफ़्फ़ुज़ है। **देखें** दरीबाफ़ी।

दरी (स्त्री) ऐसा पार्चा जो इंसानी आसाइष के लिये बतौर बिछौना फैलाकर बिछाया जाय और जो ऐसा दबीज़ और संगीन बुनावट का हो कि उसमें चुर्स और

सिलवट न पड़े। हस्बे ज़रूरत छोटा बड़ा, अदना, आला, रंगीन, सादा, पट्टीदार और बेल–बूटेदार बग़ैरा बुना जाता है। **षतरंजी** बगैर रूयें का ख़ालिस सूती, दोनों तरफ़ से यकसाँ, दरी की वज़अ पर तैयार किये हुये क़ालीन का नाम दरअसल शतरंजी था, लेकिन दकन में आमतौर से इसका मफ़हूम बड़ी फ़र्षी दरी हो गया और मामूली छोटी पलंग पर बिछाने की दरी कहलाती है। **फ़र्ष** ज़मीन पर बिछाने की लम्बी चौड़ी और मोटी दरी आगरा और अवध के इलाके में फर्ष के नाम से मौसूम की जाती है, जिसको देहली और नवाहे देहली में फर्षी दरी कहते हैं और गुजरात में गद्धर या गोधर।

दरीबाफ़ (पु0) दरी बुनने वाला कारीगर।

दरीबाफ़ी (स्त्री) दरी बुनने का अमल या पेषा।

शतरंजी (स्त्री) **देखें** दरी।

फर्ष (पु0) **देखें** दरी।

फर्षीदरी (स्त्री) **देखें** दरी।

काट (स्त्री) दरी के ताने को खींचे रखने वाले रस्सी के बंद बाँधने की बल्ली। **देखें** दरीबाफ़ी।

किरकिरी (स्त्री) पंजा। दरी का बुनाला ठोंकने का पंजे की शकल का औज़ार।

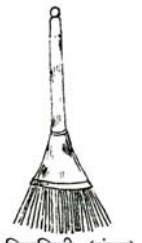
किरकिरी (पंजा)

गद्धर/गोधर (स्त्री) **देखें** दरी।

गिलवैनी (स्त्री) मकड़े की रस्सी का फंदा। **देखें** मकड़ा।

घोड़ी (स्त्री) वह लकड़ी जिसपर मकड़ा टिका रहता है। **देखें** मकड़ा।

लट (स्त्री) **देखें** बेवड़।

लटकड़ा (पु0) लट को सहारे रहने वाला रस्सी का हलक़ेनुमा बंद। **देखें** दरीबाफ़ी।

मक्कड़/मकड़ा (पु0) गुलथर, संजू। दरी के ताने के हिस्सों को बुनाई के वक्त ऊपर उठाने वाला लकड़ी का दस्ता। जिसको दोनों सिरों में रस्सी का बन्द बँधा होता है और उसमें ताने की छड़ अटकी होती है, जिसके ऊँचा नीचा करने से ताना ऊपर नीचे होता है पार्चाबाफ़ी में जो अमल रच करता है। दरीबाफ़ी में वही अमल मकड़े के ज़रिये किया जाता है। मकड़े के रस्सी के बंद को जोतड़ा और इस बंद को जिस हलके में डालकर कसा जाता है, इस्तिलाह में गिलवैनी कहते हैं और जिस लकड़ी पर मकड़ा टिका होता है, वह घोड़ी कहलाती है। **देखें** दरीबाफ़ी।

निवाड़ (स्त्री) मोटे बड़े डोरों की गिरह, सवा गिरह (ढाई, तीन इंच) चौड़ी बुनी हुई लम्बी पट्टी जो पलंग बुनने के लिये तैयार की जाती है।

10 पेषा बुनाई (क़ालीन बाफ़ी)

अथर (पु0) भड़ाइच और उसके नवाह का बुना हुआ क़लीन। **देखें** क़ालीन।

उस्तर (पु0) क़लीन का टपका (रूवाँ) काटने का तेज धार का चाकू की वज़अ का औज़ार।

पाच्नी (स्त्री) कब। क़ालीन के ताने के तार या पूरा ताना। **देखें** तस्वीर पे0।

पंजा (पु0) कालीन का रूवाँ जमाने का औज़ार। **देखें** तस्वीर पे0।

पेाथ (स्त्री) क़ालीन की हरचन (रूवाँ की तार) में डाला जाने वाला कच्चा डोरा। **भरना** के साथ बोला जाता है। **देखें** पटका।

पेचबद्दा (पु0) छीरी। क़ालीन के ताने के बीच में डाली जाने वाली छड़। **देखें** तस्वीर पे0।

तुनक (पु0) क़ालीन की हरचन (रूओं की कतार) की तकमील के बाद डाला जाने वाला भाँजवाँ डोरा, जो बतौर बाना डाला जाता है। **डालना** के साथ बोला जाता है। **देखें** पटका।

थरी (स्त्री) क़ालीन के बाने के दम यानी नीचे ऊपर के हिस्सों को बाना डालने के लिये तले ऊपर करने वाली हत्थी जो ताने के तारों से वाबस्ता होती है। बाज़ कारीगर गलथरी कहते हैं। **देखें** तस्वीर पे0।

टपका (पु0) क़ालीन के रूयें का एक फेर जो ताने के हर तार में ऊन, सूत या रेषम जिस हैसियत का क़ालीन हो, डाला जाता है। इस तरह ताने के तमाम तारों को पुर किया जाता है और फिर रूओं को कैंची या किसी और तेज धारदार औज़ार से काटकर बराबर कर दिया जाता है **डालना** के साथ बोला जाता है। **टपकों** (रूओं) का पूरे अर्ज़ का एक बुनाला क़ालीनबाफ़ों की इस्तिलाह में चिन या एकचिन कहलाता है। हरचिन के बाद एक भाँजवाँ डोरा बतौर बाना डाला जाता है, जिसको इस्तिलाह में चिन या एक चिन कहलाता हैं। हरचिन के बाद एक भाँजवाँ डोरा बतौर बाना डाला जाता है, जिसको इस्तिलाह में तुनक कहते हैं और कच्चा तार जो रोंयें के दरमियान भरा जाता है, पोथ कहलाता है। हर टपके रोयें में तीन से ज़ाइद पोथ नहीं भरे जाते। **देखें** तस्वीर पे0।

चिन (स्त्री) क़ालीन के रूओं का पूरा एक बाना इस्तिलाहल चिन और एकचिन कहलाता है। **देखें** टपका और तस्वीर पे0।

छेरी (स्त्री) देखें पेचबद्दा।

दाचा (पु0) जेमखानी, क़ालीनबाफ़ी का अड्डा। जुनूबी हिन्द में माग कहलाता है, यह एक क़िस्म का खड़ा चौखटा होता है जिसके ऊपर और नीचे की लकड़ियों में ताने के तार सारे जाते हैं और बगली खड़ी लकड़ियाँ कुनासाज़ या गुनासार कहलाती हैं। **देखें** तस्वीर पे0।

दोकारा (पु0) क़ालीन का रूआँ काटने की दोधारी छुरी शायद लफ़्ज़ क़ारद से दोकारा बनाया गया है। मामूल से छोटी दोकारी कहलाती है। **देखें** तस्वीर पे0।

दोकारी (स्त्री) देखें दोकारा।

दोलीचा (पु0) नक़ली क़ालीन। मामूली दर्जे का सूती क़ालीन जो आला क़िस्म के ऊनी या रेषमीं क़ालीन की वज़अ़ पर बनाया जाये।

ग़ालीचा (पु0) छोटी क़िस्म का दलदार और बड़े रूयें का क़ालीन, सूती और ऊनी दोनों का तैयार किया जाता है। **गब्बा** छोटी क़िस्म का खुषवज़अ़ बुना हुआ क़ालीन। उर्दू में अब गब्बे का मफ़हूम रूई के गद्दे के लिये जो एक दो आदमियों के बैठने के लायक बना लिया जाये, मख़सूस हो गया है और इसका साबिक़ा मफ़हूम ख़ारिज उज़ ज़हन है।

क़ालीन (स्त्री) ऊनी, सूती या रेषमी रूयेंदार बनाया हुआ फ़र्ष। रवायत है कि इस सन्अ़त की ईजाद सबसे पहले मिस्र में हुई और हिन्दुस्तान में इसका रवाज मुसलमानों के अहेद से हुआ। अकबरी अहेद में क़ालीनबाफ़ी के कारख़ाने हिन्दुस्तान में कायम हुये और ईरानी नमूने पर क़ालीन तैयार होने लगे। कषमीर, मिर्जापुर, वारंगल इस सन्अ़त के मरकज़ बन गये थे। किसी ज़माने में यहाँ का बना हुआ क़ालीन दुनिया भर में मषहूर था अब भी इन मुक़ामात के क़ालीन मषहूर हैं।

क़ालीनबाफ़ (पु0) क़ालीन तैयार करने वाला कारीगर।

क़ालीनबाफी (स्त्री) क़ालीन तैयार करने या बुनने का अमल।

कुम (पु0) छोटे और खड़े रोंयें का क़लीन कारीगरों की इस्तिलाह में कुम कहलाता है। इस क़ालीन में रूआँ मोटी ऊन का

डाला जाता है और छोटा भी रखा जाता है, इसलिये वह खड़ा रहता है। **तस्वीरे**

काँटी (स्त्री) क़लीन का टपका (रूआँ) जमाने का दस्तीदार आहनी सुवा।

कब (स्त्री) देखें पाच्नी।

कनारी (स्त्री) क़ालीन की बग़ली कोरें।

खिरिर (स्त्री) मामूली और मोटी क़िस्म का खुर्रा क़ालीन।

गब्बा (पु0) देखें ग़ालीचा।

लंडा/लुंडे (पु0) ऊन, रेषम या सूत के गोले जो क़ालीनबाफ़ी के अड्डे पर लटकते रहते हैं जिनमें से क़ालीन में रोंयें के फेर डाले जाते हैं। **देखें** तस्वीर पे0।

भाग (पु0) देखें वाचा और तस्वीर पे0।

बे–पार्चादोज़ी

1/11 पेषा सुईसाज़

अटेरन (स्त्री) टोचन। अंधी सुई। शालदोज़ों की कषीदाकारी की कटवाँ नाके की सुई यानी जिसका नाका (तागा, डालने का सूराख) सिलाई की मषीन के मानिंद और बीच में से कटा हुआ है जिसमें तागा पिरोने के बजाय अटका लिया जाता है।

आँख (स्त्री) देखें नाका।

अंधी सुई (स्त्री) देखें अटेरन।

टोचन (स्त्री) देखें अटेरन।

चिरवाँ नाका (पु0) देखें नाका।

सुतवाँ सुई (स्त्री) मोती वग़ैरा पिरोने की पतली और यकसाँ मोटान की सुई यानी जिसका बीच का हिस्सा सिरे के हिस्से से ज़्यादा मोटा न हो।

सुआ (पु0) मोटी सिलाई के काम की मामूली सुई से ज़्यादा हस्बे–जुरूरत बड़ी और मोटी सुई।

सूई (स्त्री) कपड़ा सीने का काँटे के मानिंद तार की शकल का बारीक औज़ार।

सुईसाज़ (पु0) सुई बनाने वाला कारीगर ।

कटवाँ नाका (पु0) देखें नाका।

खुंडी सुई (स्त्री) वह सुई जिसकी नोंक कसरते इस्तेमाल से घिसकर या गिरकर खराब हो गयी हो और कपड़े को आसानी से न छेदे। **देखें** नोंक।

तस्वीर.....

गुठल सुई (स्त्री) वह सुई जो बीच में से ज्यादा मोटी और नाका चौड़ा हो और बारीक कपड़े की सिलाई के लायक न हो।

गोल नाका (पु0) देखें नाका।

नाका (पु0) आँख, सुई का सूराख़ जिससे तागा पिरोया जाता है। **चिरवाँ नाका** लम्बा और फैला हुआ नाका जिसमें चिपटा तागा या कई कई तार ऊपर तले, भरे जा सके। ऐसे नाके में सुई की सोटान अपनी हद से जायद नहीं होती। **कटवाँ नाका** वह नाका जिसके किसी एक रुख़ से थोड़ा हिस्सा काट दिया गया हो ताकि तागा पिरोने के बजाय अटका लिया जाय। **गोल नाका** सुई में तागा डालने का गोल नुक़ते के मानिंद सूराख़।

नोक (स्त्री) सुई का तेज चुभने वाला बारीक सिरा। उमदा हालत में तेज नोक और ख़राब हालत में खुंडी नोक कहलाती है।

2/12 पेषा सिलाई (ख़ैय्याती)

अब्रा (पु0) दो तहे सिले हुये लिबास या ओढने के कपड़े की ऊपर की तह यानी ऊपर का दीदारू कपड़ा जो नीचे के कपड़े के निस्बत अमूमन बेहतर और अच्छा होता है **लगाना** के साथ बोला जाता है। **अस्तर** अबरे के नीचे किसी दूसरे कपड़े की तह जो अबरे के साथ मिलाकर सी जाती है। यह कपड़ा उलटी तरफ़ यानी नीचे के रुख़ रहता और अबरे से कम दर्जे का होता है। **मियान तह** अबरे

और अस्तर के दरमियान डाली हुई कपड़े की एक और तह या रूई का परत वग़ैरा।

अच्कन (स्त्री) पिंडली तक लम्बा दामनदार लिबास। अचकन के ऊपर का हिस्सा जो नाफ़ तक जिस्म पर चुस्त रहता है, इस्तिलाह में चोली और नीचे का ढीला ढाला लटका हुआ हिस्सा दामन कहलाता है।

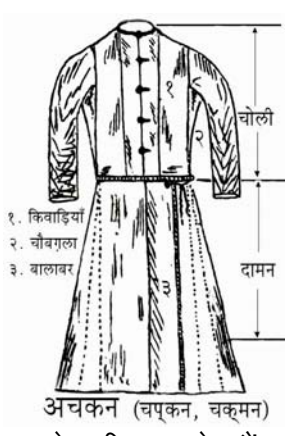

अचकन (चप्कन, चक्मन)

किवाडियाँ चोली के सामने के रुख़ के दोनों पाखे जो काज और बटन के ज़रिये खोले और बन्द किये जाते हैं, पाखे भी कहते हैं। **चौबगला** चोली की ब़गलियों की कलियाँ यानी कलीदार हिस्सा जिसका नोकदार सिरा कमर की तरफ़ और चौड़ा बग़ल की जानिब होता है। **बालाबर** दामन की चौड़ान बढ़ाने वाली पट्टी जो तीन या चार गिरह चौड़ी होती है और चोली की हद से दामन के सिरे तक लगाई जाती है। इसका सिरा बन्द के ज़रिये चोली की नोक के करीब बाँध लिया जाता है ताकि दामन सामने से न खुलें। क़दीम वज़अ़ की अचकन में बालाबर ऊपर के रुख़ बाँधा जाता था, अब अंदर के रुख़ बाँधा जाता है। **गंठी** गले की खड़ी पट्टी जो अब आम तौर से कोलर के नाम से मषहूर है। **चिपकन** लखनऊ के इलाकों में अचकन को चिपकन कहते हैं। देहली और नवाहे देहली में अचकन मषहूर है। आईने अकबरी में 'चिकमन' लिखा है। **दगला** अचकन के वज़अ़ का ऊँचे दामन का गँवारू लिबास जिसकी साख़्त अचकन जैसी होती है और दामन कमरी जैसे। **षेरवानी** हैदराबाद (दकन) की जदीद वज़अ़ कत़अ़ की अच्कन जिसका रवाज अब आमतौर से हिन्दुस्तान के दूसरे शहरों में भी हो रहा है। लफ़्ज़ शेरवानी की हक़ीक़त के लिये **देखें** लफ़्ज़ षिरवान, पेषा–ए–शालबाफी पृ0। जदीद और क़दीम वज़अ़ में यह फ़र्क है कि ज़दीद वज़अ़ की तराष मगरबी तर्ज़ की होती है, इस तरह कि दामन में कलियाँ और चोली में चौबगले मिले हुये कतरे जाते हैं। आस्तीन खड़ी और दोपाखी रखी जाती है। इस सूरत में सिलाई तो कम होती है मगर कपड़ा ज़्यादा ज़ायअ़ जाता है। दूसरी चीज इसमें गले की खड़ी पट्टी होती है जो अब आम तौर से कोलर कहलाती है और चोली के सामने के रुख दो जेबें। **क़बा** ईरानी वज़अ़ की अच्कन लेकिन इसका रिवाज हिन्द में अब नहीं रहा। कोई बहुत ही पुरानी वज़अ़ का दिल्दादा या मज़हबी पेषवा कभी और कहीं पहने नजर आते हैं। इसकी किवाड़ियों में बटनों के बजाय बन्द या घुंडी तुक्मा होत है।

उतरन (स्त्री) पुराने कपड़े जो किसी वजह से पहनने के लायक न रहे हो।

अचला/अंचला (पु0) आँचल का इस्मेतस्गीर। **देखें** आँचल।

उधेड़ना (क्रिया) सिलाई के टाँके तोड़ना, सिलाई खोलना।

उरेब (स्त्री) कपड़े की तिरछी कतर।

उरेबदार पाजामा (पु0) देखें पाजामा। निषान (बे)

उरेब/सुरेब (स्त्री) कपड़े की तिहखूँटी यानी कलीनुमा तराष, जिसका एक पहलू सीधा और दूसरा पहलू तिरछा हो।

आड़ा पाजामा (पु0) देखें पाजामा। निषान (बे)

अड़बंद (पु0) लाँग, लंगर पछेटा। **देखें** तस्वीर पे0

इज़ार (स्त्री) देखें पाजामा।

इज़ारबंद (पु0) कमरबंद नाड़ा, पाजामे का बन्द। **देखें** तस्वीर पे0।

अस्तर देखें अबरा।

आस्तीन (स्त्री) धड़ के लिबास, अचकन, कुर्ते वग़ैरा का एक जुज़ जो कलाई से मोढ़े के पूरे हिस्से या उसके कुछ हिस्से पर पहना जाय। कुल हिस्से पर आने वाली पूरी और कम पर आने वाली आधी या छोटी आस्तीन कहलाती है।

इकलैल (स्त्री) देखें मुकुट।

अगाड़ी/अगवाई (स्त्री) देखें तना।

अल्पटी (स्त्री) देखें तिलेदानी।

आँटी/अंटी (स्त्री) धोती या तहबन्द की कमर पर लपेट की गिरह जिसके बल में अवामुन्नास थोड़ी नकदी वग़ैरा रख लेते हैं। **प्रयोग़** चोर जब पकड़ा तो उसकी अंटी में से कुछ नक़दी और जेवर निकला।

आँचल (पु0) ओढ़नी का सिरा जो नीचे लटका रहे (अचला या आँचला इस्मे मुसग्गर) **प्रयोग़** बहने अपने आँचल दूल्हा के सर पर डालकर घूँघट बना देती है। **प्रयोग** कीचड़ पानी की जगह आँचल। उठाकर चलना चाहिए।

अंगा (पु0) देखें अंगरखा।

अंगर्खा (पु0) (संस्कृत–अंग रक्षा) अचकन की वज़अ का पुरानी तर्ज़ का लिबास। इसकी पूरी बनावट अचकन की सी होती है सिर्फ इतना फर्क़ है कि अचकन की चोली में दो पाखे (किवाड़ियाँ) होते हैं जिनमें काज और बटन होते हैं और अंगरखे की चोली में सिर्फ एक पाखा होता है जो घुंडी और तुकमे के ज़रीए ऊपर गले के पास मिला देते हैं और नीचे के सिरे को कमर के पास बंद से बांध देते हैं और उसके गले के हिस्से को कंठी। **कमरतोई** चोली के खत्म और दामन के शुरू में कमर के हिस्से पर सिली हुई पट्टी जो क़रीब आध इंच चौड़ी और कमर के पूरे घेर की होती है मज़बूती और बंद टाकने को लगायी जाती है।

अंगा ऊँची चोली का अंगर्खा इसके दामन ऊँचे और किसी कदर ज़्यादा घेरदार होते हैं और हिन्दुओं के अहेद की याद दिलाते हैं। बौहरे क़ौम के अफराद इसी वज़अ का अंगा पहेनते हैं अब अंगे और अंगरखे का रवाज खत्म हो चला है कहीं कहीं बराये नाम शौक़ीन या पुरानी वज़अ़ के लोग पहने दिखाई देते हैं।

अंगुषताना (पु0) पोरदानी, पोखा। सीने के वक़त उंगली के सिरे पर पहनने का पीतली या आहनी खोल जिसकी वजह उंगली में सुई नहीं चुभती।

अंगी (स्त्री) देखें अंगिया।

अंगिया (स्त्री) औरत के सीने का लिबास जो पंजाब के अकसर हिस्से और दो आबे के सारे इलाक़े में औरत के सीने पर ठीक और चुस्त आता हुआ खास तरीक़े पर सिया और आमतौर से अंगिया के नाम से मौसूम किया जाता है। बाज़ पढ़े लिखे लोग तहज़ीवन महरम या सीना बंद कह देते हैं अंगिया हिन्दु तहज़ीब की बहुत क़दीम यादगार है।

अंगिया (चोली, काचूरी, कचोकी टिक्की, काँचली, कपीसा)

चोली दकन और बंगाल के इलाके में अंगिया आमतौर पर चोली कहलाती है इसकी बनावट भी षिमाली हिन्दी की अंगिया से बिलकुल मुख्तलिफ़ कमरी की सूरत की होती है इस इलाक़े में षिमाली हिन्द की अंगिया का न कोई मफ़हूम है और न चलन। गुजरात के बाज इलाक़े में

चोली को मुक़ामी तौर पर काचरी और कचोकी कहते हैं। यूरोप के बाज़ इलाक़े में अंगिया, टिक्की और काँचली कहलाती है। मैसूर में बाज़ फिर्क़े चोली को कपीसा कहते हैं और यह लफ़्ज़ गालिबन कफ़्चा से कप्सा और फिर कपीसा बन गया है। कफ़्चा फारसी में जामी की एक क़िस्म को कहते हैं। जो क़बा से मिलती जुलती है। अंगिया के जोड़ और उसके सिलाई के हिस्से के इस्तिलाही नाम हस्बे ज़ेल है। उनकी तषरीह गैर जुरूरी है। तस्वीर के देखने से बखूबी ज़ेहन–नषीन हो सकेंगे। (1) पान (टिक्की) (2) ठर्रा (फ़लीता) (3) चिड़िया (4) ख़्वासी (5) दीवाल (दीवार) (6) घाट (7) मुलकट कटोरियाँ। **देखें** तस्वीर पे0।

ओवरकोट (पु0) अंग्रेजी लफ़्ज़ है। हम अपनी जबान में चुग्गा, फर्गुल और लबादा के नाम से मौसूम करते हैं, **देखें** चुग्गा।

उवरमा (पु0) लपेटवाँ सिलाई। **देखें** सिलाई।

ओढ़नी (स्त्री) औरतों का सिर पर ओढ़ने का कपड़ा जो सर से पैर तक पूरे हिस्से को ढके रखता है, उर्दू में इस लफ़्ज़ का मफहूम छोटी लड़कियों के सर पर ओढ़ने के लिये खास हो गया है और बड़ी औरतों के ओढ़ने के कपड़े को दोपट्टा या रूपट्टा कहते हैं।

एकबरा पाजामा (पु0) देखें पाजामा ढ़ीला पाजामा।

बाड़ (स्त्री) देखें टोपी।

बालाबर (पु0) देखें अचकन। **डालना, लगाना** के साथ बोला जाता है।

बटली (स्त्री) देखें चीरा।

बटुवा (पु0) नकदी वग़ैरा रखने की हस्बे जुरूरत छोटी बड़ी बुनी हुयी थैली। उसकी क़दीम वज़अ़ कौसनुमा है। कपड़े का अदना आला, छोटा बड़ा, सादा और वज़अ़दार बनाया जाता और औरतों के लिबास का जुज़ समझा जाता है। देसाव्री नमूने पर चमड़े के आम तौर से किताबी वज़अ़ के बनाए जाते हैं उनको भी बटुवा कहते हैं।

बचकली (स्त्री) छोटी कली। देखें कली।

बख़िया (पु0) नाका जोड़ी, टाँका। **देखें** सिलाई।

बरसाती (स्त्री) बारिष में कपड़ों के ऊपर पहनने का चुग़े की वज़अ़ का मोमजामा की तरह के कपड़े का लबादा।

बुर्क़ा/बुर्क़अ़ (पु0) मुसलमान औरतों का सर से पैर तक लम्बा और ढीला ढाला पर्दे का लिबास जो तमाम जिस्म को ढाँक लेता है और बाहर की चीज़ें देखने को नक़ाब में आँखों के मुक़ाबिल जाली होती है।

बस्नी/बास्नी (स्त्री) लिबास के अंदर के रूख़ नक़दी वगैरा रखने की बनी हुई थैली यानी चोर जेब।

बग़ल (स्त्री) कुर्ते की आस्तीन और कलियों के दरमियान सिला हुआ चौकोर टुकड़ा। **देखें** कुर्ता।

बुकल्ल् (पु0) सीने के ऊपर ओढ़नी (रूपट्टा) का फेर जो ओढ़नी के एक तरफ के पल्लू को सीने के ऊपर से लेकर दूसरी तरफ शाने के ऊपर डाल लेने का नाम है। **मारना** के साथ बोला जाता है।

बंद (पु0) कपड़े की सिली हुई या तागे की बुनी हुई पतली डोरी जो लिबास में बटन या घुंडी तुकमे की जगह लगायी जाती है। **देखें** अंगरखा।

बुन्नी (स्त्री) देखें साड़ी।

बनियान (पु0) जर्सी कुर्ते के नीचे पहेनने का बदन पर चुस्त आता हुआ लिबास जो अमूमन नाफ तक लम्बा और आधी आस्तीनों का होता है और बुनकर तैयार किया जाता है गरम मुमालिक में ऊनी

और सर्द मुमालिक में सूती और रेषमीं बनाये जाते हैं। बनियान को मुक़ामी तौर पर कहीं ज़ेरे जाया, कहीं जर्सी और कहीं शलूका कहते हैं लेकिन बनियान आम नाम है जो हर जगह बोला जाता है।

बेताम बटन (पु0) देखें घुंडी।

बतना (क्रिया) किसी लिबास को बनाने के लिये कपड़े के कतरने का अंदाज़ा करना यानी नापकर सही देखना और कतरने के लिये ठीक निषान लगाना ताकि गलती न हो और कपड़ा ज़ाया न जाये। **प्रयोग** जिन दर्ज़ियों को कपड़ा बैतना नही आता वह कपड़े का ज़्यादा नुकसान करते हैं। कपड़ा ब्योंत में कम पड़ता है।

बेताम पट्टी (स्त्री) देखें फर्षी।

बैंव्त (स्त्री) कपड़े को नाप कर कतरने के लिये सही निषान लगाने का अ़मल। **देखें** बैंतना।

भेस (पु0) संस्कृत वेष, बमानी लिबास जो इंसान जिस्म को ढकने के लिये पहनता है। **बदलना** लिबास तब्दील करना, मुराद आम वज़अ को बदल कर कोई दूसरा रूप अख़्तियार करना।

पाजामा (पु0) नाफ़ से नीचे के धड़ और टाँगों का सिला हुआ लिबास आमतौर से पाजामा के नाम से मौसूम किया जाता है। हिन्दुस्तान में पाजामे का रिवाज मुसलमानों के अहेद से शुरू हुआ। **धोती** पाजामे के मुक़ाबले में हिन्दुओं का निहायत क़दीम और मुरव्विजा लिबास है जो एक बेसिला कपड़ा होता है। जिसको टाँगों के गिर्द लपेटकर कमर में बाँध लिया जाता है। यह लिबास हिन्दुओं को इस कदर महबूब और अज़ीज़ है कि उनके ज़ी इक्तिदार अफराद इसको

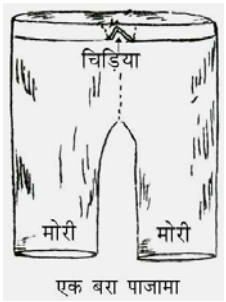

एक बरा पाजामा

हिन्दुस्तान का दरबारी लिबास बनाने के मुतमन्नी है। इसका धोती नाम इस वजह से है कि इसको हर रोज सुबह धोकर पाक कर लिया जाता है। **धोती जोड़ा** धोती की दो फर्द जो एक हिन्दू के पास होना ज़ुरूरी है, क्योंकि रात की पहनी हुई फर्द को नापाक ख़याल किया जाता है, इसलिये उसको सुबह धोना और उसके बदले दूसरी फ़र्द बाँधना पड़ती है। घरों में हिन्दू औरतों का भी यही चलन है। वह निस्फ़ धोती बाँध लेती और निस्फ़ ओढ़ लेती है। **साढ़ी** हिन्दू औरतों का निहायत क़दीम बेसिला लिबास जो धोती की तरह लम्बी चादर होती है, जिसका आधा हिस्सा नीचे के जिस्म में लपेट लिया जाता है और आधा ऊपर के जिस्म और सरीर पर ओढ़ लिया जाता है। साढ़ी धोती के मुकाबले में ज़्यादा वज़अ़दार और सजीली शुमार की जाती है। हिन्दुस्तान में इसका खाज बहुत तेजी से बढ़ रहा है और दुनिया के मुहज्ज़ब लिबासों में इसका शुमार किया जाने लगा है। वज़अ कत़अ़ के नाम से पाजामों के मुख़्तलिफ नाम मषहूर हैं, जो दर्ज जेल हैं। **ढीला पाजामा।** इसकी दो मषहूर किस्में हैं। अव्वल एकबरा पाजामा जिसके पायींचे पूरे एक गज़ के पने के होते हैं। दोम कलीदार पाजामा जिसके पायींचों में कलियाँ बढ़ाकर चौड़े कर लिये जातें हैं किसी ज़माने में देहली, नवाहे देहली और अवध में इसका बहुत चलन था। बेगमात का लिबास शुमार किया जाता था। अब तक उस तरफ़ इसका चलन बाकी हैं लेकिन आम तौर से कम

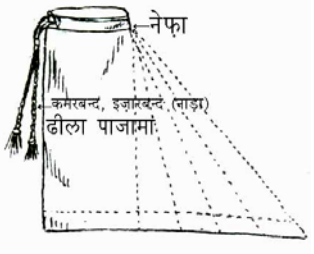

हो रहा हैं। **तंग पाजामा** इसको तंग मोरी का पाजामा भी कहते हैं। इसके पायींचे पिंडलियों पर चुस्त रहते हैं। इसकी भी दो मषहूर क़िस्में हैं, एक चूड़ीदार पाजामा कहलाता है। जिसके पायींचे लम्बे और तखनों पर फेरदार रहते हैं। दूसरा **खड़ा पाजामा** कहलाता है। इसके पायींचे टाँगों की लम्बान के बराबर होते हैं और पहेनने में सीधे रहते हैं। इसमें बाज़ पतलून की वज़अ़ के खुली मोरी के होते हैं और बाज़ तंग मोरी कें इनका बाज़ चलन आम है। **तंग मोरी का पाजामा** जो आड़ी तराष का होता है। वह उरेबदार या आड़ा पाजामा कहलाता है। उरेबदार पाजामे का देहली, आगरा और लखनऊ व नवाहे लखनऊ में अब तक रिवाज है। **षलवार** पंजाब और सरहद का ख़ास पाजामा। इसका पायींचा बहुत घेरदार होता है। मगर इसकी मोरी छोटी रखी जाती है। इस क़िस्म को तरवार (तलेदार) ग़रारा और ख़लख़ला भी कहते हैं। **सुतना और सुत्तन** पंजाबी जबान में पाजामे का नाम और अज़ार भी कहते हैं। **पायींचा** पाजामे का वह हिस्सा जो टाँग में रहता है। **कुंदा** पायींचे की गली जो पायींचे का घेर बढ़ाती है। **रूमाली** मिचानी, दोनों पायींचों के जोड़ पर सिला हुआ लम्बूतरा चौकोर टुकड़ा। **लगाना, डालना के साथ बोला जाता है। मोरी** (मोहरी) पायींचे का मुँह जिसमें से पैर डाला जाता है। **नेफ़ा** पाजामे के सिरे पर कमरबन्द डालने को करीब एक गिरह चौड़ी और दोहरी सिली हुई पट्टी। **चिड़िया** नेफे का समोसेनुमा सिला हुआ

मुँह। **थिग्ली** कुंदे और रूमाली के ज़ोड़ों की चौपड़ सिलाई पर कपड़े का गोल छोटा पेवंद।

पाखा (पु0) देखें किवाड़ियाँ। टोपी के चंदबे का कोई हिस्सा। **देखें** टोपी।

पान (पु0) देखें अंगिया।

पायींचा (पु0) देखें पाजामा।

पिटारीनुमा टोपी (स्त्री) देखें टोपी।

पटका (पु0) कमर पर बाँधने का कपड़ा जो बतौर कमरपेटी कमर से लपेट लिया जाता है।

पिटमल्ला (पु0) पिछवा, पिछवाई, अचकन, अंगरखे, कुर्ते वग़ैरा का पिछला यानी पेट के ऊपर का हिस्सा जो तने के मुक़ाबिल होता है।

पट्ठा (पु0) गरेबान के चाक की ऊपर की गोट को इस्तिलाह में पट्ठा कहते हैं। जिसमें काज बने होते हैं। **चौड़ी गोट** जो किसी कपड़े की कोर पर लगाई जाये, हाषिया, सिंजाफ़ और पट्ठे के नाम से मौसूम की जाती है।

पिशवाज़ (जामा)

पिछवा/पिछवाई (पु0) देखें पिटमल्ला।

परवा (पु0) देखें अंगरखा।

पिष्वाज (स्त्री) जामा, अंगरखे की वज़अ़ का घेरदार दामन का लिबास। घेर लहंगे की तरह का होता है। पहले ज़माने में उमरा व बेगमात लिबास के ऊपर बतौर बुर्क़ा पहना करते थे और जामा के नाम से मौसूम किया जाता था। फ़ीज़माना देहली और लखनऊ की गाने वाली औरतें गाने की महफ़िल में गाने नाचने के लिए पुरतकल्लुफ़ जामा पहनकर आती हैं जो उन इलाकों में पिषवाज़ के नाम से मषहूर है और जामा का लफ़्ज मतरूक है। (रिसाला ''दरबारे–आसफ़िया'' (क़लमी

नुस्ख़ा) मअल्लिफ़ा लाला मंसाराम पेषकार दरबारे आसफ़ी में पिषवाज़ को जामा का दूसरा नाम लिखा है। **जागली** पिषवाज़ की क़िस्म का लिबास। अवध के बाज़ इलाकों में मुक़ामी तौर पर जागली कहलाता है।

पक्की सिलाई (स्त्री) बख़िये की सिलाई जो आसानी से न उधड़ सके।

पगड़ी (स्त्री) पगोटा, मुंडसा, साफ़ा, दस्तार, शमला, अमामा, सरबत्ती। सर का मर्दाना लिबास जो हस्बे ज़रूरत एक लम्बे बेसिले कपड़े को सर के गिर्द लपेटकर बना लिया और मुख्तल्फ़ नामों से मौसूम किया जाता है, हस्बे–ज़ेल है पट्टीदार पगड़ी चूड़ीदार पगड़ी पगड़ी सेठीपगडी खिड़कीदार पगड़ी, नस्तअलीक पगड़ी (दस्तार) चकवेदार पगड़ी, सेठीपगड़ी (सरबती, बटली, चीरा) मंदील।

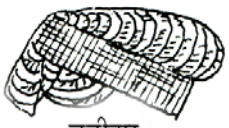
चुड़ीदार

सेठी पगड़ी

पलीता/फलीता (पु0) गोट या गिरेबान के पट्ठे की सिलाई में दिया हुआ भाँजवाँ डोरा जिससे कोर की मज़बूती और तनाव क़ायम रहता है।

प्लेट (स्त्री) दामन या और किसी सिले हुए कपड़े की लम्बान को छोटा करने के लिए हस्बे–ज़ुरूरत दोहरा मोड़कर सी देने को इस्तिलाह में प्लेट कहते हैं। प्लेट अंग्रेज़ी ज़बान का लफ़्ज है, जो उर्दू में ज़बाँ ज़दे आम है **डालना** के साथ बोला जाता है। कमीज़ की आस्तीन को छोटा करने के लिए भी प्लेट डालते हैं। **देखें** झालर।

पिंडलीबंद (पु0) पिंडलियों पर बाँधने की पट्टी या पट्टियाँ जो फौज और पुलिस के ज़वान कवाअेद के वक़्त आम तौर से बाँध लेते हैं।

पोतड़ा (पु0) चड्डी, पैदा हुए बच्चे की जांग में बाँधने का चौकोर सिला हुआ कपड़ा जो चंद माह तक बतौर जाँघिया इस्तेमाल किया जाता है।

पोरदानी/पोर्वा (स्त्री) देखें अंगुष्ताना।

पोस्तीन (स्त्री) आम क़िस्म की पष्मदार खाल का सिला हुआ नीमा आस्तीन या अंगा।

पैतावा (पु0) देखें जुर्राब।

पेषगीर (पु0) लिबास के ऊपर सामने के रुख़ बाँधने का कपड़ा जो डाक्टर, नर्स और दाई वग़ैरा अपने कामों के वक्त बाँध लेते हैं **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

पैवंद (पु0) लिबास के कटे फटे हिस्से पर लगाया हुआ जोड़ **लगाना** के साथ बोला जाता है।

फन्ना (पु0) देखें धोती।

फेंटा (पु0) पगड़ी की तरह मामूली तौर पर सर पर लिपटा हुआ छोटा कपड़ा। छोटी और बेतरतीब बँधी हुई पगड़ी।

फैंटा

ताज (पु0) देखें मुकुट।

ताष (पु0) फौजी कोट या कमीज की जेब के मुँह का ढक्कन। **देखें** क़मीस।

ताखन (स्त्री) देखें टोपी।

तुरपावन/तुरपाई (स्त्री) लुढ़यावन। **देखें** सिलाई।

तुरपना (क्रिया) कपड़े की सिलाई को मोड़कर दोबारा सीना। **देखें** तुरपावन।

तुर्की टोपी (स्त्री) देखें टोपी।

तरवार/तिलेवार (स्त्री) देखें पाजामा।

तुक्मा (पु0) घुंडी का हल्का जिसमें घुंडी अटका दी जाती है। **देखें** घुंडी और अंगिया।

तिलेदानी (स्त्री) अल्पटी। सीने की छोटी मोटी, मामूली चीजें रखने की थैली। देहली और नवाहे देहली में तिलेदानी के नाम से मअ़रूफ़ है। मुमकिन है कि यह लफ़्ज़

www.hindisamay.com

तला हो और किसी ज़माने में सोना या सोने की छोटी मोटी चीज़ रखने की थैली या संदूक़ची को कहते हैं। लेकिन अब इस लफ़्ज़ का यह मफहूम बिल्कुल मतरूक है। सिर्फ़ पहला मफ़हूम देहली और लखनऊ वग़ैरा में आम है।

तमीअंग (स्त्री) बाज़ मुक़ामात पर साढ़ी को कहते हैं।

तना (पु0) अगाड़ी, अगवाई, कुर्ते, क़मीज़, अचकन वग़ैरा का सामने का हिस्सा जिसमें गिरेबान का चाक होता है।

तंगमोहरी का पाजामा (पु0) देखें पाजामा।

तोषक (स्त्री) गब्बा, गद्दा। दोहरे कपड़े में रूई भरकर तैयार किया हुआ पलंग का फ़र्ष या बिछौना। उर्दू में गब्बे और गद्दे से मुराद छोटी तोषक होती है, जो बतौर मस्नद बिछाई जाये। **गद्दी** मामूल से छोटा बच्चों का गद्दा।

तोई (स्त्री) फ़ीता, पट्टी, कोर, गोट। ज़ुरूरत और कपड़े की हैसियत के लिहाज़ से अद्ना,आला, सादा और ज़रदोज़ी काम की बनाई जाती है और मुख़्तालिफ़ नामों से मौसूम की जाती है।

तहबंद (स्त्री पु0) नीचे के धड़ को ढकने का कपड़ा जो धोती की तरह टाँगों के गिर्द लपेटकर कमर पर बाँध लिया जाता है। पंजाब में लुंगी कहलाता है।

तहपोष (पु0) ज़ेरजामा, बदनछुपाऊ कपड़ा जो ऊपर के लिबास के नीचे पहना जाय। अंग्रेजी में पेटीकोट कहलाता है।

तहदर्ज़ (स्त्री) तुरंत का नया सिला हुआ कपड़ा जिसकी तह भी न टूटी हो।

तेप्ची (स्त्री) देखें सिलाई।

तीरा (पु0) कमीज़ के पिटमिल्ले के सिरे पर सिली हुई पट्टी जो कंधे जोड़ के साथ मिला दी जाती है। **देखें** कमीज।

थिग्ली (स्त्री) संस्कृत में स्थागा कहते हैं। छोटा और गोल वज़अ का पेबंद। **देखें** पाजामा।

टाँका (पु0) सिलाई के सिलसिले की एक आँट, बल या फेर जिससे कपड़े के दो टुकड़े आपस में जुड़ जाते हैं। मुसलसल टाँकों का मजमूआ सिलाई कहलाती है। **लगाना, भरना, मारना** के साथ बोला जाता है। सिलाई शुरू करना सीवन की इब्तदा करना। **उघड़ना, टूटना, खुलना, निकलना**। सिलाई के टाँगे या टाँका अलाहिदा होना सीवन का जोड़ अलाहिदा हो जाना। **टप्पा** मामूल से ज्यादा लम्बा और खुला हुआ टाँका जो सुई के एक फेर में आए। हैदराबाद (दकन) में खुतूत की दरआमद और बरआमद को टपा आना और टपा जाना कहते हैं और खुतूत के दादो सितद (लेनदेन) का दफ्तर टप्पा खाना कहलाता है। मुमकिन है कि हरकारे के ज़रिये खुतूत रसानी का मुक़र्रिरा फासला जो एक हरकारा मुक़र्रिरा वक़्त पर तय करे टप्पा कहलाता हो उससे लफ़्ज़ टप्पाख़ाना कहलाया जाने लगा। बन्दूक़ की गोली की मार के फ़ासले को भी गोली का टप्पा कहते हैं।

टप्पा (पु0) देखें टाँका।

टिक्की (स्त्री) पान। **देखें** अंगिया। यूरोप के क़सबात में अंगिया की कटोरी (मुलकट) को भी टिक्की कहते हैं और मुराद अंगिया लेते हैं।

टिंट (स्त्री) अंटी। **देखें** धोती।

टुमना/टूम्ना (क्रिया) सिलाई के लम्बे टाँके भरना।

टोप (पु0) कनटोप। **देखें** टोपी।

टोपी (स्त्री) सर का लिबास। बनावट के लिहाज़ से इसके हस्बे ज़ेल इस्तिलाही नाम मषहूर हैं।

पिटारीनुमा टोपी आम

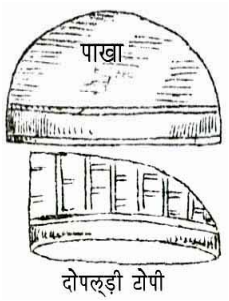

दोपल्ड़ी टोपी

तौर से गोल होता है, अद्‌ना, आला सादी और ज़री के काम की बनाई जाती है। देहली, नवाहे देहली और मेरठ में इसका बहुत चलन है। **किष्तीनुमा टोपी** लम्बोतरी, नाव के मुषाबा, ऊँची बाड़ और बैज़वी चंदुवे की टोपी। रामपुर और नवाहे रामपुर में इसका रवाज़ है। हिन्दू लोग इस वज़अ से मिलती जुलती टोपी पहनते थे। इस वज़अ से मिलती जुलती मामूली कपड़े की किष्तीनुमा टोपी को हिन्दुस्तानी कौमपरस्त अपना रहे हैं। **दो पल्ड़ी टोपी** दो पाखो की निस्फ़ दायरे की शक्ल की टोपी जो सर पर चिपक जाती है, मुरादाबाद, बरेली, लखनऊ और नवाहे लखनऊ में इसका बहुत खाज है। अदना, आला हर क़िस्म की बनाई जाती है।

चौगोषिया टोपी चार पाखों की कुब्बानुमा तैयारषुदा टोपी, मुगल शहजादा की ईजाद और उस अहेद की यादगार है। इसलिए मुगलई टोपी भी कहलाती है। देहली के क़दीम शुर्फ़ा बहुत दिनों तक इस वज़अ को निभाते रहे। उनके साथ साथ इस टोपी का भी करीब करीब खात्मा हो गया।

अर्क़चीन गोल वज़अ की टोपी। इसमें चंदुवा नहीं होता बल्कि बाड़ के हिस्से को बड़ा करके चंदुवा बना लिया जाता है। **तुर्की टोपी** सुर्ख़ बानात की ऊँची बाड़ की टोपी जो किसी जमाने में तुर्कों के फौजी लिबास में शामिल थी अब मिस्रियों की फौजी टोपी है। हिन्दुस्तान में तालीमयाफ़्ता मुसलमानों में इसका रवाज है। **ताखन** ख़ास वज़अ की पिटारीनुमा टोपी जो पारसी टोपी के नाम से मषहूर है और उस कौम के बुजुर्ग इसको अपनी कौमी टोपी समझते हैं। ताखन लफ़्ज़ तआक़ा या ताक़ी का ग़लत तलफ्फुज़ है। **कुलाह** मख़रूती शकल की टोपी जो हिन्दुस्तान के सरहदी लोग पहनते हैं और इसपर पगड़ी भी बाँधते हैं। सरहद के बाज़ मुक़ामात पर इस टोपी को ताक़ा भी कहते हैं। **बाड़** टोपी की ऊचान। **चंदुवा** बाड़ के ऊपर का गोल हिस्सा। **पाखा** चौगोषिया टोपी की बाड़ के ऊपर के हिस्से का कोई एक रुख़ और दोपलड़ी टोपी का कोई एक पल्ला या पाखा टोपी के चंदुवे का कोई हिस्सा। **टोप** बड़ी टोपी। जो कानों को ढक ले। इसको कनटोप भी कहते हैं।

टीप (स्त्री) देखें ओढ़नी।

ठर्रा (पु0) फलीता। अंगिया के हाषिये की गोट के अन्दर दी हुई मोटी डोरी। **देखें** अंगिया।

जाकिट (स्त्री) देखें सदरी।

जाग्ली (स्त्री) देखें पिष्वाज़।

जामा (पु0) देखें पिष्वाज़।

जाँगिया (स्त्री) घुटन्ना, कछ, कछनिया, चड्ढी, गुर्गी, ग़र्क़ी, नेकर। आधे पायींचों या घुटने से ऊपर तक का पाजामा।

जुब्बा (पु0) चुगे की क़िस्म का लिबास। **देखें** चोगा।

जुर्राब (स्त्री) मोजा। पैतावा पैरों में पहनने का लिबास जुर्राब घुटने तक लम्बे चौड़े मोजे को कहते हैं और मोजा आधी पिंडली तक लम्बा होता है। उर्दू में मोजा और जुर्राब एक ही मानों में बोला जाता है। हैदराबाद (दकन) में मोज़े और जुर्राब के

बजाय पैतावा कहते हैं। जो ख़ास मुक़ामी इस्तिलाह है। शिमाली हिन्द में लफ़्ज़ पैतावा चमड़े की कफ़ेपाई के लिए बोला जाता है।

जर्सी (स्त्री) देखें बनियान।

जड़ावल (स्त्री) जाड़े के मौसम का गरम लिबास। जाड़ों के कपड़े।

जुज़दान (पु0) किताब के औराक़ रखने का बस्ता। उर्दू में यह लफ़्ज़ कुरआन शरीफ के ग़िलाफ़ों के लिए मख़सूस हो गया है।

जम्पर (पु0) साड़ी पर पहनने का गला खुला हुआ नीम आस्तीन कुर्ता। अंग्रेजी में फ्राक कहलाता है। लफ़्ज फ्राक उर्दू में आम हो गया है।

जोड़ा (स्त्री) ऊपर और नीचे के धड़ का पूरा लिबास यानी कुर्ता और पाजामा और मुरादन पूरा और मुकम्मल लिबास, जिसमें दस्तार, नेमा, जामा, इज़ार और पटका वग़ैरा सब शामिल हो। **प्रयोग** सिपहसालार ने कारगुजारी के इनाम में बादषाह के हुजूर से जोड़ा और घोड़ा पाया।

जेब (स्त्री) कीसा, पाकेट। मामूली और जुरूरत की चीज़ रखने को लिबास में हस्बेमौक़ा और मौजूँ सिली हुई थैली। **चोरजेब** अन्दर के रुख़ नामालूम सिली हुई जेब जो ऊपर न दिखाई दे। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

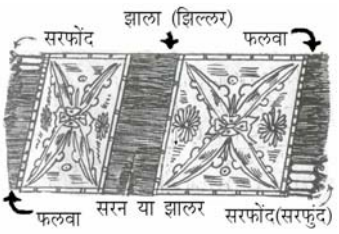

झालर (स्त्री) चुन्नटदार गोट या पट्टी जो किसी कपड़े की कोर पर बतौर तोई या पट्ठा लगाई जाय।

चाक (पु0) कुर्ते या क़मीज़ के गिरेबान का खुला हिस्सा। दो दामनों के घेर के जोड़ पर का थोड़ा सा खुलाव हो। **देखें** कुर्ता।

चप्ड़ास (स्त्री) काज पट्टी, पट्ठा। **देखें** ग़रेबान कुर्ता। कमर पटका या कमरपेटी।

चिपकन (स्त्री) देखें अचकन। आइने अकबरी में असल लफ़्ज़ लिखा है। लखनऊ में चिपकन और देहली व नवाहे देहली में अचकन मषहूर है।

चड्ढी (स्त्री) देखें जाँगिया।

चिडिया (स्त्री) देखें पाजामा।

चिकमन (स्त्री) देखें चिपकन।

चिकौती (स्त्री) कुर्ते या अचकन वगैरा के चाक के खुलाव की हद का बंद जो कपड़े की धज्जी की तिकोनिया थिगली की शकल में सी दिया जाता है। **देखें** (चाक़ओटी)।

चकवेदार पगड़ी (स्त्री) देखें पगड़ी।

चुन्नट (स्त्री) झालर का सिमटाव। **देखें** झालर।

चंदुवा (पु0) देखें टोपी।

चिंदी (स्त्री) कपड़े की नाकारा धज्जी। शिमाली हिन्द में चिंदी का लफ़्ज़ आमतौर पर धज्जी के मानों में नहीं बोला जाता। दकन में बोला जाता है। वहाँ रोज़मर्रा में इंदीं की चिंदी निकालना कहते हैं। जिसका मतलब किसी चीज़ की बारीकियाँ ढूँढ़ना। खोज निकालना होता है। **देखें** धज्जी।

चौबग़ला (पु0) देखें अचकन।

चोरजेब (स्त्री) देखें जेब।

चूड़ियाँ (स्त्री) चूड़ीदार पाजामे के पायींचे के फेर या बल जो टखने पर पड़ते हैं। **देखें** चूड़ीदार पाजामा।

चूड़ीदार पाजामा (पु0) देखें पाजामा।

चूड़ीदार पगड़ी (स्त्री) हैदराबाद (दकन) में मिर्धे लोग बाँधते हैं। **देखें** पगड़ी।

चोगा/चुगा (पु0) जुब्बा, अबा, फ़र्गुल (फ़रगुल) लबादा, दगला, ओवरकोट। जाड़े के

मौसम में लिबास के ऊपर पहनने का ढीला ढाला पिंडली तक लम्बा जामा, अब आम तौर से ओवरकोट के नाम से मषहूर है और यूरोपियन तर्ज़ का सिला हुआ पसंद किया जाता है। देसी वज़अ़ का सिला हुआ रूईदार मुक़ामी तौर पर फर्गुल, लबादा और दगले के नाम से मौसूम किया जाता है।

चौगोषिया टोपी (स्त्री) देखें टोपी।

चोला (पु0) दामनदार चोली। अंगा, दगला।

चोली (स्त्री) कुरआन शरीफ़ की जिल्द का गिलाफ़ उर्दू में इस्तिलाह में चोली कहलाता है। **देखें** अचकन।

चीरा (पु0) बटली, सरबत्ती, सेठी या मारवाड़ी पगड़ी। **देखें** पगड़ी।

ख़ल्ख़ला (पु0) देखें पाजामा।

ख्वासी (स्त्री) देखें अंगिया।

ख़य्यात़ (पु0) देखें दर्ज़ी।

दामन (पु0) धड़ के लिबास का चोली से नीचे लटका हुआ घेरदार हिस्सा। **देखें** अचकन।

दर्ज़ी (पु0) ख़य्यात़, सूजी, लिबास सीने वाला कारीगर।

दस्तार (स्त्री) इसको खिड़कीदार पगड़ी भी कहते हैं। **देखें** पगड़ी।

दस्ती (स्त्री) देखें रूमाल।

दगला (पु0) देखें अचकन। चुग़ा।

दोपल्ड़ी टोपी (स्त्री) देखें टोपी।

दोतई/दोतही (स्त्री) दुहर। **देखें** दुलाई।

दुलाई (स्त्री) रज़ाई की क़िस्म का दोहरा सिला हुआ कपड़ा (ओढ़ना) गुलाबी मौसम के लिये तैयार किया जाता है। **मयानतह** दुलाई के अबरे और अस्तर के दरमियान (जब अबरा नाज़ुक कपड़े का होता है) एक और कपड़ा लगाते हैं जो इस्तिलाह में मियान तह कहलाता है।

दीवाल/दीवार (स्त्री) देखें अंगिया।

धज्जी (स्त्री) चिंदी। कपड़े का कटा हुआ कतरा हुआ छोटा और मामूली टुकड़ा जो ज़्यादा से ज़्यादा एक या दो अंगुल चौड़ा हो। इससे ज़्यादा चौड़ी, पट्टी कहलाती है।

धोती/धोती जोड़ा (स्त्री) हिन्दुओं का पाजामा का क़ायम मुकाम लिबास। तफ़सील के लिए। **देखें** पाजामा।

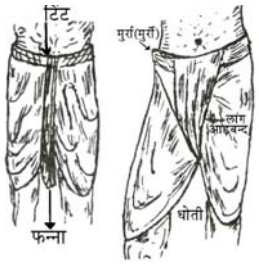

फन्ना धोती का सिरा जो सामने टाँगों में लटका रहे। **टिन्ट** अंटी, धोती की गिरह जो कमर पर लगाई जाय और जिससे कुछ नक़दी या छोटी मोटी चीज़ रख ली जाय। **लाँग** कछौटा, लंगर, आड़बंद, पछेटा, धोती का सिरा जो आगे से टाँगों के बीच में निकालकर पीछे कमर की लपेट में उड़स लिया जाये। **मुर्रा** मुर्री, धोती का सिरा जो कमर पर लपेट लिया जाय।

ढूपट्टा/दोपट्टा (पु0) टीप, रूपट्टा, ओढ़नी, औरतों के सर और शानों पर ओढ़ने का कपड़ा जो बड़ेपने का होने की वजह औरतों की इस्तिलाह में दुपट्टा कहलाता है। जिसको बनाने के लिए बाज़ अहले फिक्र रूपट्टा कहते हैं।

डोरा/डोरे (पु0) निगंदा सिलाई।

ढीला पाजामा (पु0) देखें पाजामा।

रालबर (पु0) देखें हँसलीबंद, बिब। **देखें** हँसलीबंद।

रज़ाई (स्त्री) रूई भरी हुई दोलाई, रज़ाई असल में कष्मीर के बने हुए ऊनी फूलदार कपड़े का नाम था। जो उमरा के रात के ओढ़ने के लिए तैयार किया जाता था। अब मज़कूर उस सदर मफ़हूम के लिए बोला जाता है।

रूपट्टा (पु0) देखें दुपट्टा।

रूमाल (पु0) हाथ मुँह पोंछने का जेब में रखने के लायक कपड़ा। हैदराबाद (दकन) में दस्ती कहते हैं और कँधे पर डालने के दो गज़ लम्बे कपड़े को रूमाल कहा जाता है।

रूमाली (स्त्री) मियानी। **देखें** पाजामा।

ज़ेरजामा (पु0) फ़ार्सी में क़बा कहते हैं। उर्दू में इससे मुराद बनियान लिया जाता है। **देखें** बनियान।

साड़ी (स्त्री) बुन्नी, तमी अंग, हिन्दू मर्दों की धोती के मुक़ाबिल औरतों का लिबास। **देखें** पाजामा।

साया (पु0) देखें लंहगा।

सुत्तन/सुत्ना (पु0, स्त्री) देखें पाजामा।

सरबत्ती (स्त्री) बटली। **देखें** चीरा और पगड़ी।

सिलाई/सीवन (स्त्री) कपड़े के दो टुकड़ों को सुई तागे से टाँके लगाकर जोड़ने का अमल सीने की उजरत सिलाई के मुख़्तलिफ़ नमूनों और बनावटों के हस्बे–ज़ेल नाम है **ओर्मा** लपेटवाँ सिलाई कपड़े की दो कोरों को मिलाकर फेरदार टाँके भरने को इस्तिलाह में ओर्मा कहते हैं। **भरना, करना** के साथ बोला जाता है। **बख़िया** नाका जोड़ी टाँका। टाँके से टाँका मिली हुई सिलाई। इसको पक्की सिलाई भी कहते हैं और सब सिलाइयों में आला समझी जाती है। **तुरपावन** कपड़े की कोर को अन्दर के रुख़ मोड़कर सीने का अमल। कपड़े के किनारे का तार न निकलने के लिये यह अमल किया जाता है। **तुरप्ना/तुरपाई** पंजाब में लुढ़ियावन और लुढ़ियाना कहते हैं। **तेप्ची** कपड़ों के दो टुकड़ों के जोड़ने के लिए सीधी बारीक सिलाई। इसको कच्ची सिलाई भी कहते हैं। **भरना** के साथ बोला जाता है। **डोरा** निगंदा। कपड़े के दो टुकड़ो को ऊपर नीचे जमा कर रखने को लम्बे लम्बे टाँके। **डालना** के साथ बोला जाता है। **कोक** शलंगा, लंगर। कपड़े की कनी मोड़ने को लगाये हुये लम्बे टाँके। **भरना, मारना** के साथ बोला जाता है।

सिंजाफ़ (स्त्री) देखें पट्ठा।

सूजी (पु0) देखें दर्ज़ी।

सोड़ (पु0) लिहाफ़ या बिछौना।

खाने को खिचड़ा, ओढ़ने को सोर,
गुरूजी मुक्ति यही है कुछ और।

सोज़्नी (स्त्री) सोज़नकारी काम की पतली तोषक, जो दोहरे कपड़े में रूई भरकर और गुलबूटेदार निगंदे डालकर दरी की तरह बना ली जाय।

सोज़नी फ़लीताकष (स्त्री) वह सोज़नी जिसके निगंदों की सिलाई में भाँजवाँ मोटा डोरा दिया जाये।

सुई (स्त्री) देखें पेषा–ए–सुईसाज़ी। **मारना** सिलाई का काम करना। **प्रयोग** सुईमारे का पैसा बड़ी मेहनत का होता है। दिन भर सुई मारो जब चार पैसे आते है। **पिरोना भरना** सुई में तागा डालना।

सीना (क्रिया) सिलाई करना। **प्रयोग** सीना पिरोना मेहनत से आता है।

सीनाबंद (पु0) देखें अंगिया।

सीवन (स्त्री) देखें सिलाई।

षिलंगा (पु0) कोक, लंगर। **देखें** सिलाई।

शलवार (स्त्री) देखें पाजामा।

शलूका (पु0) सीनाबंद। कमरी की वज़अ की चोली।

शेरवानी (स्त्री) देखें अचकन।

साफ़ा (पु0) देखें पगड़ी।

साफ़ा दरअसल एक क़िस्म के कपड़े का नाम है जो पगड़ी के लिए पंजाब में तैयार

किया जाता था। उससे मजाज़न पगड़ी मुराद लिया जाने लगा। जिसतरह सिरा लटकी हुई पगड़ी को दकन में षम्ला कहने लगे।

सदरी (स्त्री) कमरी, वास्कट (अंग्रेजी)।

फ़तूई (अरबी) बग़ैर आस्तीन और दामन का नाफ़ तक का लिबास जो सीने और कमर को ढक ले और जिस्म पर चुस्त रहे।

मिरज़ई कमरी की इस्लाहषुदा सूरत जिसकी इख़्तिराअ़ मुगलों से मंसूब की जाने की वजह मिरज़ई कहलाती है। इसमें आधी या पूरी आस्तीन और किवाड़ियों में दो छोटी छोटी कलियाँ लगी होती हैं। **नीमा आस्तीन** मिरज़ई से किसी क़दर बड़ी, छोटे या आधे दामनों की मिरज़ई जो अचकन की वज़अ़ पर होती है।

ताक़ा/ताक़ी (पु0, स्त्री) देखें टोपी।

अ़बा (स्त्री) देखें चुगा।

अ़र्क़ चीन (स्त्री) देखें टोपी।

अ़मामा (पु0) देखें पगड़ी।

ग़रारा/ग़रारेदार पाजामा (पु0) देखें पाजामा।

ग़र्की (स्त्री) देखें जांघिया।

ग़िलाफ़ (पु0) खोली तकिये वग़ैरा की थैले या थैली की वज़अ़ की पोषिष।

फ़तूई (स्त्री) देखें सदरी।

फ्राक (स्त्री) देखें जम्पर।

फर्जी (स्त्री) बग़ैर बन्द का चुग़े की क़िस्म का लिबास जो सामने से खुला रहता है। लिबास के ऊपर बतौर पर्दे के होता है। **देखें** चुग़ा।

फ़र्द (स्त्री) रज़ाई या दुलाई का अबरा, ऊपर का कपड़ा जो उमदा क़िस्म का खुषनुमा होता है। लखनऊ और नवाहे लखनऊ में रज़ाई के छपे हुये अबरे को इस्तिलाह में फ़र्द कहते हैं।

फ़र्षी (स्त्री) कुर्ते, कमीज़ वग़ैरा के गिरेबान की बोतामपट्टी। **देखें** गिरेबान और कुर्ता।

फ़र्गुल/फरगुन (पु0) देखें चुग्गा।

क़बा (स्त्री) देखें अचकन।

क़मीज़ (स्त्री) जदीद वज़अ़ का कुर्ता जो क़दीम वज़अ़ के कुर्ते की निस्बत किसी क़दर मुख़्तलिफ़ होता है। इसमें उससे कुछ चीजें कम और कुछ ज़्यादा होती हैं। दोनो की बनावट और हिस्सों का फ़र्क देखने से बखूबी वाज़ेह होता है।

क़ैंची (स्त्री) कतरनी। दर्ज़ी का कपड़ा कुतरने का औज़ार।

काज (स्त्री) बोताम (बटन) का घर जिसमें बटन अटका दिया जात है। **देखें** कुर्ता।

काजपट्टी (स्त्री) देखें चपड़ास।

काच्री (स्त्री) देखें अंगिया।

कालर (पु0) अच्कन और क़मीज वग़ैरा के गले की खड़ी पट्टी।

काँचली (स्त्री) देखें अंगिया।

कपसा/कपसिया (स्त्री) देखें अंगिया।

कतर ब्यूँत (स्त्री) कपड़े की नाप और तराष। **करना** के साथ बोला जाता है।

कत्रन (स्त्री) कपड़े की बची हुई धज्जियाँ जो कपड़े की तराष या काट में निकले। **निकालना** के साथ बोला जाता है। कैंची, कतरनी।

कटोरियाँ (स्त्री) मुल्कट, मुकट। **देखें** अंगिया।

कच्ची सिलाई (स्त्री) तेपची की सिलाई। वह सिलाई जो आसानी से खुल जाये।

कचोकी (स्त्री) देखें अंगिया।

कछ/कछनियाँ (पु0, स्त्री) देखें जाँगिया।

कछोटा (पु0) देखें धोती।

कुर्ता (पु0) ऊपर के जिस्म पर पहनने का

क़दीम वज़अ़ का ढीला ढाला छोटे दामन और पूरी आस्तीन का लिबास।

कुर्ती (स्त्री) अंगिया के साथ पहनने का क़दीम वज़अ़ का सिला हुआ कपड़ा जो पेट और पीठ के हिस्से को ढकता है, हिन्दुस्तान के क़दीम लिबास में से है। आगरा और अवध के इलाके में पुरानी वज़अ़ की दिल्दारा हिन्दू औरतें अब तक अंगिया के साथ कुर्ती पहनती हैं।

कुर्ती

कसना (पु0) पानदान और ख़ासदान वगैरा का ग़िलाफ़ जिसमें उस को रखकर ऊपर से मुँह कसकर बाँध दिया जाता है।

किष्तीनुमा टोपी (स्त्री) देखें टोपी।

कफ़ (पु0) कमीज़ की आस्तीन का इस तरह का सिला हुआ छोटा मुँह जो बटन के ज़रिये खोला बन्द किया जाता है।

कुलाह ( ) **देखें** टोपी।

कुलाह पेच (पु0) कुलाह के ऊपर पगड़ी की तरह बाँधने का कपड़ा।

कली/कलियाँ (स्त्री) मुसल्लसनुमा कतरा हुआ कपड़ा जो अचकन या कुर्ते के दामन का घेर बढ़ाने को दामन में लगाया जाता है। **देखें** कुर्ता। **डालना, जोड़ना, लगाना** दामन में कली मिलाकर सीना।

कमरबन्द (पु0) देखें इज़ारबंद।

कमरतुई (स्त्री) अंगरखे की चोली के नीचे कमर के घेर में सिली हुई पट्टी। **देखें** तूई अंगरखा।

कमरथैली (स्त्री) देखें नेव्ली।

कमरी (स्त्री) देखें सदरी।

कनटोप (पु0) कनछई। **देखें** टोप और टोपी।

कंठी (स्त्री) देखें गरेबान।

कनछई (स्त्री) देखें कंटोप।

कुंदा (पु0) देखें पाजामा।

किवाड़ियाँ (स्त्री) पाखे। **देखें** अचकन।

कोपुन (पु0) संस्कृत कोप्ना। **देखें** लंगोट।

कोट (पु0) यूरोपीय वज़अ़ का दगला।

कोक (स्त्री) देखें सिलाई। **भरना, मारना** के साथ बोला जाता है।

कोकना (मस्दर) **देखें** कोक।

खड़ाई (स्त्री) कपड़े की कच्ची सिलाई जो तैयारी की सिलाई से पहले उसके हिस्से ज़ोड़ने को की जाये।

खिड़कीदार पगडी (स्त्री) देखें पगड़ी।

खल्दी/खलीती (स्त्री) चोरजेब। औरतों के लिबास की जेब। पूरब की देहाती हिन्दू औरतें अंगिया की जेब को देहाती ज़बान में खल्दी कहती हैं। यह लफ़्ज़ ग़ालिबन ख़रीता से खलीता/खलीती और फिर खल्दी हो गया है।

खोली (स्त्री) देखें ग़िलाफ़े तकिया। यह लफ़्ज़ भी शायद खरीते से खोली हो गया है।

गद्दा (पु0) देखें तोषक।

गद्दी (स्त्री) देखें तोषक।

गुदड़ी (स्त्री) छोटे छोटे कपड़े के टुकड़े सीकर बनाया हुआ ओढ़ना या लबादा।

गिर्दी (स्त्री) थाली या पिटारी के अंदर बिछाने का गिर्दे नुमा सिला हुआ कपड़ा।

गुर्गी (स्त्री) देखें जॉगिया।

गरेबान (पु0) संस्कृत ग़िरी बमाने ह़लक़, कुर्ते, अचकन वग़ैरा की गले की कंठी, हल्क़ा गला जिसके बीच में सर में आने के लायक चाक बना होता है। रोज़मर्रा में पूरा हिस्सा मुराद लिया जाता है। **देखें** कुर्ता। **चपड़ास** काजपट्टी। कंठी के चाक की बायीं तरफ की पट्टी। जिसमें बटनों के घर (काज) बनाए जाते हैं। **फर्षी** बोताम पट्टी। कंठी के चाक के दायीं तरफ़ की पट्टी जिसमें बटन टाँके जाते हैं।

गला (पु0) देखें गरेबान।

गुलूबंद (पु0) सर्दी के मौसम में गर्दन में लपेटने का कपड़ा।

गोट (स्त्री) देखें पठ्ठा।

गोलटोपी (स्त्री) पिटारीनुमा टोपी। **देखें** टोपी।

गेंडवा (पु0) गऊतकिया। **देखें** पेषा फ़र्राष। जिल्द अव्वल। पृ0

घाट (पु0) अंगिया के सामने का मुसल्लसनुमा खुला हुआ हिस्सा। **देखें** अंगिया।

घागरा (पु0) संस्कृत घरघरा बमानी घंटियोंदार पेटी। बहुत बड़े घेर का लहंगा जो मारवाड़ की हिन्दू औरतों का क़ौमी लिबास है। **देखें** लहंगा।

घुटन्ना (पु0) देखें जाँगिया।

घगरिया (इस्मे तस्गीर, स्त्री) **देखें** घाग्रा।

घुंडी (स्त्री) कपड़े या तागे की बनी हुई छोटी गोल, गुमची या गोली जो बटन की ईजाद से पहले गिरेबान के चाक को बन्द करने के लिए इस्तेमाल की जाती थी। अब भी अंगरखे और चुग्गे में बटन की जगह लगाई जाती है। इसको डोरे के एक हल्क़े में जो उसके मुक़ाबिल के हिस्से में टंका होता है, अटका देते हैं। इस हल्के का इस्तिलाह में तुक्मा कहते हैं और दोनों को मिलाकर घुंडी तुकमा। हैदराबाद (दकन) में बटन को घुंडी कहते हैं। बटन का लफ़्ज़ आम तौर से नहीं बोला जाता और न घुंडी का, बटन से इलाहिदा कोई मफ़हूम है। बटन यूरोपीय ज़बान का लफ़्ज़ है, जो उर्दू में बोताम के नाम से मअरूफ़ है और बटन भी कहते हैं। **देखें** अंगर्खा।

घेर (पु0) दामन का फैलाव।

लाँग (पु0) देखें धोती।

लबादा (पु0) देखें चुग्गा।

लिबास (पु0) जोड़ा।

लिबासेपाक (पु0) देखें पेष्गीर।

लपेटवाँ सिलाई (स्त्री) ओरमाँ। **देखें** सिलाई।

लत्ता (पु0) संस्कृत (लक्त्का) बेसिला कपड़ा, चादर, धोती ओढ़नी वगैरा।

तन पर नहीं लत्ता।
पान खाऐं अलबत्ता।।

लुढ़ियावन (स्त्री) देखें सिलाई।

लिहाफ़ (पु0) जाड़ों में रात को सोते वक्त ओढ़ने का रूई भरा मोटा लबादा। हैदराबाद (दकन) में लिहाफ़ का कोई मफ़हूम नहीं है सिर्फ़ रज़ाई का लफ़्ज़ बोला जाता है।

लंगर (पु0) षिलंगा, कोक। **देखें** सिलाई व लंगोट।

लंगोट/लंगोटा (स्त्री) कोपुन, (लिंग ओट) शर्मगाह को छुपाने का। शर्मगाह की हद तक का लिबास। बाज़ लोग रूमाली कहते हैं।

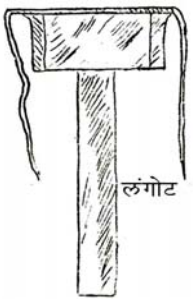

लंगोटी (इस्मेतस्ग़ीर) **(स्त्री) देखें** लंगोट। लंगोट और लंगोटी में यह फर्क है कि लंगोट में ऊपर का कपड़ा इतना चौड़ा होता है जो कूल्हों को ढक लेता है और लंगोटी सिर्फ़ एक पट्टी होती है जो सामने से शर्मगाह को ढकती है।

लुंगी देखें तहबन्द।

लहंगा (पु0) साया (अंग्रेजी) घागरा (मारवाड़ी) बग़ैर पायींचे और रूमाली का धोती या तहबन्द की वज़अ़ का बड़े घेर का पाजामा।

मछलीकाँटा (पु0) देखें सिलाई।

महरम (स्त्री) देखें अंगिया। (महरम में पूरी आस्तीन होती है)।

मुर्रा/मुर्री (पु0 स्त्री) देखें धोती।

मिरज़ई (स्त्री) मीना। **देखें** सदरी।

मगज़ी (स्त्री) दोहरे कपड़े या दुलाई के किनारों के जोड़ में दी हुई पत्ली धज्जी या गोट।

मुग़लानी (स्त्री) बड़े घरों में सीने पिरोने की ख़िदमत अंजाम देने वाली मुलाज़िमा। यह नाम बतौर ख़िताब है। जो ग़रीब शरीफ़ मुलाज़िमा की दिलजोई के लिए इस्तेमाल किया जाता था। इसके जिम्मे घर की आम निगरानी भी होती थी।

मुग़लई टोपी (स्त्री) चौगोषिया टोपी। **देखें** टोपी।

मुकट (स्त्री) इकलैल, ताजदार टोपी, कलग़ीदार टोपी, ताज, मौर, कलग़ी। कृष्ण जी का ताज जिसकी नक़ल हिन्दुओं में दूल्हा को पहनाते हैं। इसको एक क़िस्म का ताज समझना चाहिए।

मंदील (स्त्री) देखें पगड़ी।

मुँड़ासा (पु0) देखें पगड़ी। पगड़ी को पंजाब में मुँड़ासा और साफ़ा कहते हैं। साफ़ा पगड़ी के कपड़े का नाम था उस निस्बत और मुँड़ासा मूँड़ बमानी सर का हिस्सा, की निस्बत से कहलाता है।

मूबाफ़ (पु0) औरतों की चोटी के बालों पर लपेटने की पट्टी या तोई।

मोज़ा (पु0) पैतावा। **देखें** जुर्राब।

मुहरी (स्त्री) पाजामे के पायींचे का मुँह।

मियानतह (स्त्री) देखें दुलाई।

मियानी (स्त्री) देखें रूमाली।

मीना (स्त्री) देखें मिरज़ई।

नाड़ा (पु0) देखें इज़ारबन्द।

नाकाजोड़ी टाँका (स्त्री) देखें बख़िया।

नस्तअ़लीक़ पगड़ी (स्त्री) देखें पगड़ी।

निगंदा/निगंदे (पु0) देखें सिलाई।

निहाल्चा (पु0) शीरख़्वार बच्चों के नीचे बिछाने का गद्दा या गद्दी।

नेफ़ा (पु0) देखें पाजामा।

नीमा आस्तीन (स्त्री) देखें सदरी।

नेव्ली (स्त्री) हम्यानी, कमरथैली। कमर बटुआ कमर केसा। नक़दी रखने की लम्बी थैली जो कमर पर बाँध ली जाय।

वास्कट (स्त्री) देखें सदरी।

हुक (पु0) घुंडी, तुकमें के नमूने पर धात का बना हुआ छोटा आँकड़ और उसके हल्क़ा आँकड़े को इस्तिलाह में नर और उसके हल्क़े को मादा कहते हैं।

हम्यानी (स्त्री) देखें नेव्ली।

3/13 पेषा सिलाई (रफ़ूगरी)

आफ़्ताब माह्ताब (पु0) जामावार की बूटी का रफ़ू जिसमें मुख़्तलिफ़ रंगत का तागा लगाकर मेल मिलाया जाता है। कई रंग के तारों का रफ़ू। **देखें** रफ़ू।

बजाज़ी (पु0) दाब। ऐसे कपड़े का रफ़ू जिसका उलटा सीधा हो। इस रफ़ू का टाँका उल्टी तरफ़ से लिया जाता है ताकि तारों के सिरे उल्टी तरफ रहें।

बुग़ारा (स्त्री) बड़ा सूराख जो कीड़े वग़ैरा के खाने से कपड़े में पड़ जाये। **प्रयोग** शाल को कीड़े ने खाकर बुग़ारे डाल दिये। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

बुलबुले चष्म (पु0) बारीक सूराख़ का रफ़ू यानी ऐसे छोटे सूराख़ का रफ़ू जो आँख की पुतली के मानिंद हो।

बूटी खोदना (क्रिया) जामावार की फटी हुई बूटी के तार निकालकर नये सिरे से रफ़ू के ज़रिये बूटी बनाना।

पतील रफ़ू (पु0) बारीक और झिरझिरे कपड़े का छिदरा रफ़ू।

पच्ची (स्त्री) मामूली और अद्ना क़िस्म का रफ़ू। जिसके ताने बाने के तारों के मिलाने का लिहाज़ न रखा जाये।

पसर (स्त्री) पौधा। **देखें** दुम्बाला।

पौदा (पु0) देखें दुम्बाला।

फोई (स्त्री) पानी की फुवार जो रफ़ू को दी जाती है ताकि इस्त्री से रफ़ू का टाँका जमाया जाये। **देना** के साथ बोला जाता है।

ताराटूट/तागातोड़ (पु0) कपड़े की सरगाह का रफ़ू जिसमें रफ़ू का हर एक तार सिरे पर तोड़ा जाता है और तार का हर फेर क़ायम नहीं रहता।

तारचून (पु0) दरू, बड़े बड़े सुराखों का रफ़ू जिसमें ताने के लम्बे तार डाले जाते हैं यानी कपड़े के ताने और बाने के तारों को मिलाकर तार भरे जाते हैं। इस तरह कि बुनावट बन जाय।

तागा चुन्ना (क्रिया) रफ़ू करते वक़्त नाकारा तार निकालना, रफ़ू के लिए सफ़ाई करना।

तावा/ताओ (पु0) रफ़ू के तारों का फेर या रफ़ू करने का अ़मल। **आना** के साथ बोला जाता है।

तह लगाना (क्रिया) कपड़े के बड़े सूराखों में रफ़ू से क़ब्ल कटे हुये हिस्से को बराबर करने के लिए चन्द कच्चे तागे भरना।

टाँका उठाना/टाँका दबाना (क्रिया) रफ़ू के तारों को ताने बाने के तौर पर भरना, इस तरह कि जब तूल के तारों में अर्ज़ के तौर पर डाले जायें तो एक तार छोड़कर भरना।

टिकमिकी (स्त्री) लहरियेदार कपड़े का रफ़ू।

टीप (स्त्री) तानेबाने के टूटे तारों का जोड़ मिलाना। **करना** के साथ बोला जाता है।

चुनाई (स्त्री) शाल के ख़राब या उभरे हुये तार निकालकर उसकी जगह साफ़ और अच्छे तार भरना। **करना** के साथ बोला जाता है।

दाब (स्त्री) देखें बजाज़ी।

दारू (स्त्री) देखें तारचून।

दुम्बाला/दुंबाला (पु0) पसर, पौधा, रफ़ूगर की सुई के नाके में भाँजवाँ डोरे का पड़ा हुआ हल्क़ा जिसमें ऐसा तार डाला जाता है जो सुई के नाके में उलझता हो या नाके में न आता हो। इसको पसर शायद पीछे तागे में पड़ा रहने की बजह कहते हैं।

रफ़ू (पु0) कपड़े की या सूराख़ वगैरा का बुनाई की तारीक़ पर इस तरह बन्द करने या सीने का अ़मल कि जोड़ मालूम न हो। **करना, भरना** के साथ बोला जाता है।

रफ़ू की हस्बे ज़ैल मषहूर क़िस्में हैं:

1. आफ़्ताब मह्ताब।
2. बजाज़ी (दाब)।
3. बुलबुले चष्म
4. पच्ची
5. ताराटूट (तागाटूट)।
6. तारचून (दरू)
7. टिकमिकी।
8. टीप।
9. पतील या ग़फ़ रफ़ू।

रफ़ूगर (पु0) कपड़े में रफ़ू करने वाला कारीगर।

रफ़ूगरी (स्त्री) रफ़ू करने का पेषा। रफ़ू की मजदूरी।

संगीन रफ़ू (पु0) गफ़ रफ़ू। गुथा हुआ रफ़ू जिसमें ताने और बाने के तार एकबदन हो जायें।

शालदोज़ (पु0) शाल की दुरूस्ती और मरम्मत करने वाला कारीगर। इस कारीगर का ताल्लुक़ शालबाफी से था। लेकिन इस सन्अत को पर्चाबाफ़ी की तरह मुसल्मानों के अहेद के बाद से ज़वाल आना शुरू हुआ, इसलिए शालदोज़ का काम भी कम हो गया। रफ़्ता रफ़्ता उन की हैसियत रफ़ूगरों की रह गई जिनका काम ज़्यादातर पुराने क़ीमती ऊनी पार्चो की दुरुस्ती या रफ़ू करना रह गया है। इस

काम के पेषेवर ज़्यादा तर पंजाब के बड़े शहरों, कष्मीर और देहली में पाये जाते हैं। रफ़ूगरी की इस्तिलाहात की तहक़ीक के वक्त दिल्ली के फ़ैज बाज़ार में शाल दोज़ी के एक क़दीम कारख़ाने को देखने का इत्तिफाक़ हुआ जिस के बानी बुख़ारा से दिल्ली में आकर आबाद हुये थे उनकी औलाद में मिर्ज़ा बरकत उल्लाह बेग नामी और उनके एक ज़ीफ़–उल उम्र भाई कई कारख़ाने के मालिक थे। कारख़ाने में तो कुछ ज़्यादा सामान न था लेकिन मिर्ज़ा साहब की ज़बान पर सब कुछ था उनसे बहुत सी मुफीद मालूमात और इस्तिलाहात मालूम हुई।

खाँच (स्त्री) काटन जो किसी नोकदार चीज़ से उलझकर कपड़े में पड़ जाये।

गुथाई (स्त्री) बेतरतीब और भोंडेंपन से कपड़े में रफ़ू करना या सीना जिस में न ताने बाने की सीध का ख्याल रहे और न जोड़ साफ़ और हम सतह हो।

गूथना (क्रिया) देखें गुथाई।

दूसरी फसल तज़ईने लिबास
(चिकनसाज़ी, ज़रबाफ़ी व ज़रदोज़ी)
1 पेषा अत्तूकारी
चिकनसाज़ी/(चिकनसोज़ी)

उत्तू (पु0) किसी धारदार आहनी औज़ार से कपड़े की सतह पर फूल, बूटे और धारियों के नक्ष उभारने की सन्अत, जो औज़ार को गर्म करके और सतह पर दबाकर फेरने से बनती है। यही सन्अत छापे और कढ़तकारी की इब्तिदा थी **करना** के साथ ओला जाता है। उत्तूकारी की सन्अत का अब बिल्कुल ख़ात्मा हो गया है। अगर अदब में इसका नाम न आता तो शायद नाम भी मिट जाता। इस्तिलाहात की तहक़ीक़ के वक्त देहली में एक जईफुलउम्र और षिकस्ताहाल कारीगर मिल गया, जिससे इस सन्अत की, जो बहुत मामूली दर्जे की है, मालूमात हासिल हुई।

यूँ क़दम फूँक फूँक कर धरते हो।
गोया उत्तू ज़मीं पर करते हो।।

उत्तूकार/उत्तूगर (पु0) मुहराकार, उत्तू करने वाला कारीगर।

अँकोतन (पु0) दर्ज़माल। उत्तू करने का सिलाई की वज़अ़ का नोंक और धारदार आहनी औज़ार।

ठप्पा (पु0) मुहरा। फूलबूटे कंदा किया हुआ मुहरा जिससे उत्तू के निषान डाले जाते हैं। ज़री गोटा पर अब तक देहली और आगरा में इस क़िस्म का काम किया जाता है। मगर यह काम उत्तूकारी से किसी कदर मुख़्तलिफ़ है। **करना** के साथ बोला जाता है।

चर्खरी (स्त्री) गोल और मुनहनी ख़तों के उत्तू करने का बारीकर मुँह का क़ौसनुमा आहनी क़लम।

चिनौटी (स्त्री) देखें खुर्पा।

दर्ज़माल (पु0) देखें अँकोतन।

कोरा (पु0) उत्तूगर की भट्टी। जिसमें वह उत्तू करने के औज़ार गर्म करता है। यह मामूली क़िस्म की होती है और मटके को तोड़कर बनायी जाती है।

खुर्पा (स्त्री) चुनौटी, कपड़े में चुन्नटें डालने का डिबिया के ढकने की वज़अ़ का औज़ार जो आम तौर पर चोबी होता है।

मुहरा (पु0) देखें ठप्पा।

मुहराकार (पु0) देखें उत्तूकार।

मुक़व्वा (पु0) वस्ली। एक ख़ास क़िस्म का तैयार किया हुआ तहदार मोटा कागज़ जिस पर उत्तू का औज़ार अच्छी तरह तहनषीन हो सके। इस पेषेवर की यह ख़ास इस्तिलाह है। जिल्दसाज़ी के मोटे कागज को जो हैदराबाद (दकन) में

आमतौर से मुक़व्वा कहलाता है। शिमाली हिन्द में बड़े शहरों में पुट्ठा कहते हैं। लफ़्ज़ मुक़व्वा ग़ैरमअ़रूफ़ है।

2 पेषा–ए–छीपकारी (चिकनसाज़ी)

अंगूरी बेल (स्त्री) देखें बेल।

बूटा (पु0) बड़ी बूटी। **देखें** बूटी।

बूटी/बूटियाँ (स्त्री) मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पत्तीदार छोटे फूलों का चोबी बना हुआ छापा। छीपियों की इस्तिलाह में बूटी और बूटा कहलाता है। **डालना, छापना** के साथ बोला जाता है।

बेल (स्त्री) मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खुषनुमा बेलों के नमूने का छापा जिनके हस्बे–ज़ेल नाम मषहूर हैं।

फूलपान की बेल लम्बोत्रे शकल के पत्ते और गुलाब के फूल बनी हुई बेल। **तिरपन बेल** तह खूँटे, लहरिये की बूटीदार बेल। **साँदनी बेल** चमेली के फूल या तारे की शक्ल की बेल। **गुलबहार बेल** गुलाब के फूलों की बेल।

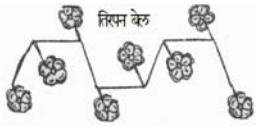

फूलपान की बेल (स्त्री) देखें बेल।

ताकदार बूटा (पु0) अंगूर के ख़ोषे की शकल का बूटा।

तिर्पन बेल (स्त्री) देखें बेल।

तुरंज (पु0) कुंज बूटा। आम की शकल का बना हुआ बड़ा बूटा जो शाल, चादर, रूमाल और कसावे के कोनों पर छापा जाता है। शाल पर उसकी कढ़त निहायत उमदा की जाती है।

शालबाफ़ी की इस्तिलाह में कुंजबूटा कहलाता है।

थल (स्त्री) ज़मीन छींट का बगैर छपा हुआ हिस्सा जो छपे हुए बेलबूटों के दरमियान सादा रहे।

थलकारी (स्त्री) ज़मीन बनाना। छींट के बगैर छपे हुए हिस्से (ज़मीन) को किसी क़िस्म के रंग से रंगने या छोटी छोटी बुंदकियों से पुर करने का अ़मल ताकि सादी जगह खुषनुमा हो जाये।

टोटरू (पु0) जवा, मुर्मुरा। बेल की कोर पर बना हुआ बारीक कंगूरा।

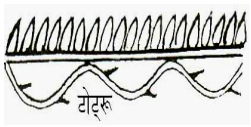

ठड्डा (पु0) बेल की कोर का तह पत्ती बना हुआ कंगूरा।

जवा (पु0) देखें टोटरु।

छापा (पु0) ठप्पा। कपड़े पर बेल बूटे वग़ैरा की छपाई का काम करने का मोहरा। **डालना, मारना, लगाना**। कपड़े वग़ैरा पर छापे से छपाई का अमल करना।

छपाई (स्त्री) कपड़े पर छींटकारी करने का अ़मल हिन्दुस्तान में छपाई का काम लखनऊ, फर्रुख़ाबाद और मद्रास के इलाक़े का बहुत मषहूर है।

छपीटा (पु0) छपेरा। **देखें** छीपी।

छपेरा (पु0) देखें छीपी।

छीपी (पु0) छींटकार। कपड़े पर रंगीन बेलबूटे छापने वाला कारीगर। छींट तैयार करने वाला कारीगर।

छीपकार (पु0) देखें छीपी।

छींट (स्त्री) रंग बिरंग के फूल बूटों का खुष वज़अ़ और खुषनुमा छपा हुआ कपड़ा।

छींट छपेरा (पु0) छींट छापने वाला कारीगर।

खाका (पु0) कच्ची छपाई या नमूने की छपाई। यह तरीक़ा पेषा–ए–ज़रदोज़ी में राइज है। इसका तरीक़ा यह है कि

कागज़ पर छपे हुए बेलबूटे के खतों को सुई की नोंक से छेद लेते हैं और जब इसका नक्ष उतारना हो तो उसको कपड़े की सतह पर रखकर उसके ऊपर बारीक़ पिसी हुई चाक या कोयले की राख की पोटली फेरते हैं। इस अमल से काग़ज के सूराखों में से ख़ाक छनकर कपड़े की सतह पर आती है और जिस तरह के सूराख़ बने होते है। उसी तरह के निषान कपड़े पर उतर आते हैं और आसानी से साफ़ हो जाते हैं। कपड़े पर कोई निषान नहीं रहता। **उतारना, छाड़ना** सूराख़दार नक़षी। काग़ज़ के ज़रिये खुष्क ख़ाक से छपाई करना। नक्ष उतारना।

दोक़दा बूटा (पु0) ऐसी बूटी या बूटा जिसके चारों तरफ़ दोहरा और तिहरा ज़ंजीरा छपा या कढ़ा हो। यह काम आम तौर से शाल के तुरंज पर होता है।

रीगाबूटा/रज़ाबूटा (पु0) छोटी क़िस्म की बूटी।

ज़मीन (स्त्री) देखें थल, सादा जमीन, रंगीन ज़मीन।

ज़मीन बनाना (क्रिया) देखें थलकारी।

ज़ंजीरा (पु0) ज़ंजीर की शकल की छपाई और कढ़ाई।

साँदनी बेल (स्त्री) देखें बेल।

समंदर लहर (स्त्री) लहरिया।

क़लमकारी (स्त्री) छापे की बजाय क़लम से कपड़े पर फूल बूटे बनाने का अमल।

कालमकोरी (स्त्री) पक्के रंग की छींट या सूसी। मसोलीपट्टम की मुक़ामी इस्तिलाह।

किरखाबूटा/खिरका बूटा (पु0) बड़ी क़िस्म के फूल या छोटे बूटे का छापा।

कुंजबूटा/कुंज (पु0) देखें तुरंज।

कुंजपत्ता (पु0) तुरंज की ड़ंडी का पत्ता। **देखें** तुरंज।

खजूर छड़ी (स्त्री) खजूर के पत्ते की वज़अ की छपी हुई बेल।

गदका छींट (स्त्री) सिलाईदार छपी हुई छीट, जिसमें बेल बूटी कुछ न हो, सिर्फ़ धारियाँ छपी हों।

गुलबूटी छींट ( ) गुलाब के फूल या सुर्ख़ फूल और सब्ज़ या स्याह ज़मीन छपी हुई छींट।

लहरिया (पु0) पानी की लहर की शकल का छापा या छपाई।

मुर्ली (स्त्री) खजूर की पत्ती की शकल का छापा। (कामदानी वालों की इस्तिलाह)

मुरमुरा (पु0) देखें टोट्रू।

मोमी छींट (स्त्री) मामूली दर्जे की छपी हुई घटिया क़िस्म की छींट।

नमसर छींट (स्त्री) मद्रास की तरफ की ख़ास वज़अ की छींट।

3 पेषा कढ़त या सोज़नकारी (चिकनसाज़ी)

उभरवाँ कढ़त (स्त्री) ऐसी कढ़त जो कपड़े की सतह पर फूली हुई और उसके फूलपत्ते ऊपर को उठे हुये दिखाई दें। इस क़िस्म की कढ़ाई को इस्तिलाह में परतदार कढ़त, धुनिये की कढ़त, गुट्ठे की कढ़त, मोइये की कढ़त और मूँग की कढ़त कहते हैं। **देखें** कढ़त।

ओरमई कढ़त (स्त्री) ओरमे की सिलाई की कढ़त, इसमें बूटी की पत्ती लिपटवाँ टाँके से सी जाती है, जो भाँजवाँ डोरे की शकल में दिखाई देती है, चूँकि कढ़त मोलसिरी के फूल के मुषाबा होती है इसलिये इसको मोलसिरी की कढ़त भी कहते हैं।

बट्नी कढ़त (स्त्री) बटन की शकल की उभरवाँ कढ़ाई। फंदे की कढ़त।

बंद (पु0) कढ़ाई का पहला टाँका जिसको फंदा लगाकर जमाया जाता है। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

परतदार कढ़त (स्त्री) देखें उभरवाँ कढ़त। तह बतह कढ़ाई।

पक्की कढ़त (स्त्री) बारीक टाँकों की कढ़ाई जो कपड़े के साथ एकजान हो जाये और उधड़ न सके।

पोथकारी (स्त्री) बारीक मोतियों की कढ़ाई यानी कपड़े पर मोतियों के फूल बूटे बनाना।

फुलकारी (स्त्री) चिकनकारी, सोज़नकारी, टिकतसूती, रेषमी कपड़े या ज़री के फूल बूटे कतर कर कपड़े पर टाँकना। यह काम कढ़त से बिल्कुल जुदा है, इसलिये फुलकारी कहलाता है, लेकिन पंजाब में हर किस्म की कढ़ाई और चिकनदोज़ी को फुलकारी कहते हैं। देहली और नवाहे देहली में कटाऊ का काम या टिकटकारी से मौसूम किया जाता है।

तारकषी (स्त्री) कढ़ाई के काम का कजबला साफ़ तागा इस्तिलाह में तारकषी कहलाता है। वजहे तस्मिया यह है कि उमदा और बारीक क़िस्म की कढ़ाई के लिये कारीगर किसी उमदा क़िस्म के कपड़े में तार निकाल लेते हैं और उनसे कढ़ाई का काम करते हैं। इस क़िस्म के निकाले हुये तागे को अपनी रोजमर्रा में तारकषी कहते हैं।

तजी/ताजी (स्त्री) कढ़ाई का तागा लपेटने की सलाई, जाली पर कढ़त का काम जो कच्चे तागे से किया जाता है वह तागा सुई में खुला नहीं रहता बल्कि सिलाई पर लिपटा रहता है और हस्बे जुरूरत टाँके के साथ खुलता रहता है।

तहदोज़ी (स्त्री) रंगतकारी, थलकारी या थल बनाना, **दोख़्त**, उभरवाँ कढ़त में फूल, पत्ती और डंडी की कच्ची शकल बनाने का अमल जो ऊपर की खुषनुमा तह बनाने से कब्ल बतौर ढाँचा कच्चे तागे से बनाई जाती है। यह काम रेषमीं उभरवाँ कढ़त या ज़रदोज़ी में किया जाता है।

थल (स्त्री) उभरवाँ बूटी की ज़मीन या ढाँचा।

थलकारी (स्त्री) देखें तहदोज़ी।

टिकाई/टिकट (स्त्री) देखें फुलकारी। कपड़े या ज़री के कतरे हुये फूल काटने की सन्अत।

जाली की कढ़त (स्त्री) देखें ख़ानाषुमारी की कढ़त।

झपा/झापन (स्त्री) बनियान की तरह पर सलाइयों से बुना हुआ फूलदार कपड़ा जिसकी बुनावट में जाली के फूल बुने जाते हैं। इस काम की अक्सर टोपियाँ बनाई जाती हैं।

चिकन (स्त्री) फूल बूटे कढ़ा हुआ कपड़ा।

चिकनकारी/चिकनदोज़ी (स्त्री) कपड़े में फूल–बूटे काढ़ने की सन्अत, ख्वाह बुनावट की हो या सोज़नकारी की।

ख़ानाषुमारी की कढ़त जाली की कढ़त जिसमें फूल पत्ते जाली के खानों के शुमार से बनाये जाते हैं, जिसकी वजह से उस कढ़न में तनासुब पैदा हो जाता है।

दोख़्त (स्त्री) देखें तहदोज़ी।

धनिये की कढ़न्त गोल बुंदकीदार कढ़ाई जो धनिये के दाने के मानिन्द की जाती है। यही इसकी वजह तस्मिया है।

रंगतकारी (स्त्री) देखें तहदोज़ी। **करना** के साथ बोला जाता है।

जंजीरे की कढ़ाई (स्त्री) जंजीर की शकल की कढ़त।

सोज़नकारी (स्त्री) देखें कढ़त।

काढ़ना (क्रिया) देखें कढ़तकारी।

कटाव का काम देखें फुलकारी।

कच्ची कढ़त (स्त्री) जाली के ऊपर कढ़ा हुआ काम या मामूली कढ़त जो न उभरवाँ हो न पक्की।

कढ़ाई/कढ़त (पु0) कषीदाकारी, सोज़नकारी, चिकनकारी। कपड़े पर सिलाई के ज़रिये फूल बूटे बनाने की सनअ्त जो सूत, रेषम या ऊन से

मुख़्तलिफ़ वज़अ़ की और खुषनुमा बनायी जाती है। काढ़ने की उजरत।

कढ़तकारी (स्त्री) सोज़नकारी, कषीदाकारी, फुलकारी, कपड़े पर बेल बूटे काढ़ने का काम या सन्अत।

कषीदाकारी (स्त्री) देखें कढ़तकारी।

केकरी (स्त्री) तेहखूँटी या कलीदार शकल की फुलकारी जो गोट के ऊपर खूबसूरती के लिये बना दी जाती है। जिसकी वजह गोट की लुढ़ियावन बे मालूम हो जाती है।

केक्री

मड़ोड़ी (स्त्री) डोरी की टिकट। रेषमीं एकरंगी या दोरंगी या तिरंगी बटी हुयी डोर जो खुषनुमाई के लिये कोर पर टाँक या काढ़ दी जाय जैसा कि फ़ौजी अफसरों के लिबास में अक्सर देखी जाती है।

मोलसिरी की कढ़त देखें ओरमई कढ़त।

मूँगे की कढ़त देखें उभरवाँ कढ़त।

मोइये की कढ़त देखें उभरवाँ कढ़न।

यामुर (स्त्री) वह फुलकारी जिसमें कपड़े पर छोटे छोटे आइने बजाय फूल सी दिये जायें। यह तर्ज़ अक्सर पहाड़ी औरतों के लिबास में देखी जाती है।

4 पेषा कन्दलाकषी (ज़रबाफ़ी)

आगल (पु0) कंदले का तार खींचते वक्त जंतर को सहारा देने के लिये बतौर पुषीवाँ लगाई जाने वाली आहनी पट्टी। **देखें** जंदर जस्ती।

बारा (स्त्री) जंतर या जंतरी का सूराख जिसमें तार खींचकर पतला किया जाता है। **देखें** जंतर। **माँझना, छेदना, खोलना** बारा साफ़ करना और सूराख़ बनाना। **पेटा** बारे का दल यानी गहराई। **मथाली** जंतर का सूराख़ जो तार की मोटान के मुताबिक होता या किया जाता है। **मोरी** बारे के ऊपर का प्यालेनुमा मुँह। फौलाद की मोटी पट्टी में हस्बे जुरूरत सूराख़ नहीं बनाया जा सकता, इसलिये पट्टी की मोटान कम करने को उसके एक तरफ सूराख़ का प्यालानुमा घर बनाया जाता है। यह निषान कारीगरों की इस्तिलाह में बारे की मोरी कहलाती है और तार का बारीक सूराख़ मथाली।

बटोलना (क्रिया) देखें मठारना।

बेड़ी (स्त्री) कंदले के तैयार तार का हल्क़ेनुमा बनाया हुआ लच्छा या लच्छी। **बाँधना** के साथ बोला जाता है।

पाड़ (स्त्री) जंदर का चौखटा या अड्डा **देखें** जंदर।

पासा/पस्सा (पु0) तार खींचने को 6 इंच लम्बी और 60 तोला वज़नी चाँदी की तैयार की हुई छड़ या डंडी। (सर्राफ़ों की इस्तिलाह में पासा सोने की एक मुक़र्रिरा वज़न और लम्बान चौड़ान को बनी हुई तख़्ती का कहते हैं।

पत्तर (पु0) कंदला बनाने को ताँबे की गुल्ली (छड़) पर चढ़ाने के लिये सोने या चाँदी का हस्बे जुरूरत तैयार किया हुआ मोटा वरक़।

पोटा (पु0) दबलक़ का जंदर। पासे से गुछली बनाने यानी 22 गज़ फ़ी तोला तार खींचने का जंदर। मोटा और तिहपत्रे का तार खीचने का जन्दर। **देखें** जंदर।

पोटिया (पु0) कंदले का इब्तिदाई तार खीचने वाला कारीगर यानी पासे को तार की शकल में लाने वाला कारीगर।

पेटा (पु0) देखें बारा।

फाल्का (पु0) देखें लोटन। फाल्का, फिरका और फरैती का गलत तलफ़्फुज़ हैं। **देखें** फरेती, पेषा सूतसाज़ी पृ0।

ताऊनी (स्त्री) जंतर में खींचने के क़ाबिल एक ख़ास मोटान का कंदले का तार। जंतर में खींचने के लायक होने से क़ब्ल कंदले की छड़ को ठोक पीटकर बढ़ाया जाता है और जब वह काफ़ी पतली और

लचकदार हो जाती है तो उसको जंतर में खींचते हैं। इस दर्जे के तार को इस्तिलाह में ताऊनी यानी मुड़ने और बल खाने वाला तार।

तिहपत्रा (पु0) ताँबे की छड़ पर चाँदी और उसपर सोने का पत्तर चढ़ाया हुआ कंदला। **देखें** कंदला।

टूटक (स्त्री) तारकषी के मौके पर तार के बार बार टूट जाने की हालत। तार की यह हालत ऐसी खोटी धात की वजह से होती है, जिसका तार नहीं बनता। **होना, पड़ना** के साथ बोला जाता है।

जस्ती (स्त्री) देखें जंदर।

जंतर (पु0) जस्ता, सोना, चाँदी या कंदले का तार बढ़ाने की हस्बे जुरूरत मोटे बारीक सूराख की बनाई हुई फौलादी पट्टी। मामूल से छोटा बारीक और नाजुक तार बनाने का जंतरी कहलाती है और तार कषों के इस्तेमाल में रहती है। अब जंतरी की जगह याकूत के बने हुये बारे इस्तेमाल किये जाते हैं, जो यूरोप से बनकर आ रहे हैं। इनके इस्तेमाल में सहूलते कार तो जुरूर है लेकिन नुकसान ज़्यादा है, क्योंकि एक मर्तबा के इस्तेमाल के बाद वह नाकारा हो जाता है। जंतर के हर सूराख़ को बारा कहते हैं और मजाज़न पूरा जंतर भी बारा कहलाता है। जंतर के बारे का मुँह एक तरफ़ से चौड़ा और दूसरी तरफ से हस्बे जुरूरत बारीक होता है। चौड़े मुँह को मोरी और बारीक को इस्तिलाह में मथाली कहते हैं और जंतर का दल या मोटान पेटा कहलाता है।

जंतरी (स्त्री) देखें जंतर।

जंदर (पु0) जस्ती। फार्सी लफ़्ज़ यंदरल उर्दू में जंदर कहलाने लगा है। सोने, चाँदी या कंदले का मोटा तार खींचने का चरख़ या दलबक़ (दाब+लाग) की क़िस्म का हथियार या औज़ार। इसकी दो किस्में होतीं हैं **पोटा** जिसको दबलक़ (दाब़लाक) का जंदर भी कहते हैं। इसमें इब्तिदाई और तिहपत्रा का तार खींचा जाता है। **घुलाई का जंदर** इसको लोटन का जंदर भी कहते हैं। इसमें सच्चा और दूसरे तीसरे दर्जे का पतला खींचा जाता है। **पाड़** चंदर का चौखटा या अड्डा।

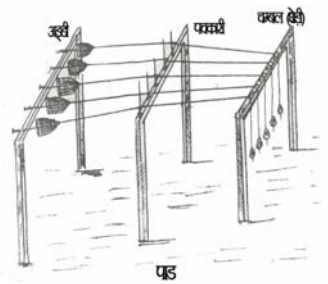

जंदरी (स्त्री) छोटा और हल्की क़िस्म का जंदर।

चप्पू (पु0) बादले की मुहरी यानी प्यालेनुमा मुँह बढ़ाने का तिहकोरी शकल का क़लम।

चिट्टा कंदला (पु0) ताँबे की गुल्ली पर चाँदी का पत्रा चढ़ाकर बनाया हुआ कंदला। कारीगरों की इस्तिलाह में चिट्टाकंदला कहलाता है।

चौरसा (पु0) बारे के चौड़े मुँह की गहराई (पेटा) साफ़ करने का गुमटीदार मुँह का आहनी क़लम।

छड़ (स्त्री) चाँदी या तिहपत्रे की सलाख़ जो तार खींचने के लिये बनाई जाये और लम्बान में दो गज़ हो। एक गज़ तक लम्बी नीम छड़ कहलाती है।

दोपत्रा कंदला (पु0) देखें कंदला। ताँबे की छड़ पर चाँदी का पत्तर चढ़ाकर बनाया हुआ कंदला।

दौरी (स्त्री) गूंजला। लच्छा बनने के लायक जंदर में खींचा हुआ तार।

रंगीन कंदला (स्त्री) सुनहरी कंदला। सोने के मुलम्मे का कंदला कभी ख़ालिस चाँदी की गुल्ली पर सोने का पानी चढ़ाकर तैयार किया जाता है और कभी ताँबे की गुल्ली पर चाँदी का पतरा जमाकर सोने का पानी चढ़ा दिया जाता है।

रेड़ा (पु0) खराकंदला। ख़ालिस चाँदी का तैयार किया हुआ या चाँदी पर सोने का

पत्तर चढ़ाकर तैयार किया हुआ कंदला दोपत्रा और तिहपत्रा खोटा और रेड़ा खरा कंदला कहलाता है।

रैनी (स्त्री) चाँदी या सोने की सलाख़ बनाने का कर्छे की वज़अ़ का 9 इंच चौड़ा और गहरा साँचा। चाँदी या साने की सलाख़ को भी,जो इस ज़र्फ़ में बनाई जाती है, मजाज़न रैनी कहते हैं। **ढालना, बनाना** के साथ बोला जाता है। **खींचना** कंदले की सलाख़ को जंदर में डालकर लम्बा करना। बढ़ाकर तार बनाना।

सलग तार (पु0) जंतर में खिंचा हुआ मुसलसल और यकसाँ लम्बा खींचा हुआ तार जो कहीं से टूटा न हो या टूटे नहीं। न टूटने वाला तार।

किलावा (पु0) तारकषी के कारख़ाने में भेजने के लिये जंतर में खिंचे हुए एक मुकर्रिरा लम्बान के तार की बनी हुई बेड़ी। **बाँधना, खोलना, लपेटना** के साथ बोला जाता है।

कनारी का सूत कंदले का फ़ी तोला 6 सौ गज़ लम्बा खिंचा हुआ तार।

कंदला (पु0) ज़री गोटाबाफ़ी के लिए खरा या खोटा तार तैयार करने को ताँबे, चाँदी और सोने में से किसी दो या तीनों धातों को मुतनासिब अजज़ा में ऊपर तले बाहम पैवस्त करके तैयार की हुई मुरक्कब धात। दो धातों के मुरक्कब को दोपत्रा और तीनों धातों के मुरक्कब को तिहपत्रा कंदला कहते हैं। ताँबे की तह पर बनाया हुआ कंदला जो चाँदी का पत्तर चढ़ाकर सोने के मुलम्मे से तैयार किया गया हो इस्तिलाह में तिहपत्रा या खोटा कंदला कहलाता है। चाँदी की तह पर सोने का वरक़ चढ़ाकर तैयार किया हुआ कंदला रेडा या खरा कंदला कहलाता है। **बनाना, तैयार करना** के साथ बोला जाता है। **खींचना** कंदले का तार बनाना।

कंदलाकष (पु0) कंदले का तार तैयार करने वाला कारीगर।

कंदलाकषी (स्त्री) कंदले के तार खींचने का अ़मल या सन्अत।

खराकंदला (पु0) सच्चा कंदला जो चाँदी की तह पर तैयार किया गया हो।

कुछली (स्त्री) कंदले का 22 गज़ फ़ी तोला खिंचा हुआ तार।

गुल्ली (स्त्री) ताँबे या चाँदी की डंडी जो कंदला तैयार करने को बनाई गई हो या तैयार कंदले की सलाख़।

गोंजला (पु0) देखें दौरी।

घुलाई का जंदर (स्त्री) देखें जंदर।

लोटन (स्त्री) फाल्का। घुलाई के जंदर का चर्ख़ या चर्ख़ी जिसपर खिंचा हुआ तार लिपटता जाता है।

मथाली (स्त्री) देखें बारा।

मठारना (क्रिया) बटोल्ना। कंदले के तार के मुँह को जंतर या जंतरी के बारे में आने के लिए किसी औज़ार से ठोककर या घिसकर पतला करके नोंकदार बनाना। कंदले के तार के मुँह की नोंक बारीक करना ताकि वह जंतरी के तार में आसानी से पिरोया जा सके।

मोट्रा (पु0) कंदले का इतना मोटा तार जो मुड़ने और बल खाने लगे यानी इतना पतला हो कि उसमें लोच आ जाय।

मोरी (स्त्री) देखें बारा।

मुहारी (स्त्री) चाँदी की गुल्ली पर सोने का वरक़ पैवस्त करने का संगे यषअ़ब का मुहरा। **करना, घोटना** के साथ बोला जाता है।

नीमछड़ (स्त्री) देखें छड़।

5 पेषा तारकषी (ज़रबाफ़ी)

उतार (पु0) तारकषी का आखरी हाथ यानी तार की तैयारी का अ़मल जिसपर तार की खिंचाई ख़त्म होती है।

आठमाषी तार (पु0) फ़ी तोला 900 गज़ लम्बा तैयार किया हुआ तार।

अधिया (पु0) तारकष के हाथ तले मुक़र्रिरा मज़दूरी पर काम करने वाला कारीगर। तारकषी के कारख़ाने का मुकर्रिरा उजरत पर काम करने वाला शरीके कार।

अरिम्ना (क्रिया) तारकषी या कंदलीकषी के तार को धीमे धीमे (बतदरीज) गरम और ठंडा करना। इस अ़मल से तार नरम हो जाता है और उसकी खिंचाई में सहूलत होती है।

अस्सी का तार निहायत बारीक फ़ी तोला तक़रीबन 3500 गज़ लम्बा तैयार किया हुआ तार।

बाध (स्त्री) तारकषी का तैयार तार लपेटने की किट्टीनुमा ताँबे की चर्खी जिसपर तार चढ़ाकर तपाया भी जाता है **देखें** कुन्दा।

बारा (पु0) बेध (बेद) तारकष की जंतरी का सूराख़ **देखें** पेषा कंदलाकषी। **़बनाना** जंतरी के सूराख़ दुरुस्त करना या हस्बे जुरूरत मोटा बारीक करना। **़चढ़ाना** जंतरी के सूराख़ को हस्बे जुरूरत छोटा या बारीक करना। **़चीपट होना, जमना** जंतरी का सूराख़ ख़राब होना, गोल न रहना, जिसकी वजह से तार खिंचाई में अटके। **़बटना** एक बारे में खिंचा हुआ तार बराबर के चढ़ाव के बारे में न खिंचना, बारा उतरना। **़चंडना, हलकाना** बारे के मुँह को ठोककर छोटा करना।

बाढ़ बनाना (क्रिया) बारे में डालने के लिये तार की नोंक बारीक करना। तार का सिरा पतला करना।

बत्तीस का सूत फ़ी तोला 1100 गज़ लम्बा खिंचा हुआ तार।

बट्टन का तार कला बत्तू बनाने का निहायत बारीक खिंचा हुआ तार।

बड्ढ़ा (पु0) देखें चर्ख़।

बेध बेद (पु0) देखें बारा।

बेधिया (पु0) जंतरी में यानी बारे में सूराख बनाने वाला कारीगर।

बेडीबारा (पु0) जंतर का मोटा सूराख़। इब्तिदाई सूराख़ जिसमें कंदलीकषी के कारखाने से आया हुआ तार खींचा जाये।

बी हिड़ (स्त्री) क़तार। बारे साफ़ करने और खोलने की उतार चढ़ाव की सिलसिलेवार बनी हुयी आहनी सलाइयाँ। **़लगाना** बारे को सिलसिलेवार सलाइयों से खोलना, साफ़ करना।

भोगली (स्त्री) पुर्नी, तिर्की, लाइनी, तारकष के चर्ख़ या चर्खी के बीच की सूराख़दार चोबी लाट जो कीले पर घूमती है। **देखें** कुंदा।

पाठ (स्त्री) तारकष के काम करने की तिपाई।

पुट फँसाना (क्रिया) तार का सिरा बारे में अटका छोड़ देना।

पुटकी पुरना (क्रिया) तार का सिरा बारे में डालना।

फिरौनी (स्त्री) चर्ख़ को घुमाने की आरदार चोबी हत्ती। **देखें** कुंदा।

ताबूझ (स्त्री) सख़्त तार की बारे में से खिंचने की आवाज़। **करना** के साथ बोला जाता है।

तार रिसाना (क्रिया) तार के सिरे को बारे में आने के लिए आहिस्ता आहिस्ता रगड़कर बारीक नोंकदार बनाना, जो बारे के सूराख में सही आ सके। तार को बारे में पिरोकर आहिस्ता आहिस्ता घुमाना ताकि उसमें रवाँ हो जाये।

तारकष (पु0) चाँदी, सोने या कंदले के तार को ज़रबाफ़ी की जुरूरत के लिए हस्बे जुरूरत बारीक बनाने वाला कारीगर।

तारकषी (स्त्री) ज़रबाफ़ी की जुरूरत के लिए सोना, चाँदी या कंदले के तार को जंतरी में खींचकर बारीक करने की सन्अत।

तारगीर (पु0) देखें छड़ाफेर।

ताव/तावा (स्त्री) तारकषी के चर्ख़ का चक्कर। **देना, खाना** के साथ बोला जाता है।

तब्ली (स्त्री) तारकषी के चर्ख़ का चंदुआ, लफ़्ज़ त़बाक़ से तबली बन गया है, **देखें** कुंदा।

तिर्की/थिर्की (स्त्री) देखें भोक्ली।

तोडा (पु0) तार खींचते वक्त जंतरी को मंढ़ली में फॉसे रखने वाली खपची। **देखें** कुंदा।

तैराक (पु0) लहनी। तारकष की तिपाई पर लगी हुई कुंडली या चर्खी की फिर्की जो चर्ख़ के साथ घुमाई जाती है। **देखें** कुंदा।

थप्पा/धप्पा (पु0) ठोंग, चप्पा, तारकषी के चर्ख़ के घुमाने को चर्ख़ के ऊपर तारकष की उंगली का टहोका। **लगाना, देना, मारना** के साथ बोला जाता है।

थड़ी (स्त्री) तार का मुँह बढ़ाने और गोल नोंकदार बनाने का बहुत छोटा संदाँ।

ठोंग (स्त्री) देखें थप्पा।

जंतरी (स्त्री) देखें जंतर। पेषा कंदलाकषी, सोना, चाँदी या कंदले का तार बारीक करने और बढ़ाने की सूराख़दार फौलादी पट्टी।

चालीस का तार फ़ी तोला 1500 गज़ लम्बा खिंचा हुआ तार।

चाँडा/चाँटा (स्त्री) कव्वे की चोंच की शकल की बारे का मुँह दुरुस्त करने की हथौड़ी । इसके ऊपर के चौड़े सिरे को दाल और दूसरे नुकीले सिरे को दुम्बाला कहते हैं।

चाँडना (क्रिया) चाडे से बारे के मुँह को दुरुस्त करना यानी बारे का मुँह तंग करना।

चप्पा (पु0) देखें थप्पा या धप्पा। **लगाना, देना** के साथ बोला जाता है।

चर्ख़ (पु0) चकरी तारकष का फिरैता या कुंडल। **दिगना** चर्ख़ का चलने में झटके खाना। इसको लहिकना भी कहते हैं। **सुधना** चर्ख़ का सही रफ़्तार चलना। इसके ऊपर के चंदवे को तबली कहते हैं। **बड्ढा** फिरौनी का मुँह जमाने को तबली के ऊपर बना हुआ छोटा सा गढ़ा। **कुंडल** चर्ख़ का पेटा या बीच का गहरा हिस्सा।

चोकनी (स्त्री) कचोकनी, बारे का मुँह खोलने और साफ करने की सुई।

चीपट तार (पु0) तार जो बारे की खराबी की वजह से पहलदार हो जाये यानी उसकी गोलाई बिगड़ जाय।

चीनी बट्टी (स्त्री) तार का मुँह रगड़ने का चीनी का मुहरा।

छड़ाफेर (पु0) तारगीर। बानात का टुकड़ा जिसके अन्दर तारकष काम करते वक्त तार को पकड़े रहता है।

छिक्की (स्त्री) तार के टूटे हुये छोटे छोटे टुकड़े, रेज़्गी।

छिन्का (पु0) तार का खुरदुरापन जो तार को ज्यादा तपाने से पैदा हो जाता है, जिसकी वजह से तार खिंचाई में बार बार टूटता है।

दाल (स्त्री) देखें चाँडा।

दुंबाला (पु0) देखें चाँडा

धेकूँली लगाना (क्रिया) चर्ख़ की रफ़्तार को तेज़ करने के लिये फिरौनी से झटकाना।

राँगा (पु0) बारा दुरुस्त करते वक्त़ जंतरी के नीचे रखने की जस्ते की पट्टी।

रिसाना (क्रिया) तार को बारे के मुँह में घुलाना या रवाँ करना। **देखें** ताररिसाना।

सूग्रा (पु0) गीरा। बारा साफ करने की सलाई पकड़ने का चोबी चिमटा।

क़तार (स्त्री) देखें बी हिड़।

किलाना (क्रिया) बारा बनाने की सलाई की नोक बारीक करना यानी घिसकर तेज़ करना।

किलावा (पु0) तैयार शुदा रूपहली तार का लच्छा।
कुंदा (पु0) तारकष के काम करने की तिपाई जिस पर चर्ख़ लगे होते हैं।
कुंडल (पु0) देखें चर्ख़।
कुंडली (स्त्री) देखें चर्ख़ी।
खुर्रा चलाना (क्रिया) तारकषी के चर्ख़ को मष्क के लिये खाली चलाना।
खरंजा (पु0) खराब और नाकारा बारा।
गरदाँग (पु0) चर्ख़ और तैराक के दरमियान पड़ी हुई माल।
लाट लगना (क्रिया) तार का ज़्यादा तप जाना जिससे वह कमज़ोर पड़ जाता है।
लाइनी (स्त्री) देखें भोक्ली।
लौ टकाना (क्रिया) फिरौनी की नोक तेज़ करना। बाज़ कारीगर लौ लगाना कहते हैं।
लह्नी (स्त्री) देखें तैराक।
मंढ़ली (स्त्री) तारकष की जंतरी लगाने की कुंन्दे पर जड़ी हुई दो शाखा मेंख़। **देखें** कुंदा।
मूँहान (पु0) तारकषी के तार के बारे में आने के लायक् नोकदार बना हुआ सिरा।

6 पेषा–ए–दबेई (ज़रबाफ़ी)

अमीरी (स्त्री) देखें बादला।
आँटा (पु0) परैती पर बादले की लपेट या लच्छा।
ऊप (स्त्री) दबकय्ये के हथौड़े के मुँह और निहाई की जिला या चमक। **˛जाना** चमक जाती रहना, जिला उतर जाना। **˛मीठी परना** जिला का माँद हो जाना।
ऊप्नी (स्त्री) जिला और चमक पैदा करने वाली शय्।
बाद्ला (पु0) मुक़्क़ैष। ताष या ताषा। सोने, चाँदी या कंदले का चिपटा किया हुआ बारीक तार मुक़्क़ैष आम और मामूली बादले से किसी क़दर मोटा होता है। **अमीरी** कतरन। चौड़ी पैमक की तैयारी के लिए मामूल से किसी क़दर और वज़नी बादला। **बट्टन** कलाबत्तू बनाने का तबला और नाजुक क़िस्म का बादला। **बस्तनी** बादले के तारों का रेषमीं बन्द जो उनके आपस में न उलझने की गरज से थोड़े से फासले पर डाल दिया जाता है। **बेला** लम्बा और दोहरा बादला। **दीवाली** पैमक की तैयारी के लिये मोटा तैयार किया हुआ बादला।
बट्टन (स्त्री) देखें बादला।
बस्तनी (स्त्री) देखें बादला।
बेला (पु0) देखें बादला।
पाटिया (पु0) दबकई के तार की गिट्टियाँ लगा हुआ तख़्ता। **देखें** दबकई।
पाड़ (स्त्री) देखें कुंदा, जोड़ी।
ताष (पु0) ताष या ताषा तिब्बती ज़बान का लफ़्ज़ है, जिसके मानी हैं सुनहरी और रूपहली वरक़ की बारीक कतरनें। उसी से बाद्ले का बुना हुआ कपड़ा ताष कहलाता है। **देखें** बादला।
ठर्रा (पु0) देखें सितारा।
झिक्की (स्त्री) तार को चिपटा करने के लिए दबकय्ये के हथौड़े की ज़र्ब जो मुतवातिर और यकसाँ तार के ऊपर मुक़र्रिरा हद में पड़ती है।
चाठा (पु0) गाभा, दबकय्ये के हथौड़े के मुँह की ख़राष या झायीं साफ़ करने का एक क़िस्म के पत्थर का बना हुआ मुहरा। तारकषों का चाँडा और दबकय्यों का चाठा। क़रीब क़रीब एक ही क़िस्म के दो लफ़्ज़ मालूम होते हैं।
चम्की (स्त्री) औसत दर्जे से किसी क़दर बड़ा सितारा। **देखें** सितारा।
चुन्नी (स्त्री) मामूल से छोटा सितारा।
चुन्नीतार (पु0) सितारा बनाने का तार।
चूटी (स्त्री) बादले का रेषमीं सरबन्द यानी वह डोरा जिससे बादले के लच्छे का सर बाँधा जाता है।

चूड (पु0) पाव इंच या उससे कुछ ज़्यादा चौड़ा बाद्ला जो चूड़ी के ऊपर लगाने को बनाया जाता है। **देखें** बादला।

छीप (स्त्री) दोषाखा आहनी मेंख जिसके अन्दर से तार गुजर कर निहाई के बराबर लगी होती है। **देखें** दबकई।

दबकाई (स्त्री) तार दबकने का अ़मल। तार दबकने यानी बादला बनाने की उजरत।

दबक्ना (क्रिया) सोने चाँदी, कंदले के तार को हथौड़े से ज़रब लगाकर चपटा करना।

दबकई (स्त्री) सोने, चाँदी या कंदले के तार को चपटा करने की सन्अतकारी जो ज़रबाफ़ी के लिये की जाती है।

दबकय्या (पु0) बादला बनाने वाला कारीगर। सोने, चाँदी कंदले के बारीक तार को ज़रबाफ़ी की जुरूरत के लिये दबककर चपटा करने वाला कारीगर। अब इस सनअ़त की मषीन ईजाद हो गयी है और यह काम उससे किया जाता है। इसलिये इस दस्तकारी का ख़ात्मा हो गया है।

दीवाली (स्त्री) देखें बादला।

ढेकली (स्त्री) दबकई के हथौड़े का अड्डा जिसमें हथौड़ा लगा रहता है। **देखें** दबकई।

साँत्रा (पु0) दबके हुए तार का बगैर लच्छा किया हुआ ढेर।

सितारा (पु0) चमकी सुनहरी या रूपहली तार का बिंदीनुमा चपटा किया हुआ हल्क़ा जो ज़रदोज़ी काम के लिये तैयार किये जाते हैं और उसमें हस्बे मौका खुषनुमाई के लिये टाँके जाते हैं। **ठर्रा** अद्ना क़िस्म का मोटा और मामूल से किसी क़दर बड़ा सितारा। **चुन्नी** मामूल से छोटा सितारा। **कड़ी** बगैर दबका सितारा।

काँसी (स्त्री) मछली का छिलका जिसमें तार पिरोने को बारीक सूराख़ बने होते हैं और दबकई के वक्त तार उसमें से गुज़रकर संदाँ पर आता है।

कतरन (स्त्री) देखें बादला।

कड़ी (स्त्री) देखें सितारा।

कुंदाजोड़ी (स्त्री) पाड़। तार, दबकने या बादला बनाने के दबकय्ये के औज़ार दबकई के काम का पूरा सामान।

गाभा (पु0) देखें चाठा।

गिल्ली (स्त्री) ठेकली में दबकय्ये के हथौड़े का दस्ता लगाने की लकड़ी। **देखें** दबकई।

लसरका (पु0) हथौड़े की ज़र्ब खाकर चिपटा हुआ तार जो करीब नौ गिरह लम्बा होता है।

माषा (पु0) तार की गिट्टी। **देखें** तस्वीर।

मुक्कैष (स्त्री) **देखें** बादला।

मलूका (पु0) दबकई के वक्त तारों को उभारे रखने वाला सहारा। **देखें** दबकई।

निहाई (स्त्री) दबकय्ये का संदाँ जिसपर तार दबका जाता है।

7 पेषा–ए–बटई (ज़रबाफ़ी)

उसारा (पु0) बटई की पूरी दिहॉगी का 40 गज़ लम्बा रेषम का भाँजवाँ तार। **देखें** (पेषा सिलाई बटाई। पृ0)

अगाई घिस्सा (पु0) देखें घिस्सा।

अगाई धौक (स्त्री) देखें धौक।

औगी चकत्ता। **देखें** गुंजिया।

बटय्या (स्त्री) कलाबत्तू बटने या तैयार करने वाला कारीगर, यह काम भी अब मषीन से किया जाने लगा है। इसलिये इस दस्ती सन्अत का भी करीब करीब ख़ात्मा हो गया है।

बटई (स्त्री) रेषम या सूत के तागे पर सुनहरी या रूपहली बादला चढ़ाने की सन्अत। लाबत्तू बनाने की सन्अत। **देखें**

कलाबत्तू। **करना** दस्तकारियों में बटई और दबकई की सन्अत बहुत नाज़ुक समझी जाती है। हाथ जिसखूबी से इस काम को करते थे, मषीन नहीं करतीं। इसका एतराफ़ मषीन वालों को भी है।

पाड़ (स्त्री) बटई के काम का ठिकाना जहाँ कारीगर अपने ज़ुरूरी सामान के साथ बैठकर काम करता है।

फेलाव (पु0) कलाबत्तू की एक हाथ ऊँची बलाई जो ज़मीन के करीब से कारीगर के हाथ के पूरे खुलाव तक इस्तिलाह में फैलाव कहा जाता है। **देखें** पाड़।

पिछाई घिस्सा (पु0) देखें घिस्सा।

पिछाई धौक (स्त्री) देखें धौक।

तिक्वा (पु0) देखें धौक।

थोक्ड़ी (स्त्री) कलाबत्तू की बारह गुंजियाँ (लच्छियाँ) (थोक का इस्मे–तसग़ीर)

चुटगीरा (पु0) देखें धौक।

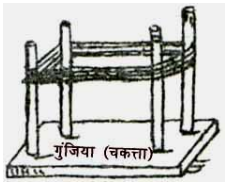

चकत्ता (पु0) कलाबत्तू की आंटी बनाने का गुंजिया की वज़अ़ की चार खूँटियों की तख़्ती **देखें** गुंजिया।

चिल्ला (पु0) धौक के तकले पर रेषम के तार की लपेंट जिससे कारीगर हथेली तकले की रगड़ से बची रहती है।

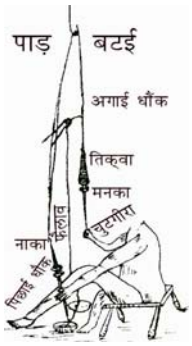

छीड़ (स्त्री) दिन भर की दिहाँगी का बचा हुआ काम। रोज़मर्रा के मुक़र्रिरा काम में की कमी। **प्रयोग** अंधेरा हो गया इसलिये जरा सी छीड़ रह गई है। सुबह जल्द आकर पहले उसे निपटा दूँगा।

धौक/दौक (स्त्री) कलाबत्तू की बटाई की तकले नुमा सलाई। **फिराना तिकवा** के साथ बोला जाता है। धौक का ऊपर का सिरा जिसपर कारीगर तैयार कलाबत्तू की कुकड़ी बनाता जाता है। **चुटगीरा** धौक के नीचे की सिरा जिसको कारीगर चुटकी में पकड़कर धौक को चक्कर देता है। **कोबा** धौक का दबाव बढ़ानेवाली सीसे की गोल बट्टी, जो बतौर वज़न कलाबत्तू लपेटने की हद से नीचे लगी रहती है। **मन्का** धौक के ऊपर के सिरे की हद कायम करने वाली गोल टिकली जिसपर कलाबत्तू की कुकड़ी कायम होती है। **नाका** धौक के ऊपर की ऑकड़ेनुमा नोंक, जिसमें कलाबत्तू का तार अटकया जाता है। **अगाई धौक** कारीगर के हाथ तले की धौक जिसपर कलाबत्तू तैयार होता है और जिसको चक्कर दिया जाता है। **पिछाई धौक** वह धौक जिसपर तागा लिपटा रहता है। **देखें** पाड़।

ढल्का (पु0) बटई में बादले की तागे के ऊपर लपेट को इस्तिलाह में ढल्का कहते हैं। इस लपेट का हासिल कलाबत्तू हैं और इस अ़मल को बादला ढ़लकाना भी कहते हैं।

रूपहली कलाबत्तू (पु0) देखें कलाबत्तू।

रेषमीं कलाबत्तू (पु0) देखें कलाबत्तू।

सुनहरी कलाबत्तू (पु0) देखें कलाबत्तू।

कलाबत्तू/कलाबत्तून (पु0) बादला, मिला हुआ रेषमीं या सूती तार जो ज़रदोज़ी काम के लिये तैयार किया जाता है। **रूपहली कलाबत्तू** चाँदी के तार का बला हुआ कलाबत्तू। **रेषमी कलाबत्तू** रेषम के तार पर बना हुआ कलाबत्तू। **संगीन कलाबत्तू** बादले का बल से बल मिलाकर बला हुआ कलाबत्तू जिसमें अन्दर का तार बिल्कुल घूम गया हो और बाहर की सतह एकजान मालूम हो। **सुनहरी कलाबत्तू** सुनहरी बादले का बला हुआ कलाबत्तू। **गंगाजमनी कलाबत्तू** सफेद बादले और

सुर्ख़ तार या रंगीन बादले और सफेद तार से बला हुआ कलाबत्तू, जो देखने में दोरंगा मालूम हो। इस क़िस्म को बाज़ मुकामात पर कोकनी कलाबत्तू भी कहते हैं। नीमज़री और गंडेदार भी कहते हैं।

कोबा (पु0) देखें धौक।

कोकनी कलाबत्तू (पु0) देखें कलाबत्तू।

गुंजी (स्त्री) कलाबत्तू की एक ख़ास लम्बान की लच्छी।

गुंजिया (स्त्री) औगी, चकत्ता, कलाबत्तू की लच्छी बनाने की चोबी बनी हुई खूँटियाँ।

गंडेदार कलाबत्तू (पु0) देखें कलाबत्तू।

गंगाजमुनी कलाबत्तू (पु0) देखें कलाबत्तू।

घिस्सा (पु0) कलाबत्तू बटते वक्त धौक को हाथ के घिस्से से चक्कर देने का अमल जो कारीगर पिंडली के ऊपर लगाकर देता है। **अगाई का घिस्सा** सीधा चक्कर जो बादला लपेटने के लिये सामने की धौक को दिया जाता है। **पिछाई घिस्सा** उलटा चक्कर जो तार की धौक को दिया जाता है।

मनका (पु0) देखें धौक।

नाका (पु0) देखें धौक।

नीमज़री कलाबत्तू (पु0) देखें कलाबत्तू।

8 पेषा सलमासाजी (ज़रबाफ़ी)

भोग्ली (स्त्री) देखें गिजाई।

तिकोरा सलमा (पु0) वह सलमा जिसकी गोलाई पहलदार शकल में बनाई गयी हो जिसकी डोर में कोरें निकलीं मालूम हों। **देखें** सलमा।

चर्ख़ (पु0) सलमा बलने का पहिया जो एक क़िस्म का हल्का फुल्का मामूली चर्ख़ा होता है। **छीप** सलमा बलने की चर्ख़ के तकले की खूँटी। **माषा** सलमा बलने की तकले के बीच में पड़ी हुई फ़िरकी जिसपर माल चढ़ी रहती है।

छीप/छीपें (स्त्री) **देखें** चर्ख़।

डस (स्त्री) सलमे की लड़।

सलमा (पु0) सोने, चाँदी या कंदले का नली की मानिंद छल्लेदार बला हुआ तार, जिसतरह सूत काता जाता है, उसी तरह निहायत बारीक तकले के ऊपर गोल या चपटे तार का सलमा बला जाता हैं। तकले के ऊपर तार लिपटकर नलीदार होता जाता है। अब इस सन्अत की मषीन ईज़ाद हो गयी है और यह काम मषीन से किया जाने लगा। **कोरा सलमा** बगैर दबके हुये तार का सलमा। **तिकोरा सलमा** दबके हुए तार का कोरदार (पहलदार) सलमा। सलमे की यह क़िस्म ज़्यादा चमकदार होती है और रोंयेंदार ज़रदोज़ी में लगायी जाती है। इसकी वजह से काम में भड़क पैदा हो जाती है।

सलमासाज़ (पु0) सलमा बनाने वाला कारीगर।

सलमासाज़ी (स्त्री) सलमा बनाने की सन्अत।

कंगनी (स्त्री) भोग्ली। **देखें** गिजाई।

कोरा सलमा (पु0) देखें सलमा।

गिजाई (स्त्री) कंगनी, भोगली, मामूल से मोटे और वज़नी तार का बला हुआ सलमा इस्तिलाह में गिजाई कहलाता है। ज़रदोज़ी में फूलों की डण्डी और पत्तियों की टहनियाँ बनाने के काम आती है।

माषा (पु0) देखें चर्ख़।

9 पेषा–ए–गोटासाज़ी (ज़रबाफ़ी)

अमीरी पैमक (स्त्री) देखें पैमक।

आँट (स्त्री) गोटे के ताने की कुकड़ी।

आँचल (पु0) लम्बे फलवों की किरन जो दुल्हनों के दुपट्टे के पल्लुओं पर टाँकी जाती है। **देखें** किरन।

अंदाज़ा (पु0) किरन की बुनावट के फेर या किरन की कोर। **देखें** किरन।

एकतारी पैमक (स्त्री) देखें पैमक।

अंगुषितया किरन (स्त्री) एक अंगुल चौड़ी किरन। **देखें** किरन।

बाबिन (स्त्री) देखें क़ैतून (क़ैतुन)।

बाँक्डी (स्त्री) कंगूरेदार पैमक। पैमक तोई की शक्ल की पट्टी की तरह होती है। जब इसके एकतरफ कोर पर कंगूरा या लहरिया बना होता है तो बाँक्डी (टेढ़ी कोर) कहलाती है।

बुलबुले चष्म बाक्ंडी (स्त्री) वह बाक्ंडी जिसकी तुई लौज़ाती बुनावट की हो।

पाम (पु0) गोटे की कन्नी का रेषमीं भाँजवाँ डोरा।

पठानी गोटा (पु0) चौड़ा और वज़नदार गोटा। **देखें** गोट।

पक्का गोक्रू (पु0) देखें गोक्रू।

पल्लू (पु0) देखें लप्पा।

पैमक (स्त्री) ज़री तोई जो पाव इंच से पौन इंच तक चौड़ी होती है आमतौर से मामूली क़िस्म की कलाबत्तू के ताने और रेषम के बाने से बुनकर तैयार की जाती है। बुनावट के लिहाज़ से उसके हस्बे ज़ेल नाम मषहूर है **इकतारी पैमक** वह पैमक जिसके ताने के दरमियान एक तार बादले का खुषनुमाई और चमक के लिये डाल दिया गया हो। **दोतारी पैमक** वह पैमक जिसके ताने में दोनों कोरों पर बादले का तार डाला गया हो, जिससे वह चमकदार और दीदारू हो जाती है। **दीवाली पैमक** आला क़िस्म की पैमक। इसका ताना बादले का और बाना कलाबत्तू का होता है। यह निहायत चमकदार पैमक होती है। इसको अमीरी भी कहते हैं। (दिवाली और अमीरी बादले की किस्में हैं।) **संगीन पैमक** वह पैमक जिसका ताना और बाना दोनों कलाबत्तूनी हों। **काँटे की पैमक** वह पैमक जिसका बादले और कलाबत्तू का मिलाजुला हो और बाना कलाबत्तू का हो।

फाँद (पु0) गोटा बुनने के अ़मल में गुल्लों की हरकत को, जिससे ताने के दम ऊपर नीचे होते हैं। इस्तिलाह में फाँद कहते हैं। **देखें** ढाल। ताने के दमों की तलेऊपर हरकत।

फलवा (पु0) किरन की झालर। **देखें** किरन।

तारका गोकरू (पु0) मुक़्क़ीषी गोकरू। **देखें** गोकरू।

तास/ताष (पु0) बादले का बुना हुआ पल्लू। **देखें** पेषा पार्चाबाफ़ी पृ0।

थल (पु0) किरन के बने हुए तारे की शकल के फूल जो टकत के काम में लगाए जाते हैं।

ठप्पा (पु0) मुनक्क़ष गोटा, वह ज़री गोटा जिसपर फूल बूटों के नक्ष ठप्पा या उत्तू किये गये हों। **देखें** गोटा।

जुग (पु0) गोटे की बुनाई के अ़मल में बादले के ताने के तारों के दरमियान बतौर बुनाला पड़ा हुआ रेषम के तार का हल्का जो तारों को बाहम उलझने नहीं देता। **डालना, मिलाना** के साथ बोला जाता है।

झूटा मसाला (पु0) खोटा मसाला। **देखें** मसाला।

चापड़ (स्त्री) ज़री गोटे की सतह को चौरस करने की चोबी तख्तियाँ जिनके दरमियान इसको दबाकर हमवार करते हैं, जिसतरह कपड़े पर कुंदी करके उसकी तह बराबर करते हैं।

चुटकी का गोकरू देखें गोकरु।

चौपड़ (स्त्री) चोबी गुटके। **देखें** चापड़।

दो उंगुष्तिया किरन (स्त्री) दो उंगल चौड़ी किरन, यानी वह किरन, जिसकी झालर दो उंगल लटकी हुई हो। **देखें** किरन।

दो उंगुष्तिया गोटा (पु0) दो उंगल चौड़ा गोटा या ठप्पा। **देखें** गोटा।

दोतारी पैमक (स्त्री) देखें पैमक।

दीवाली पैमक (स्त्री) अमीरी। **देखें** पैमक।

धनक (स्त्री) निहायत नाज़ुक और बारीक बादले की कमोबेष पाव इंच चौड़ी बुनी हुई

ज़री तोई। फुलकारी और टकट के काम के लिए तैयार की जाती है।

ढाल (पु0) गुल्ला। **देखें** पेषा बुनाई पृ0। ज़रबाफ़ों में बाज़ मुकाम पर गुल्ले को ढाल और उसके ऊपर नीचे होने की हरकत को फाँद कहते हैं और वह लकड़ी जिसमें गुल्ले के ऊपर की रस्सियाँ बँधी होती हैं,ढेकली कहलाती है। पार्चाबाफ़ी में इसके नाम जुदा हैं। **देखें** तस्वीर रच, पेषा बुनाई पृ0।

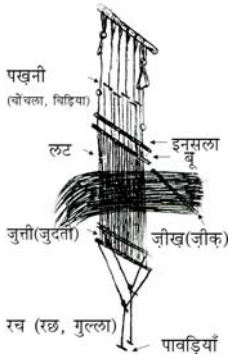

ढेक्ली (स्त्री) देखें ढाल।

ज़रबाफ़ (पु0) ज़री गोटा बुनने वाला कारीगर।

ज़रबाफ़ी (स्त्री) ज़री गोटा बुनने की सन्अत।

ज़रीतोई (स्त्री) देखें पैमक और धनक।

ज़रीचीरा (पु0) राजा महाराजा की पगडियों के लिये सुनहरी बादले का बुना हुआ चीरा। **देखें** पेषा बुनाई पृ0।

सच्चा मसाला (पु0) घरा मसाला। **देखें** मसाला।

समंदर लहेर (स्त्री) वह गोटा जिसमें लहरिया ठप्पा किया गया हो।

संगीन पैमक (स्त्री) देखें पैमक।

सैर (स्त्री) खेवा। गोटे की बुनाई में बाने के फेर या फेर के निषानात। वह सलाई जिसके जरिये बाने का फेर डाला जाता है और जो बराबर की हरकत में होती है। **पड़ना** के साथ बोला जाता है।

क़ैतून (पु0) बाबिन, कलाबत्तू और रेषम के तारों की गुँथी हुई डोरी। इसकी वज़अ़ चोटी के बलों की सी होती है और लिबास की कोर पर टाँकने के लिए तैयार की जाती है।

कारख़ाना (पु0) ज़री गोटा बुनने का ठिकाना और उस तिपाई को भी कहते हैं, जिसपर ज़रबाफ़ बैठकर गोटा बुनता है। इस तिपाई पर एक बेलन लगा होता है, जिसपर तैयार गोटा लपेटा जाता है। इस बेलन को तुर कहते हैं। **देखें** कारख़ाना गोटा बाफ़ी।

काँटे की पैमक (स्त्री) देखें पैमक।

कच्चा गोकरू (पु0) देखें गोकरू।

किरन (स्त्री) सुनहरी या रूपहली बादले की बुनी हुई झालर। एक उंगल तक चौड़ी को उंगुष्तिया और दो उंगल चौड़ी दो उंगुष्तिया कहलाती है और मामूल से ज़्यादा लम्बी झालर की किरन इस्तिलाह में आँचल कहलाती है। **अंदाज़ा** किरन की बन्दिष। **फल्वा** किरन की झालर।

किरनसाज़ (पु0) किरन बनाने वाला कारीगर।

किरनसाज़ी (स्त्री) किरन बनाने की सन्अत।

करी जोई (स्त्री) चौड़ा और संगीन बुनावट का ठप्पा।

किनारी (स्त्री) देखें गोटा।

घरा मसाला (पु0) देखें मसाला।

खोटा मसाला (पु0) देखें मसाला।

खेवा (पु0) देखें सैर।

गुड़िया (स्त्री) गोटे का ताना लिपटी हुई कुकड़ी जिसपर से बुनाई के अ़मल के वक़्त हस्बे जुरूरत ताना खोला जाता है। **देखें** कारख़ाना गोटा बाफ़ी।

गंगाजमुनी गोटा (पु0) सुनहरी रूपहली गोटा। **देखें** गोटा।

गोटा (पु0) ज़री की तैयार की हुई गोट या किनारी जो औरतों के लिबास की कोर पर ज़ीनत और खुषनुमाई के लिए टाँकी और इस्तिलाह में गोटे के नाम से मौसूम की जाती है।

क्या साज़ जड़ाऊ और ज़ेवर कया, गोटे थान कनारी के।

(नज़ीर)

गेटा हस्बे जुरूरत आध इंच से एक बालिष्त बल्कि उससे भी ज़्यादा चौड़ा बनाया जाता है और उंगुष्तिया, दो उंगुष्तिया नाम से पुकारा जाता है।

गोटा आम लफ़्ज़ है और ठप्पा मुनक़्क़ष गोटे का नाम है लेकिन अब इनमें नाम का कोई इम्तियाज़ नहीं रहा। लफ़्ज़ गोटा एक मजमूई नाम और ठप्पा किनारी के लिए मख़सूस हो गया है। **प्रयोग** शादी की जुरूरत के लिए कुछ गोटा खरीदने बाजार जाना है। साड़ी की कोर पर ठप्पा टाँकने का रिवाज हो गया है।

किनारी पाँच छः उंगुल चौड़ा गोटा।

लचका दो उंगल से ज़्यादा तीन चार उंगल चौड़ा गोटा।

गोटाबाफ़ (पु0) ज़री गोटा बुनने वाला कारीगर।

गोटाबाफ़ी (स्त्री) ज़री गोटा बुनने की सन्अत। **देखें** कारख़ाना गोटा बाफ़ी।

गोटा सार्ना (क्रिया) गोटे का ताना दुरुस्त करना, खोलना और बुनाई के अ़मल के लिए तैयार करना।

गोटा किनारी (स्त्री) ज़री गोट और कनारा, इस्तिलाह में गोटा किनारी के नाम से मौसूम किया जाता है।

गोकरू (पु0) धनक को मोड़कर चने के बराबर पहलदार मख़रूती शकल की बनाई हुई गोटे की एक क़िस्म जिसकी बनावट गोक्रूनामी एक जंगली बूटी के तुख्म से मिलती जुलती हो। यही उसकी वजह तस्मिया है। **पक्का गोकरू** बगैर लाग के सिर्फ धनक का बनाया हुआ गोकरू। **मुक़्क़ीष** तार का गोकरू। मोटे बादले का बारीक क़िस्म का बनाया हुआ गोकरू। इसको चुटकी का गोकरू भी कहते हैं।

लप्पा (पु0) पल्लू। मामूल से ज़्यादा चौड़ा और संगीन बुनावट का गोटा जो दुलहनों के दुपट्टे के आँचल या पिष्वाज़ के दामन पर टाँका जाता है।

लचका (पु0) **देखें** गोटा।

लैस (स्त्री) (अंग्रजी) संगीन बुनावट की ज़री तोई जिसका ताना बाना दोनों कलाबत्तू का होता है। आध उंगल से पाँच छः उंगुल तक चौड़ी बनाई जाती है।

मसाला (पु0) ज़री गोटे की हर क़िस्म जो तज़ईने लिबास के लिए हो, इस्तिलाह में मसाला कहलाती हैं अगर यह मसाला खालिस सोने या चाँदी का होता है तो खरा या सच्चा और अगर तिहपतरे का होता है तो खोटा या झूठा मसाला कहते हैं।

मुक़्क़ैष (पु0) **देखें** गोकरू।

मिहरमुई (स्त्री) ठप्पे की क़िस्म का गोटा।

10 पेषा आरी भरत (ज़रदोज़ी)

अड्डा (पु0) ज़रदोज़ी काम का चोबी चौखटा इस्तिलाहे आ़म में कारचोब कहलाता है। **देखें** कारचोब।

आरीभरत (स्त्री) **देखें** ज़रदोज़ी।

बुदलारी (स्त्री) **देखें** काम्दानी।

बिंत/भित (स्त्री) ज़री कढ़त की तोई (ज़रदोज़ों की इस्तिलाह) ज़रदोज़ी काम में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खुषनुमा तोइयाँ बनायी जाती है। जिस क़िस्म का फूल पत्ता या बेल तोई पर बनाई जाती है, उसी के नाम से उस तोई के नाम से मौसूम किया जाता है **जैसे** चम्पा की तोई, खजूरछड़ी की तोई, गुलबहार तोई, सितारे की तोई, मुरमुरे की तोई वगैरा। बाज़ कारीगर बिंत और बाज़ भित तलफ़्फ़ुज़ करते हैं।

बेठन (स्त्री) **देखें** कस्नी।

भित (स्त्री) **देखें** बिंत।

भरतकारी (स्त्री) एक क़िस्म का ज़रदोज़ी काम जिसमें सूती, उभरवाँ, फूल पत्ते वग़ैरा बनाकर ऊपर ज़रीटिकट यानी सलमा कलाबत्तू टाँक दिया जाता है।

ज़रदोज़ (पु0) ज़री कढ़त यानी कपड़े पर सलमा सितारे और कलाबत्तू के फूल बूटे काढ़ने वाला कारीगर।

ज़रदोज़ी (स्त्री) आरी भरत। कपड़े पर ज़री कढ़त की सन्अत।

साँदा (पु0) ज़रदोज़ी में सलमें की डसूँ के सिरों का जोड़ जो कढ़त में बाहम मिलाया और उस का सही मिलाना कारीगरी समझा जाता है **मिलाना** के साथ बोला जाता है। साँद तिलंगी ज़ुबान में बारीक दर्ज़ को कहते हैं, लेकिन दिल्ली के ज़रदोज़ इसी मानों में बोलते हैं।

सरासरी (स्त्री) ज़री झालर। सोने या चाँदी के फूल या सिक्के जो बतौर झालर दामन या पल्लू की कोर पर टाँक दिये जायें। **देखें** पेषा–ए–सोनार।

शमषेरक (स्त्री) देखें कारचोब।

कारचोब (स्त्री) अड्डा। ज़रदोज़ों के काम करने का चौखटा या अड्डा। **षमषेरक** कारचोब के चौखटे की अर्ज़ की लकड़ी। **फ़र्द** कारचोब के चौखटे की तूल की लकड़ी। **कल्ला** कारचोब का कोना जहाँ फ़र्द और शमषेरक मिलती है। **कस्नी** बेठन। कारचोब के चौखटे पर कपड़े को कसा रखने वाली डोरियाँ और मज़बूत कपड़े की गोट।

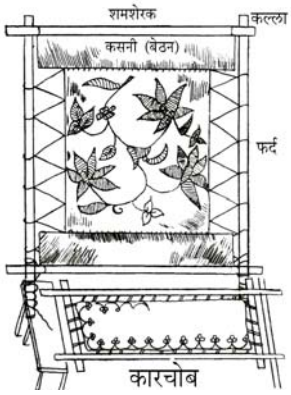

कस्नी (स्त्री) देखें कारचोब।

कल्ला (पु0) देखें कारचोब।

कामदानी (स्त्री) बुदलारी। बादले की तार की कढ़त जिसतरह तागे से कपड़े के ऊपर बेलबूटे काढ़ने का काम किया जाता है। उसी तरह बादले के तार से कपड़े पर बेल बूटे काढ़े जाते हैं। यह सनअ्त इस्तिलाह में कामदानी कहलाती हैं। ज़री कढ़त को रोज़मर्रा में कामदार भी कहते हैं। **जैसे** कामदार जूती, कामदार टोपी शायद यही लफ़्ज़ कामदार कामदानी की वजह तस्मिया हो।

गुम्चा (पु0) ज़रदोज़ी काम पर से मसाले की पुर्ज़ छीज और कतरन वगैरा, जो काम करने में खारिज होती है, उठाने का मोम या आटे का गोला।

मीना (पु0) ज़री बेलबूटे में खाली जगह पर सलमें की बनी हुई बुंदकियाँ जो ख़ाली जगह पूरा करने को टाँक दी जाती है।

वस्ली (स्त्री) ज़रदोज़ी की एक क़िस्म जिससे उभरवाँ कढ़त के बजाय कपड़े के हमसतह यानी तहदोज़ फूल बूटे टाँके जाते हैं। इस काम में खालिस सलमे या कलाबत्तू की टकाई होती है। फूल पत्ते की उभरवाँ नहीं बनाई जाती है, इस वजह से इस तर्ज़ को वस्ली या वस्ली का काम कहा जाता है और ज़रदोज़ी के मानों में बोला जाता हैं, **जैसे** वस्ली की जूती। यह काम अमूमन बारीक और नाज़ुक कपड़े पर किया जाता है इसलिए कपड़े की संभाल को कढ़त के नीचे बारीक और झूने कपड़े का अस्तर लगा दिया जाता है।

तीसरी फसल तैयारी पापोष (दबागत व पापोषदोज़ी)

1 पेषा रंगाई चिर्म (तैयारी पापोष)

अब्री (स्त्री) नरी, बान, कमाये हुए चमड़े का बालों की तरफ का रुख़ जो चमड़े की मोटान में से तराषकर अलाहिदा कर लिया गया हों। यह रंगाई में उमदा और मज़बूती

में अच्छा होता हैं। बकरी का रंगा हुआ चमड़ा भी इस्तिलाह मे नरी कहलाता है।

अद्मा/आद्मा (पु0) भैंस वगैरा का कच्चा या मामूली रंगा हुआ चमड़ा। अधौड़ी। अर्बी लफ़्ज़ अदीम है, दिल्ली और नवाहे दिल्ली के खटीक ओमा कहते हैं और मुराद कच्चा या मामूली रंगा हुआ चमड़ा होता है।

अधरिया (स्त्री) देखें अधौड़ी।

अधौड़ी (स्त्री) कोसन, छोल बालछल। कमाये हुए चमड़े का गोष्त की तरफ़ का रुख़ जो चमड़े की मोटान से तराषकर अलाहिदा कर लिया गया हो। यह चमड़ा न रंगाई में अच्छा होता है न मजबूती में। असल लफ़्ज़ धरिया बमानी लद्दू जानवर है और अधरिया चमड़े की मोटान में से दो टुकड़े किया हुआ हिस्सा मुराद है, जो पकाने में नाक़िस और नापायदार होता हैं। उसको इस्तिलाह में अधूड़ी कहा जाता है।

अड्डा (पु0) ताँत साफ़ करने का ठिकाना, जहाँ बाँस के खूँटे गड़े होते हैं, उनको अड्डा कहते हैं।

आँवल/आँव्ली (स्त्री) तड्ड़, औरम। एक क़िस्म की जंगली झाड़ी, जिसको छाल और पत्ते से चमड़ा रंगा जाता है। ख़ानदेष और राजपूताना के इलाक़े में बकसरत होती है। भेंड़ का चमड़ा इससे निहायत नर्म और सफेद होता है।

औरम (स्त्री) देखें आँवल।

एकआबा खाल (स्त्री) सिर्फ़ एक मर्तबा मसाले के पानी में पकाई हुई खाल।

बाद (स्त्री) अधौड़ी चमड़े के बारीक तसमें।

बालछल (स्त्री) देखें अधौड़ी।

बान (स्त्री) अब्री।

बुर्सायी (स्त्री) रंगे हुए चमड़े के दोनों रुख़ के तुस वगैरा साफ करना, नाकारा अजज़ा की छिलाई करना। **बुर्सना** के साथ बोला जाता है।

बफ़ा (स्त्री) खाल के ऊपर की निहायत बारीक मुर्दार झिल्ली, जो खुद बखुद सूखकर निकलती रहती है। चमड़ा रंगने से इसको झाँवें से साफ कर देते हैं। **निकालना** के साथ बोला जाता है।

बक्खी करना (क्रिया) एक बारी करना। रंगाई के लिए मसाला लगाने से क़ब्ल खाल के छीछड़े साफ करना।

बोरी करना (क्रिया) पक्के हुये चमड़े की उलटी सतह की नाकारा झिल्लियों को छीलकर साफ करना।

बौंगा (पु0) चमड़ा नर्म करने और चुर्से निकालने का चोबी औज़ार।

भात (पु0) चमड़ा पक्का करने के मसाले का महलूल जो तैयारी पर लगाया जाता है।

भट्टा (पु0) रंगे हुए चमड़े पर लगाने का एक क़िस्म का चौबेला मसाला। **लगाना** के साथ बोला जाता है।

भेड़ी (स्त्री) भेंड़ का पकाया हुआ चमड़ा।

भैंसौडी/भैंसोड़ (स्त्री) भैंस का पकाया हुआ चमड़ा।

पाप्ड़ा (पु0) सुकटी, बग़ैर मसाला लगाये सुखाया हुआ चमड़ा, जो सूखकर बहुत पतला हो गया हो। **करना** के साथ बोला जाता है।

पुट्वार (स्त्री) गठीला चमड़ा। पीठ और गरदन के हिस्से की खाल।

परागो (स्त्री) देखें कीमुख़्त।

पसाना (क्रिया) खाल को पकाने और कमाने के लिये मसाले के पानी में भिगोना।

पसावा (पु0) खाल पसाने का मसाले का महलूल।

पक्की खाल (स्त्री) मसाला लगाया हुआ चमड़ा जो सड़ने से महफ़ूज़ हो गया हो।

पल्टा (पु0) खाल की सिलवटें और चुर्से निकालने का कुहनीनुमा आहनी औज़ार।

पंगा (पु0) आँत की झिल्लियों को साफ करने का मसाला, जो आग/आक (मदार का पेड़) के दरख़्त के दूध से बनाया जाता है।

पन्नी (स्त्री) भेंड़ के चमड़े पर सुनहरी या रूपहली वरक़ चढ़ाकर रंगीन बनाये हुए टुकड़े जो जूतियों में लगाने के काम आते हैं।

पन्नीसाज़ (पु0) पन्नी बनाने वाला कारीगर। **देखें** पन्नी।

फाँकी (स्त्री) गाय या भैंस की पकाई हुई खाल का मोटान से चीरकर दो फाँक किए हुये टुकड़ों में का कोई एक टुकड़ा।

ताँत (स्त्री) रुद्दा। आँत की बनाई हुई डोर।

तड़ूड़ (पु0) देखें आँवल।

तोड़ा (पु0) ताँत सूतने का झाँवा।

थान (पु0) दबागतषुदा सालिम चमड़ा।

झल (स्त्री) देखें अधौड़ी।

चाम (स्त्री) चर्म। चमड़ी, चमड़ा।

चिर्मसाज़ (पु0) खटिक। खालों की कमाई और रंगाई करने वाला कारीगर।

चष्मा (पु0) खाल का सूराख जो दबागत में पड़ गया हो।

चकस (पु0) खाल की बुर्साई (छिलाई) के काम का लकड़ी का तख्ता या पत्थर की सिल।

चमड़ा (पु0) देखें चाम। दबागत की हुई खाल।

चिम्डावट/चिमड़ाई (स्त्री) खाल साफ करने या पकाने की उजरत।

चिम्डौधा (पु0) चमड़े के खरीदो फ़रोख़्त की मंडी।

चंचाई (स्त्री) अच्छी बुरी खालों की छँटाई।

छोल (स्त्री) देखें अधौड़ी।

हलाली चमड़ा (पु0) वह चमड़ा जो ज़िबह किये हुये जानवर की खाल का तैयार किया हुआ हो।

ख़ज़ाना (पु0) खाल पकाने का हौदा। खाल पकाने की हर जुरूरत का अलाहदा हौदा होता है। और वह जिस जुरूरत के काम आता है। उसी से उसको मौसूम करते हैं। मसलन धुलाई, चूना लगाई, भट्ठा चढ़ाई वगैरा का हौदा।

दास/धास (पु0) खाल के छीछड़े और चर्बी वग़ैरा साफ़ करने का राँपी की वज़अ़ का धारदार औज़ार।

दत्वा (पु0) खाल के बाल निकालने का कंघी की वज़अ़ का औज़ार।

दोकारी (स्त्री) खाल को मोटान में चीरने का तेज़ धार का औज़ार।

धाउड़ी/धौ (स्त्री) धौकी। एक किस्म की जंगली झाड़ी जिसकी छाल और पत्तों से खाल पकाई जाती है।

रच (पु0) खुरच्ना। खाल के बाल निकालने के बाद जिल्द की सतह को साफ़ करने का औज़ार।

रंगी (स्त्री) दबागत़ किया हुआ और रंगा हुआ चमड़ा।

रोद्गर (पु0) ताँत बनाने वाला कारीगर।

रैगड़/रीगड़ (पु0) रोद्गर का उर्दू तलफ्फुज़। **देखें** रोद्गर।

सर्कस करना (क्रिया) खाल की कमाई करना यानी पकाने से कब्ल उसके बाल उतारना।

शीमी (स्त्री) चर्बी या तेल पिलाया हुआ चमड़ा।

कटील (पु0) गाय भैंस के बच्चे का चमड़ा।

कच्चा चमड़ा (स्त्री) बग़ैर पकाई हुई खाल।

करकीन (स्त्री) बकरी का पक्का सब्ज़ रंग का रंगा हुआ चमड़ा।

कुरूम (पु0) (अंग्रेजी) मअ़दनी अष्या से पकाया हुआ चमड़ा।

कस्सा (पु0) चमड़ा पसाने के हौदे की छाल वग़ैरा का फूँक।

कमाना (क्रिया) सर्कस करना। खाल के बाल निकालना। चूँकि यह अ़मल खाल की दबाग़त के लिए किया जाता है। इसलिये खाल के दबाग़त को भी कमाना कहते हैं। **जैसे** कमाया हुआ चमड़ा।

कोसन (स्त्री) देखें अधौड़ी।

कीमुख़्त (स्त्री) एक जानवर का नाम है, जिसको परागो भी कहते हैं। उसकी खाल सख़्त और दानेदार होती है। पकाने के बाद पानी में भीगकर भी नम नहीं होती। हिन्दुस्तानी जूती की अड्डी पर लगाते हैं। चूँकि यह खाल बहुत नायाब है, इसलिये मसनूई बनाई जाती है।

कीमुख़्तसाज़ (पु0) कीमुख़्त बनाने वाला कारीगर।

कठौत (पु0) खाल पसाने का चौबचा। इस लफ़्ज़ को खटीक़ से मुक़ाबला किया जाये।

—मन चंगा, तो कठौती ही में गंगा।

खटीक (पु0) खाल कमाने और पकाने वाला कारीगर। हिन्दुस्तान में यह और इसी क़िस्म के दूसरे काम अछूत लोग करते हैं और इन पेषों की वज़ह से उनकी ज़ातियाँ बन गयीं हैं। जो रैगड़, चमार और खटीक वगैरा नामों से मअ़रूफ़ हैं।

गोरा मेषा (पु0) भेंड़ का पकाया हुआ चमड़ा जो अपने असली रंग पर हो।

गऊखा (स्त्री) गाय का कमाया और पकाया हुआ चमड़ा।

गैजन (स्त्री) रापन्नी की क़िस्म का औज़ार। **देखें** रापन्नी।

घाई (स्त्री) मोठ। आँत सूतने और साफ करने का बाँस का छोटा सा नल्वा।

लिप्ड़ी/लुप्ड़ी (स्त्री) खाल को कमाने से क़ब्ल खुष्क करने के लिए नमक वगैरा लगाने का अ़मल। **करना** बाज़ कारीगर लेटी करना कहते हैं।

लताड़ना (क्रिया) पिसाई के हौदे में खालों को उलट पलट करना ताकि उनमें अच्छी तरह मसाला जज़्ब हो जाये। चूँकि यह अ़मल पैरों से रौंद कर किया जाता है। इसलिये शायद लात से लताड़ना हो गया है। बाज़ कारीगर मठारना कहते हैं।

लेटी करना (क्रिया) देखें लिपड़ी।

माठना (क्रिया) देखें लताड़ना।

माव्गी (स्त्री) बकरी का कमाया हुआ चमड़ा।

मुर्दारी (स्त्री) अपनी मौत मरे हुये जानवर की खाल, ऐसी खाल की दबाग़त अच्छी नहीं होती।

मग़जी (पु0) खाल के नीचे की बारीक झिल्ली जो अन्दर की सतह पर पैवस्त होती है और खाल पकाने से क़ब्ल साफ की जाती है।

मेरू (पु0) एक क़िस्म का कीड़ा जो भेंड़ के बालों में पैदा हो जाता है। यह कीड़ा बाल में जगह जगह ख़राष पैदा कर देता है, जिसकी वजह दबाग़त के वक्त ऐसी खाल में सूराख पड़ जाते हैं। मजाज़न धब्बेदार खाल, जो दबाग़त में सूराख़दार हो जाय।

मेषा/मेष (स्त्री) संस्कृत मेषा। भेंड़ की पकाई हुई खाल।

नरी (स्त्री) देखें अब्री।

हाथ धुलाई (स्त्री) मुर्दार जानवर के उठाने का इनाम जो अछूतों को हाथ धुलाई के नाम से दिया जाता है।

2 पेषा जूतासाजी (तैयारी पापोष)

अड्डी (स्त्री) ऐड़ी। हिन्दुस्तानी जूती का पिछला खड़ा हिस्सा जो पैर की एड़ी पर चढ़ा लिया जाता है। **देखें** सलीमषाही जूती।

आर (स्त्री) कुटकी। चमड़े में सिलाई के लिये सूराख़ करने का बारीक नोंक का औज़ार।

आराम पाई (स्त्री) देखें जूती।

अंदाज़ा (पु0) देखें पन्ना।

अन्नी (स्त्री) हिन्दुस्तानी जूती के नीचे की नोंक। **देखें** तस्वीर पे0।

अन्नीदार जूती (स्त्री) सलीमषाही जूती। नुकीली पंजे की जूती। वह जूती जिसके पंजे का सिरा लम्बोतरा हो। **देखें** सलीमषाही जूती।

औगी (स्त्री) जूती की ऊपर की पूरी तराष या ऊपर का मुकम्मल हिस्सा। **बनाना, काटना** के साथ बोला जाता है।

एड़ी (स्त्री) देखें अड्ड़ी। अंग्रेजी जूते की खुरी।

बिठौवाँ जूती (स्त्री) फिड्डी। बगैर अड्डी की या अड्डी बिठाई हुई जूती। **देखें** तस्वीर पे0।

बचकाना (पु0) बारह वर्ष के कम उम्र बच्चे की जूती।

बुनाला (पु0) कामदार या वस्ली की जूती में डाला जाने वाला ज़रदोज़ी सुखतला (जुफ़्त फ़रोंषों की ख़ास इस्तिलाह। **देखें** सुखतला।

बूट (पु0) देखें मुंडा।

भराऊ (पु0) दोहरे तले की जूती के अन्दर भरी हुई चमड़े की कतरन वगैरा।

पापोष (स्त्री) देखें जूती।

पातन (स्त्री) देखें जूती।

पास्ना/फाँस (पु0) हिन्दुस्तानी जूती की अड्डी के जोड़ के दरमियान सिली हुई चमड़े की बारीक मग़ज़ी। लफ़्ज़ फाँस का ग़लत तलफ्फुज़ है। **देखें** तस्वीर पे0।

पान (पु0) जूती के अड्डी के पहलुओं पर मज़बूती के लिये उम्दा और खूबसूरत तराष कर सिला हुआ चमड़ा। **देखें** तस्वीर पे0।

पच्ची (स्त्री) फर्मा। **देखें** ताड़ी।

पलास्ना (क्रिया) ठप्ना, ठपियाना। जूती पर तैयारी का हाथ फेरना। कोर कसर निकालना। तल्ले और एड़ी को तराषकर सही और दुरुस्त करना।

पम्प (स्त्री) **देखें** गुर्गाबी।

पन्ना (पु0) अंदाज़ा, छाँदका। जूती के ऊपर के हिस्से की तराष का साँचा। लफ़्ज़ पैमाने का पन्ना और छाना या छाउनी का छाँदका ग़लत तलफ्फुज़ है।

पंजा (पु0) जूती का सामने का हिस्सा या मुँह जिसमें पैर की उंगलियाँ और कुछ हिस्सा रहता है। **प्रयोग** जूती का पंज तंगत। **देखें** उंगलियाँ दबाता है। जूती।

पवाई (स्त्री) एक पैर की जूती, दोनों पैर के जूतियों को जोड़ा और उनमें से एक को इस्तिलाह में पवाई कहते हैं। **प्रयोग** जूती पसन्द करने को बाज़ार से दो चार पवाइयाँ मंगाई हैं।

पैतावा (पु0) चमड़े का मोजा। तली के ऊपर का अच्छी क़िस्म का अ्बरा। **देखें** सुखतला।

पैज़ार (स्त्री) देखें जूती।

फाँस (स्त्री) अंग्रेजी जूते की औगी और तले के दरमियान सिली हुई चमड़े की गोट, जो भराव डालने को लगाई जाती है।

फिड्डी (स्त्री) देखें बिठौवाँ जूती।

फली/फन्नी (स्त्री) देखें रुख़ानी।

ताड़ी (स्त्री) पच्ची। ताड़ी लफ़्ज़ तान्नी का ग़लत तलफ़्फुज़ है। जो मस्दर.....इस्मे आला हैं। चोबी दस्ते का जो हिन्दुस्तानी जूती की अड्डी को सुध और खिंचा रखने की तैयारी के वक्त अड्डी और तली के दरमियान बतौर फर्मा फँसा दी जाती है, जिस तरह अंग्रेजी जूते में फर्मा। **देखें** तस्वीर पे0।

तला/तली (पु0/स्त्री) जूती के नीचे का हिस्सा, जिसपर पाँव का तलवा टिका रहता है।

तवा (पु0) मुंड़े के नीचे के सिरे का चमड़े का जोड़, जो नोंक या ठोकर पर रहता है।

तहनाली/तहनअ़ली (स्त्री) हिन्दुस्तानी जूती की एड़ी के नीचे तली पर सिली हुई मोटे चमड़े की एक फाँक। बाज़ कारीगर इसको ढ़य्या और ढेवड़ कहते हैं। ढेवड़ या तो अंग्रेजी लफ़्ज़ डबल का गलत तलफ़्फुज़ है या डेढ़ का।

टाटबाफ़ी जूती (स्त्री) ज़री काम की जूती, जिसकी औगी पर कलाबत्तू, टाट की बुनावट की वज़अ़ पूरे हिस्से पर टिका हुआ हो।

टंक (पु0) चमड़े की सिलाई का मोटा और लम्बा टाँका।

टोचन (स्त्री) देखें सुतारी।

ठप्ना (क्रिया) देखें पलास्ना।

जुफ़्त (स्त्री) देखें जूती, जोड़ा।

जुफ़्तसाज़ (पु0) चमार, जूतियाँ बनाने वाला कारीगर।

जुफ़्तफ़रोष (पु0) जूतियों का व्यापारी।

जूता (पु0) मर्दाना और बड़ी जूती, खड़ी जूती।

जूतासाज़ी (स्त्री) जूते बनाने की सन्अत।

जूती (स्त्री) आराम पाई, पापोष, पातन, पैज़ार, जुफ़्त, चप्पल चरन, चकला, चमका, चिम्ड़ी, ज़ेरपाई, कफ़पाई कफ्ष, गुर्गाबी, लिब्ड़ी, मुंडा। पैरों की हिफ़ाजत का चमड़े वगैरा का बना हुआ पहनावा जो मुख़्तलिफ़ वज़अ़ का बनाया और जुदा जुदा नामों से मौसूम किया जाता है।

चाड़ (पु0) खेंगडी, सेंगोटी। जूती के कोर किनारे दुरुस्त करने और उभारने का सींगका औज़ार।

चप्पल/चप्ली (स्त्री) फड्डी/जूती की मामूली क़िस्म जिसके ऊपर पंजा अटकाने को चंद तस्में होते हैं। जूते की यह बहुत इब्तिदाई शकल थी। अब वज़अ़दारी और फैषन में शरीक हो गई है।

चरन (स्त्री) देखें जूती।

चरनपरदार (स्त्री) गुर्गाबी की क़िस्म की जूती, जिसे पंजे पर चमड़े की पट्टी लगी होती है। जो अंग्रेज़ी में टाई कहलाती है। गुर्गाबी की एक दूसरी किस्म जो मुंडे से मिलती जुलती है, अंग्रेज़ी में टाई शू कहलाती है।

चड़व्वाँ जूती (स्त्री) देखें खड़ी जूती।

चक्मा (स्त्री) देखें जूती।

चमार (पु0) जूतियाँ बनाने वाला कारीगर। चमार लफ़्ज़ चाम और चमड़े का **इस्मे फ़ाइल** है, लेकिन पेषे की वजह अछूतों की एक जात समझी जाती है।

चिमड़ी (स्त्री) चप्पल की किस्म की मामूली और अद्ना क़िस्म की क़दीम वज़अ़ की जूती।

चमकी की जूती सुनहरी या रूपहली सितारे टकी हुई ज़री काम की जूतीं।

चोटी (स्त्री) हिन्दुस्तानी जूती की अड्डी के ऊपर की नोंक, जिसको पकड़कर तंग जूती पैर में चढ़ाते हैं। **देखें** तस्वीर पे0।

छाँडका (पु0) देखें पन्ना।

ख़ोर्द नोका (पु0) वह नोंकदार जूती, जिसमें अन्नी यानी पंजे में लम्बी और बारीक नोंक न हो। **देखें** अन्नीदार जूती।

डेढ़ हाषिये की जूती औगी पर ज़री बेल बनी हुई जूती ख़्वाह अंगूरी बेल हो या कैरी की षकल की ज़री कढ़त हो।

ढेवड़ (स्त्री) देखें तिहनाली।

ढय्या (स्त्री) देखें तिहनाली।

राँपी (स्त्री) खुर्पी। चमड़ा छीलने और साफ करने का धारदार चौड़े मुँह का औज़ार। **देखें** तस्वीर पे0।

रुख़ानी/रुखानी (स्त्री) चमड़ा छीलने और रुख़ यानी

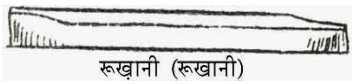
रूख़ानी (रूखानी)

तह बनाने को नीचे रखने की लकड़ी की पट्टी।

ज़बान (स्त्री) मुंडे के पाखों के नीचे चमड़े की पट्टी। **देखें** तस्वीर पे0।

ज़ेरपाई (स्त्री) स्लीपर। चप्पल की क़िस्म की भद्दी जूती, इसका पंजा पूरा होता है।

साँठ/साँठा (पु0) कोबा। चमड़ा कूटने का आहनी दस्ता।

साँचा (पु0) फ़र्मा। अंग्रेज़ी क़िस्म का जूता बनाने का जूते की शकल का बना हुआ लकड़ी का क़ालिब।

सपाट जूती (स्त्री) लिस्वाँ ज़री काम की जूती।

सुतारी/सुताली (सूतआरी) टोचन, कतरनी, चमड़ा सीने का कटवाँ नाके का सुआ बारीक काम का गोल नोंक का होता है और मोटे काम का चौड़ी नोंक का।

सुखतला (पु0) पैतावा। जूती के तले के ऊपर का नर्म और अच्छी क़िस्म का चमड़ा जो पैर के तलवे को तले की सिलाई की रगड़ से महफ़ूज़ रखे।

सलावट (पु0) चमड़ा छीलने और साफ़ करने वाला कारीगर।

सलाव्टी (स्त्री) चमड़ा छीलने और साफ करने को नीचे रखने की सिल।

स्लीपर (पु0 स्त्री) ज़ेरपाई, कफ़पाई, चक्मा।

सलीमषाही जूती (स्त्री) अन्नीदार जूती। जिसके मुतल्लिक़ रवायत है कि हज़रत शेख़ सलीम चिश्ती की पसंदीदा थी और यही उसकी वजह तस्मिया है।

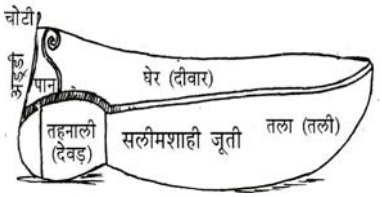

शरुली (स्त्री) घेतली। चौड़े पंजे की फिड्डी मरहटवाड़ी जूती जो आमतौर से मरहटे ब्राह्मण पहनते हैं।

शीराज़ी जूती (स्त्री) शीराज़ के हाथ की बनाई हुयी जूती। शीराज़ लफ़्ज़ सर्राज का गलत तलफ्फुज़ है। दिल्ली के जुफ़्तफ़रोष और कारीगरों में इसी तरह मषहूर है। तहक़ीक़े हाल पर वह लोग सिर्फ़ इस क़दर बता सके कि जूती खूबसूरत तराषने और उमदा सीने वाला सुबुकदास्त और मष्षाक़ चमार कारीगर की बनाई हुई जूती। बड़ी जुस्तजू के बाद यह बात मालूत हुयी कि मुसलमानों के अहेद में जो लोग फौज़ में जीनसाज़ी का काम करते थे, सर्राज कहलाते थे। जब मुसलमानों की फौजी कुव्वत में ज़वाल आया तो उनमें से अक्सर ने जूतियाँ बनाने का पेषा अख़्तियार कर लिया। इस तरह काम के साथ उनका नाम भी बिगड़ गया और अब दिल्ली के जुफ़्तफ़रोषों में इस लफ़्ज़ का सिर्फ मज़कूर उस सदर मफहूम रह गया है।

फ़र्मा (पु0) देखें साँचा। **ठोंकना, चढ़ाना** के साथ बोला जाता है।

कामदार जूती (स्त्री) ज़रदोज़ी काम की बनी हुई जूती। यानी वह जूती जिसकी औगी पर ज़रदोज़ी काम बना हुआ हो। इसमें एक क़िस्म कलाबत्तू के काम की होती है और दूसरी सलमा सितारे की काम की। पहली किस्म कामदार और दूसरी वस्ली कहलाती है।

प्रयोग वसली की औगी बरसात में मंदी पड़ जाती है। दूल्हा दुल्हन के लिये वस्ली की जूतियाँ बनाने का रिवाज है।

कटरनी (स्त्री) देखें सुतारी।

कुटकी (स्त्री) देखें आर।

कफ़पाई (स्त्री) देखें स्लीपर।

कफ़ष (स्त्री) देखें जूती।

किलाव/किलाई (स्त्री) निधाई जूती की कच्ची सिलाई, जो सिलाई से क़ब्ल चन्द टाँके लगाकर उसके हिस्सों को बाहम जोड़ने के लिये कर दी जाती है। **करना** के साथ बोला जाता है।

कल्ला/कल्ले (पु0) अंग्रेजी जूते के पंजे के ऊपर के बग़ली पाखे जो बन्द के ज़रिये बाँध लिये जाते हैं। **देखें** तस्वीर पे0।

कन्ना (पु0) जूती के घेर की कोर या किनारा। **निकालना** के साथ बोला जाता है। **प्रयोग** तंग जूती का एक रोज में कन्ना निकल जाता है, यानी कट जाता है।

खाँप (पु0) अंग्रेज़ी जूते के पंजे में ठोकर के बाद की दूसरी पट्टी। **देखें** तस्वीर पे0।

खुरी (स्त्री) जूती में एड़ी के नीचे तली पर तहदार उभरवाँ बना हुअ हिस्सा, जो अंग्रेज़ी जूते की ख़ास चीज है। **देखें** तस्वीर पे0।

खड़ाऊँ/खड़ावीं (स्त्री) चोबी तले की लिब्ड़ी जिसमें पैर का पंजा अटकाने को फ़क़त एक खूँटी होती है।

खड़ी जूती (स्त्री) अढ्ढीदार जूती या जूता जिसमें पैर जमा रहे ।

खैंगड़ी (स्त्री) देखें चाड़।

गाँठना (क्रिया) मोटी और ग़ैर मरबूत सिलाई लेकिन अर्फ़े आम में चमड़ा या जूती की सिलाई मुराद होती है।

गुरगाबी (स्त्री) पम्प, खुले घेर की अंग्रेज़ी साख्त की जूती।

घेथली (स्त्री) देखें शरौली।

घेर (पु0) दलवार। पंजे और एड़ी के दरमियान जूती की बाड या उठान। **देखें** तस्वीर पे0।

लिब्डी (स्त्री) घटिया क़िस्म की फिड्डी जूती, जिस में घेर न हो। एक किस्म की घटिया चप्पल।

लंगोट (पु0) जूती की अड्डी की सिलाई पर अन्दर के रुख़ लगी हुई चमड़े की पट्टी। **देखें** तस्वीर पे0।

लीत्डा/लीत्डे (पु0) लिब्डी, बग़ैर घेर और एड़ी की घटिया क़िस्म की फिड्डी जूती, जिसका घेर न रहा हो, मुराद ली जाती है।

लेखना/लेखनी (पु0, स्त्री) ख़तकष। चमड़े पर लकीरें डालने का चोबी औज़ार।

मुंडा (पु0) अंग्रेज़ी साख़्त का जूता। **देखें** तस्वीर पे0।

मोची (पु0) चूतियाँ और चमड़े का दीगर सामान बनाने वाला कारीगर।

मुहार (पु0) चमारों की एक ज़ात दकन में मुहार कहलाती है।

नधाई (स्त्री) देखें किलाव।

नअ़ल/नाल (पु0) जूती की खुरी पर लगाने का आहनी हलक़ा, जो खुरी की मज़बूती के लिये लगाया जाता है।

वस्ली (स्त्री) देखें कामदार जूती।